अंक - 24

सत्र
2020-21

ऋतम्भरा

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय

www.dpbspgcollege.in
mails_principaldpbs@rediffmail.com
05734-275450

अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ०प्र०)
(सम्बद्ध - चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
(NAAC ACCREDITED COLLEGE WITH CGPA 2.71)

DURGA PRASAD BALJEET SINGH (P.G.) COLLEGE

ANAND BHAWAN

॥ वन्दना ॥

हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल-मति दे॥
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे॥
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
लव-कुश ध्रुव प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर घर भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥

सम्पादक मण्डल

डॉ. यू.के.झा
(प्राचार्य/संरक्षक)

डॉ. चन्द्रावती
(प्रधान सम्पादक)

डॉ. सीमान्त कुमार दुबे
(सम्पादक)

लक्ष्मण सिंह
(सम्पादक)

डॉ. भुवनेश कुमार
(सम्पादक)

डॉ. एस. के. सिंह
(सम्पादक)

प्रभाकर
(बी.एस-सी. द्वितीय वर्ष)

काजल
(बी.एड. द्वितीय वर्ष)

श्रद्धेय स्व० श्री दुर्गा प्रसाद जी

श्रद्धेय स्व० श्री बलजीत सिंह जी

श्रद्धेय स्व० भगवती प्रसाद गर्ग

हे कर्मनिष्ठ, हे धर्मनिष्ठ,
तुम शासन प्रिय हे सेनानी,
तुम सदा कर्म में लीन रहे,
सबके हित के तुम कल्याणी।
तुम मरकर भी हो अमर सदा,
जन-मन के हे तुम महाप्राण,
हम हैं श्रद्धांजलि अर्पित करते,
शत प्रणाम, शत-शत प्रणाम।

A source of Eternal Inspiration
Shri Jaiprakash Gaur Ji,
Founder Chairman, Jaypee Group
Managing Trustee, Jaiprakash Sewa Sansthan
President, Anglo Vedic Educational Association

On the path of progress, education is the medium that can allow our country to not only conserve its culture but also ignites the minds of our young countrymen and empowering them to be at par with the citizens of other developed countries. Science & Technology in the 21st Century will unleash a revaluation of progress that is beyond our imagination today and which will transcend the limits of planet Earth to enable human beings to begin their tryst with the infinite universe.

We are determined to provide quality education to our students through the most modern educational institutions to make them financially empowered while shaping them into self reliant and confident citizens of modern India.

These institutions would strive to inculcate discipline and character building along with serious pursuit of knowledge, utilizing the most advanced teaching practices and high moral standards so that our teachers and students can stride forward and see the transformation of their country into an advanced nation within their lifetime.

Jai Prakash Gaur

Jaiprakash Gaur

महाविद्यालय प्रबन्ध कार्यकारिणी

श्री अजय गर्ग
(अध्यक्ष)

डॉ. सुधीर कुमार
(उपाध्यक्ष)

डॉ. के.पी. सिंह
(सचिव)

श्री गिरीश चन्द्रा
(संयुक्त सचिव)

श्री के.पी. सिंह
(कोषाध्यक्ष)

श्री सुनील गुप्ता
(आन्तरिक लेखा परीक्षक)

श्री एस.पी.एस. तोंमर
(सदस्य)

कमा. एस.जे. सिंह
(सदस्य)

कु0 मनिका गौड़
(सदस्य)

डॉ. यू.के. झा
प्राचार्य (पदेन)

डॉ. चन्द्रावती
(प्राध्यापक प्रतिनिधि)

श्री सुनील कुमार
(तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि)

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन,
लखनऊ . 226018

31 दिसम्बर, 2020

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का 24वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ऐसी ज्ञानवर्द्धक और रचनात्मक पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के साहित्यिक, रचनात्मक और बौद्धिक विकास में सहायक सिद्ध होगी।

मैं वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' के सफल प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ई-मेल : bgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

संख्या- G.05/C.M.2/2021
लोक भवन,
लखनऊ - 226001

दिनांक : 05 JAN 2021

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर, बुलन्दशहर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय सारस्वत साधना के केन्द्र होते हैं, जहां नई पीढ़ी का निर्माण किया जाता है। महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का प्रकाशन सराहनीय है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों से परिपूर्ण होगी।

पत्रिका के सफल एवं उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

Sunil Sharma
Executive Vice Chairman

JAIPRAKASH
ASSOCIATES LIMITED

MESSAGE

It gives me great pleasure to know that Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College, Anoopshahr, is going to publish the 24th edition of its annual magazine **"Ritambhara"** shortly. It is certainly heartening to note that the tradition of publishing the annual magazine is not adversely affected despite the obvious hurdles and limitations that we all faced in year 2020.

I understand that D.P.B.S. (P.G.) College, in the wake of the pandemic situation, has been able to conduct online classes successfully during the ongoing academic year, and I congratulate the school management and the faculty in rising to the occasion and for continuing with its mission of imparting education through technology. By adopting the digital learning solutions, your college has been able to quickly cope with the unforeseen challenges and turned them into opportunities.

We all need to look back at the year 2020 with positivity, as it has taught us to be more resilient, patient and disciplined, while being hopeful and optimistic, even in the face of unprecedented times both for people and society. Students graduating the year might be a wee bit disappointed in missing their beloved campus, but they will have an inspiring story to tell to the future generation.
I would like to appreciate the management, faculty, parents, and the students for their proactive efforts in putting alternate e-learning arrangements in place to ensure continuity of learning and assessment.

Further, I use this opportunity to compliment the hard work which has gone into publication of this in-house Magazine and wish the College, its students & faculty all the very best for the future.

With Best Wishes.

S. K. Sharma

SUNIL KUMAR SHARMA

JAYPEE GROUP

Regd. & Corporate Office :
Sector 128, NOIDA - 201304, Uttar Pradesh (India)
Ph: +91 120 4609000, 2470800 Direct : +91 120 4609152
Fax : +91 120 26145389 E-mail : sunil.sharma@jalindia.co.in

प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह
अध्यक्ष
Prof. D. P. Singh
Chairman

सत्यमेव जयते

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
University Grants Commission
Ministry of Education, Govt. of India

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर), उत्तर प्रदेश सत्र 2020-21 में अपनी वार्षिक पत्रिका '**ऋतम्भरा**' का चौबीसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है।

वार्षिक पत्रिका के माध्यम से कॉलेज के विद्यार्थियों को अपनी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही महाविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों और उपलब्धियों का भी इस पत्रिका में समावेश किया जायेगा। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक विद्यार्थी एवं शिक्षण गण इस अवसर का लाभ उठायेंगे तथा अपने विचारों से समाज व राष्ट्र को नई दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभायेंगे।

इस अवसर पर मैं कॉलेज के प्राचार्य, डॉ० यू०के० झा, संकाय एवं कर्मचारियों, सभी विद्यार्थियों तथा सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ और वार्षिक पत्रिका '**ऋतम्भरा**' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(धीरेन्द्र पाल सिंह)

28 दिसम्बर, 2020

बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-11002
दूरभाष Phone : कार्यालय Off : 011-23234019, 23236350, फैक्स Fax : 011-23239659, e-mail : cm.ugc@nic.in, web : www.ugc.ac.in

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ–250 004 (उ०प्र०)

प्रो. नरेन्द्र कुमार
पी. एच०डी०
कुलपति

पत्रांक : एस०वी०सी० / 21 / 30
दिनांक : 26.12.2020

सन्देश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर) द्वारा महाविद्यालय की सत्र 2020–21 की वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिये आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथाउनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ–साथ ज्ञानोपयोगी लेखों को प्रकाशित करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन हेतु शुभकामनाये।

(प्रो० एन०के० तनेजा)

डॉ० यू०के० झा
प्राचार्य
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अनूपशहर –202390 (बु0शहर)

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर
मेरठ - 250 004

कार्यालय : +91-0121-2760554, 2760551, फैक्स : 2762838
शिविर कार्यालय : +91-0121-2600066, फैक्स : 2760577

वैबसाइट : ccsuniversity.ac.in
ई-मेल : vc@ccsuniversity.ac.in

प्रो० डा. राजीव कुमार गुप्ता
(एम.कॉम., एल-एल.बी., पी-एच.डी., एम.बी.ए., एम.जे.)
क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी

दूर[illegible] [illegible]121-2400444, 09868106027
Office : [illegible]al Higher Education Officer,
E-mail : rheomee[illegible]oo.com I www.rheomrt.org
[illegible]त्र संख्या 33/दिनांक 16.12.2019

शुभकामना संदेश

महोदय,

यह हर्ष का विषय है कि [illegible] प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर **महाविद्यालय, अनूपशहर (बुलन्दशहर)** अपनी पत्रिका '[illegible]भरा' सन् 2020-21 का 24वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। महाविद्यालय पत्रिका विचारों की अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करती है, जिसका प्रयोग करना सभी विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है। यह पत्रिका महाविद्यालय की रचनात्मक भूमिका एवं कुशल नेतृत्व क्षमता का एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका समयान्तर्गत प्रकाशित होकर विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। यह पाठकों को रुचिकर तो लगेगी ही, साथ में देश और समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा भी देगी तथा यह अनुभव भी होगा कि इस अंक को पूर्व से बेहतर प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

महाविद्यालय परिवार और विद्यार्थियों को प्रेरणादायी और समाजोपयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

राजीव कुमार गुप्ता

डॉ. यू.के झा (प्राचार्य)
दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह पी.जी. कॉलिज अनूपशहर, बुलन्दशहर

Tel. (0) 91-11=23793528 (Direct), 91-11-23015321 Extn. 4442, Fax : 91-11-23010252 | E-mail : message-rb@rb.nic.in

Jaypee Institute of Information Technology

(Declared Deemed to be University u/s 3 of the UGC Act)

JAYPEE INSTITUTE OF INFORMATION TECHNOLOGY
jiit
विद्या तत्व ज्योतिसम:

Date : 26/12/2020

MESSAGE

I am indeed happy to know that the Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College of Anoopshahr is going to publish its next issue of annual magazine "Ritambhara". It is really creditable that the DPBS College is publishing a quality School Magazine for the last many years. All the faculty members, Students and staff of the college, who contribute valuable articles of different types based on their experience and exposure in the college, are worthy of Praise. The articles written by the students provide feedback to the management of the college on various matters. The contributed articles like poems. stories, and motivational write-ups provide opportunity to all contributors to showcase their creativity.

I am highly appreciative of all those who have worked hard for bringing out the present issue of the magazine.

I convey my best wishes to all the teachers, staff and administration of the college and also pray to Almighty God to bless the college in its all dimensions.

I convey my best wishes to the fraternity of the college and wishing each one of them a happy and prosperous New Year - 2021.

Prof. (Dr.) S.C. Saxena
Vice-Chancellor

A-10, Sector-62, Noida-201 307 (UP) India, Ph.: (91) 120-2400973-975 Fax : (91) 120-2400986, Website : www.jiit.ac.in

(05734) 275450

Durga Prasad Baljeet Singh (P.G.) College

Mahashay Durga Prasad Marg, ANOOPSHAHR (Bulandshahr) U.P. 203390
Website : www.dpbscollegeanoopshahr.org Email : mails_principaldpbs@rediffmail.com

N A A C Certification Grade B (C G P A 2.71)

अजय गर्ग
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति

Date 11-02-2021

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गाप्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर की वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का चौबीसवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

कोविड-19 की महामारी के प्रतिकूल समय में महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों द्वारा 'ऑन लाइन' माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी रूप से बनाये रखने का उत्तम प्रयास किया गया, साथ ही राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी का आयोजन किया जाना, महाविद्यालय की शिक्षा एवं शोध के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाता है।

यह पत्रिका शिक्षकों तथा छात्र-छात्राओं द्वारा किये गये सराहनीय कार्यों एवं रचनात्मक, ज्ञानवर्धक लेखों से ओपप्रोत होगी। जो निश्चित तौर पर सभी विद्यार्थियों तथा समाज को एक दिशा देने में सफल होगी।

मैं प्राचार्य एवं सम्पादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

Ajay Garg

(अजय गर्ग)

डॉ० के०पी० सिंह
सचिव, प्रबन्ध समिति

सन्देश

Date 21-01-2021

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर अपनी वार्षिक पत्रिका '**ऋतम्भरा**' का चौबीसवां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। मेरा यह विश्वास है कि पत्रिका विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन करने के साथ-साथ उनकी साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में सहायक होगी।

दृढ़ इच्छा शक्ति, कठिन परिश्रम एवं लगन के द्वारा जीवन में किसी भी लक्ष्य को सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। अत: मैं विद्यार्थियों को यही संदेश देना चाहूँगा कि वे अनुशासित रहते हुए अपने अपेक्षित लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सतत् प्रयत्नशील रहें।

हमारा महाविद्यालय आधारभूत सुविधाओं एवं अनुशासन व शिक्षण की दृष्टि से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। तथा शिक्षा के माध्यम से छात्रों को एक संवेदनशील एवं अनुशासित नागरिक बनाने में पूरा योगदान कर रहा है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय अपने दायित्व का निर्वहन पूर्ण ईमानदारी व लगन से करता रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए, मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

(डॉ० के०पी० सिंह)

प्राचार्य का उद्‌बोधन ...

यह हम सबके लिए अपार हर्ष का विषय है कि हमारा महाविद्यालय अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक परम्परा के अनुरुप कठिनाईयों से भरे शैक्षिक सत्र 2020-21 में अपनी वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' का 24वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। कई बार जीवन में कई ऐसी चुनौतियाँ उत्पन्न होती है जो अत्यन्त गंभीर एवं अप्रत्याशित होती है और व्यक्ति को क्रिंकर्त्तव्यविमूढ़ कर देती है। लेकिन इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव जाति ने अपने विवेक, साहस एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के बलबूते ऐसी कई चुनौतियों का डटकर मुकाबला किया है तथा अपने अस्तित्व एवं जीवन की गति को कायम रखते हुए विकास के पथ पर अग्रसित रहा है। कोविड-19 की वैश्विक महामारी के बढ़ते संक्रमण के दृष्टिगत जब भारत सरकार द्वारा मार्च 2020 में अचानक लॉकडाउन की घोषणा की गयी तो एक बार तो ऐसा लगा कि हम सबका भविष्य अंधकार के ऐसे भँवरजाल में फंस गया है जिससे बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है। लेकिन आखिरकार हम सब संकट के इस भँवरजाल से बाहर निकलते हुए जीवन को पुनः गतिशील बनाने में काफी हद तक सफल रहे हैं।

यह हम सबके लिए एक सबक है कि जीवन में चुनौतियाँ कितनी ही विकट क्यों न हों, अपने धैर्य, विवेक, साहस एवं दृढ़ इच्छाशक्ति से हम उसका मुकाबला कर सकते हैं।

मैं अपने महाविद्यालय के उन सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का आभारी हूँ जिन्होंने लॉकडाउन की अवधि में 'ऑनलाइन शिक्षा पद्धति' को अपनाकर शैक्षिक गतिविधियों को निरंतरता प्रदान की। इसके अतिरिक्त अपने एन०सी०सी० एवं एन०एस०एस० के उन सभी कैडेट्स का भी आभारी हूँ जिन्होंने सरकार द्वारा चलाये गये विभिन्न सन्दर्भित अभियानों का हिस्सा बनकर आम लोगों में जागरुकता उत्पन्न करने में अपनी सक्रिय भूमिका निभायी।

पत्रिका के 24वें अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

Uka

(डॉ. यू.के. झा)
प्राचार्य

प्रधान सम्पादिका की कलम से ...

सा विद्या या विमुक्तये, अर्थात
विद्या वही है जो मुक्ति की साधिका हो!

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर की वार्षिक पत्रिका 'ऋतम्भरा' के चौबीसवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए एक सुखद अनुभूति हो रही है। महाविद्यालय की यह पत्रिका उसकी वर्ष भर की शैक्षणिक, सहशैक्षणिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का दर्पण है। जब-जब समाज में जीवन का स्वरूप बदलता है तब-तब शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आता है। कोरोना वैश्विक महामारी के संकट के समय में शिक्षा व्यवस्था में अध्ययन-अध्यापन के क्षेत्र की नवीन चुनौतियों को महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षाविदों ने धैर्यपूर्वक एवं विभिन्न नवाचारों का प्रयोग करते हुए ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों से जुड़कर पूर्ण किया। इस पत्रिका में कोरोना के संघर्ष काल को प्रत्यक्ष रूप से अनुभूत करने वाले छात्रों की अभिव्यक्तियों को सम्मिलित करना, उनकी शब्द शक्ति और नवसृजन की कला में वृद्धि करना निश्चित ही शिक्षा के मुख्य उद्देश्य मानव के सर्वांगीण विकास की दिशा में सहायक होगा ।

विश्वास है कि '**ऋतम्भरा**' का यह अंक कोरोना काल में महाविद्यालय के प्राध्यापकों द्वारा छात्र हित में किये गये सराहनीय एवं अनुकरणीय कार्य छात्र-छात्राओं में नई ऊर्जा और आत्म-विश्वास का संचार करेंगे एवं उनके सकारात्मक दृष्टिकोण के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। साथ ही नई शिक्षा नीति 2020 के परम वैभव को पुन: प्राप्त कराने की धारणा के साथ गत वर्ष लागू की गई है, जिसकी सफलता उसके सही क्रियान्वयन पर ही संभव होगी। इस अंक में जीवनरूपी यात्रा के लिए उपयोगी ज्ञान को मनोरंजक लेखों के माध्यम से सुस्पष्ट एवं रुचिकर रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

मैं प्रधान सम्पादिका के रूप में 'ऋतम्भरा' के 24वें अंक के प्रकाशन के लिए सद्बुद्धि और सामर्थ्य प्रदान करने हेतु सर्वप्रथम ईश्वर को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। अपने अनुभव और शुभकामनाओं से युक्त शुभ संदेश भेजकर हमारा मार्गदर्शक एवं उत्साहवर्धन करने वाले ज्येष्ठ-श्रेष्ठ एवं वरिष्ठजनों के प्रति विनम्रतापूर्वक धन्यवाद करती हूँ। अपने मौलिक एवं ज्ञानवर्धक लेख भेजकर महाविद्यालय की शैक्षणिक वातावरण की छवि को प्रकट करने वाले प्राध्यापकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों का हार्दिक धन्यवाद करती हूँ। पत्रिका के सम्पादन में असीम सहयोग और अथक परिश्रम हेतु सम्पादक मण्डल के सदस्यों को धन्यवाद देती हूँ। जिनके मार्गदर्शन में प्रधान सम्पादक के रूप में पत्रिका सम्पादन करने का संबल प्रदान किया ऐसे महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. यू.के. झा जी को कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। साथ ही गर्ग प्रिन्टर्स, बुलन्दशहर के प्रति आभार प्रकट करती हूँ। अन्त में पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का हृदय के अन्त: करण से धन्यवाद।

Chandravati

डॉ. चन्द्रावती
(प्रधान सम्पादक)

प्राध्यापक मण्डल
(वित्त-पोषित)

बाँये से दाँये : श्री लक्ष्मण सिंह, श्री यजवेन्द्र कुमार, डॉ. पी. के. त्यागी, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), डॉ. चन्द्रावती, डॉ. आर.के. अग्रवाल, डॉ. सीमान्त कुमार दुबे।

प्राध्यापक मण्डल
(स्व-वित्तपोषित)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : डॉ. सुनीता गौड़, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह, डॉ. भुवनेश कुमार, डॉ. के. सी. गौड़, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री पंकज कुमार गुप्ता, श्री मयंक शर्मा, श्री सचिन अग्रवाल, डॉ. तरूण बाबू, डॉ. सुधा उपाध्याय।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) श्री सत्यपाल सिंह, डॉ. विशाल शर्मा, डॉ. राजीव गोयल, श्री गौरव जैन, डॉ. जागृति सिंह, डॉ. घनेन्द्र बंसल, श्री देवस्वरूप गौतम, श्री चन्द्र प्रकाश, श्री गुरूदत्त शर्मा, श्री योगेन्द्र कुमार, श्री सत्य प्रकाश।

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (वित्त-पोषित)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री अनिल कुमार अग्रवाल, श्री पंकज शर्मा, श्री के. के. श्रीवास्तव, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री सुनील कुमार गर्ग, श्री लक्ष्मण सिंह, श्री सुनील कुमार।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) : श्री कपूर चन्द्र, श्री विजय पाल, श्री गजेन्द्र सिंह, श्री सुनील कुमार निर्मल, श्रीमती पार्वती, श्री रामअवतार, श्री नारायण देव मिश्रा, श्री महेश चन्द्र, श्री अमरनाथ राय।

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्व-वित्तपोषित)

बाँये से दाँये (बैठे हुए) : श्री प्रमोद कुमार, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री दीपक शर्मा, डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य), श्री सुरेन्द्र रावत, श्री चन्द्रपाल सिंह, श्री पारस कुमार।

बाँये से दाँये (खड़े हुए) श्री नेत्रपाल सिंह, श्री सुबोध कुमार, श्री त्रिलोक चन्द्र, श्री पंकज, श्री साहब सिंह, श्री सुरेन्द्र पाल, श्री जगदीश कुमार, श्री विजय कुमार, श्री जितेन्द्र कुमार, श्री विक्रम सिंह, श्री राजू, श्री रामबाबू, श्री नितिन कुमार।

सत्र 2019–20 के हमारे प्रतिभाशाली विद्यार्थी

बी० एड० पाठ्यक्रम में
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान

मानसी गर्ग
बी०एड०
84.92%

सुवर्धन सिंह
एम.एस-सी. (भौतिकी)
69.9%

सोनू कुमार
एम० एस-सी० (रसायन)
74.75%

साधना
एम० ए० (संस्कृत)
77.85%

राहुल कुमार
बी०एस-सी०
78.06%

शाह आलम खान
बी०ए०
70.36%

दुर्गेश कुमारी
बी० कॉम०
66.70%

मनस्वी गर्ग
बी०सी०ए०
74.91%

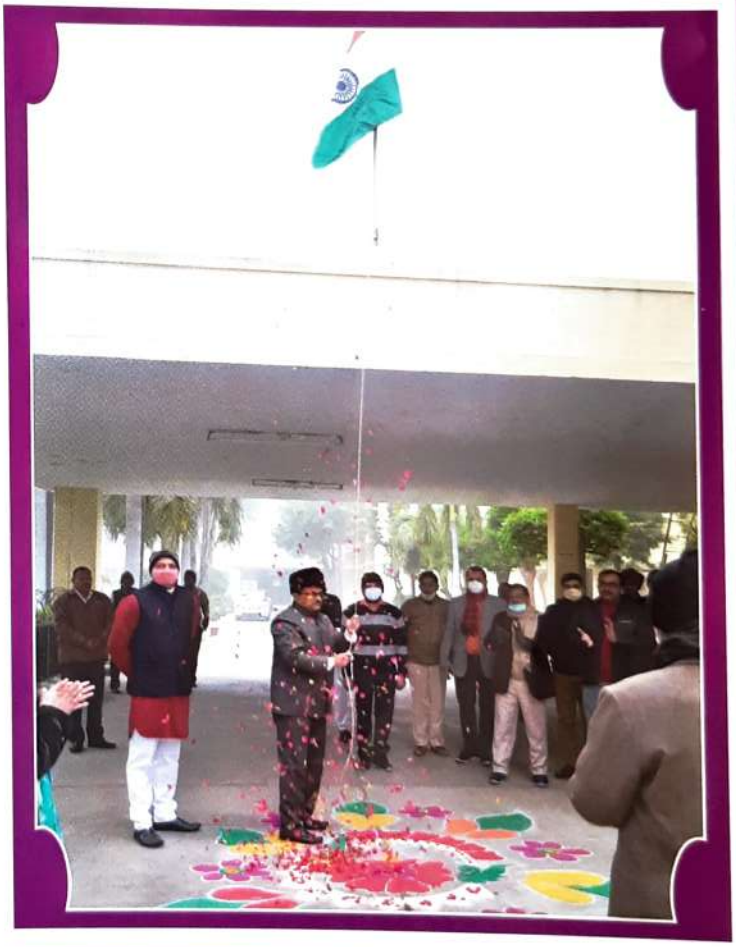

2
3

Camera

ANOOPSHAHR
BULANDSHAHR
NATIONAL SERVICE SCHEME

Making our Voters Empowered
Vigilant, Safe and Informed

BULANDSHAHR

Garg Printers, BSR # 9837018740

अनुक्रमणिका

प्रगति आख्या		03-05
सांख्यिकी अध्ययन : प्रमुख संस्थान और अवसर	डॉ. पी. के त्यागी (विभागाध्यक्ष सांख्यिकी विभाग)	06-08
शिक्षा की आत्मा में ऑनलाइन धड़कन	डॉ. सुनीता गौड, (असिस्टेंट प्रोफेसर बी.एड विभाग)	09
अधिक संग्रह की महाव्याधि से कुछ ऐसे निपटें	सत्यपाल सिंह लोधी (अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग)	10
शिक्षा व्यवस्था	योगेन्द्र कुमार लोधी (अंशकालिक प्रवक्ता, गणित विभाग)	10
मानव जीवन में पुस्तकालय का महत्व	के.के. श्रीवास्तव (पुस्तकालय प्रभारी)	11
धर्म एवं विज्ञान	डॉ. तरूण श्रीवास्तव, (सहायक आचार्य, वाणिज्य संकाय)	12-15
संस्कृत में अवसर और प्रमुख संस्कृत शिक्षण संस्थान	लक्ष्मण सिंह (विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग)	16
खूबियाँ है हम सबमें	लक्ष्मण सिंह (कनिष्ठ सहायक)	17
आलोचक	सुनील कुमार गर्ग (कार्यालय अधीक्षक)	18
पर्यावरण - विधि व न्याय	अनिल कुमार अग्रवाल (कनिष्ठ सहायक)	19
कोरोना वायरस	डॉ. जागृति सिंह (असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान विभाग)	20
मस्तिष्क उद्वेलन	डॉ. के. सी. गौड (अध्यक्ष, शिक्षा संकाय)	21-22
तय हों प्राथमिकताएं	डॉ. राजीव कुमार गोयल (असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय)	23
उम्मीदों के अनुरूप संतुलित बजट	डॉ. विशाल शर्मा (असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय)	24-25
एक मनोरोग - अहंकार	दीपक कुमार शर्मा (लेखाकार)	26
भारत-चीन संबंध	साक्षी चौधरी (बी.एड. प्रथम वर्ष)	27
हिम्मत हारे मत बैठो	दीपशिखा गौड कक्षा- B.Sc III	27
शिक्षा और संत्संगति	सोमदत्त शर्मा (बी.एड. द्वितीय वर्ष)	28
सोचा है कभी	ट्विंकल शर्मा कक्षा- B.A. III	29
क्या होती है जिंदगी	शुभांगी कक्षा- B.Ed I	29
नववर्ष	सांक्षी सिंघल कक्षा- B.A. III	29
कहानी राम प्रसाद बिस्मिल की	कनिष्का कक्षा- B.Ed. I	30
अभिप्रेरणा	मनीष गौतम कक्षा- B.A. III	30
अनमोल विचार	निशी चौधरी कक्षा- B.Sc II	31
खुशी की चुटकी	मानसी गर्ग कक्षा- M.Sc I Chemistry	31
संघर्ष	हेमन्त शर्मा कक्षा- B.Sc III	31
माता-पिता	प्रीति कक्षा- B.Ed. II	32
प्लास्टिक प्रदूषण एक समस्या	इमरोज कक्षा- B.Ed. II	33
अपनापन चला गया	ट्विंकल शर्मा कक्षा- B.A. III	33
दोस्ती	साक्षी चौहान कक्षा- B.Com I	33
गमगीन जिन्दगी और 30 सेकेण्ड	नेहा कक्षा- B.Ed. II	34
उद्यमिता गिरे, उठे और फिर चलें	काजल चौधरी कक्षा- B.Ed. I	35
आकाशीय बिजली	प्रज्ञा वार्ष्णेय कक्षा- B.Sc III	36
मेरी कोरोना गीतमाला	रुचि शर्मा कक्षा- B.Ed. II	36
कुछ सकारात्मक विचार.....	काजल पाल कक्षा- B.Ed. II	37
सफलता की ओर चल	कु. चमन चकोर कक्षा- B.Ed. III	37
जल का महत्व	गगन राघव कक्षा- B.Sc III	37
मन अपना हो जाये बादल	रूसी रानी कक्षा- B.A. II	38
आखिर क्यों ?	अंशुल गिरि कक्षा- B.S.c III	38
अपना-अपना भाग्य	श्याम कक्षा- B.A. II	38
गंगा	सुनिधि वर्मा कक्षा- B.Ed. I	38
जिन्दगी	चंचल शर्मा कक्षा- M.A. I	39
सीता माता की कोई नहीं	लक्ष्मी चौहान कक्षा- B.A. III	39
बचपन	लक्ष्मी चौहान कक्षा- B.A. III	39
अपनी कलम से...	प्रदीप शर्मा कक्षा- B.Sc. III	39
दहेज	यशिका अग्रवाल कक्षा- B.A. II	40
सच्ची बातें	निधि सिंह कक्षा- B.A. III	40
गिरना भी अच्छा है	मोनिका सिंह कक्षा- B.Ed. I	40
अनमोल वचन	कविता कक्षा- B.A. II	41
नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है	अल्पना कक्षा- B.A. I	41
साधना से सिद्धि तक	रेनू मीणा कक्षा- B.A. II	42
गजल	कु. चमन चकोर कक्षा- B.Ed. II	42
मेरी माँ	प्रीति राघव कक्षा- M.A. I	42
सफर	अर्जुन कुमार कक्षा- B.Sc. II	42
कुछ अच्छी बातें	कु. सपना कक्षा- B.A. II	43
मेहनत	मयूरी भारद्वाज कक्षा- B.com III	43

सफलता का गुरू मंत्र उड़ना है तो गिरना सीख लो	अर्चना शर्मा कक्षा- B.A. I	44
कलम	कृतिका कक्षा- B.Com III	44
लक्ष्य की प्राप्ति	मीनाक्षी लोधी कक्षा- B.A. II	45
रोज सिर्फ इतना करो	कुशाग्र कक्षा- B.Com III	45
दूसरों के विचारों को दे सम्मान	हेमलता कक्षा- M.Sc II Chemistry	46
जिन्दगी	गौरव कुमार कक्षा- B.Sc III	46
नई शिक्षा नीति 2020	पायल कक्षा- B.Ed I	47
कोरोना का कहर	भूमिका वार्ष्णेय कक्षा- B.Com III	47
सच्चा ज्ञान पाने की उम्र	प्रभाकर कक्षा- B.Sc II	48
बगीचा मेरी सन्तान	विपिन कुमार कक्षा- B.A. I	48
गुरु वन्दना	कु. गुंजन कक्षा- B.Sc II	48
बेटी	छाया शर्मा कक्षा- B.Sc II	49
गायन विप्लव	कु. सांक्षी कक्षा- M.Sc I Chemistry	49
क्लास मॉनीटर	मेघा सरीन कक्षा- B.Com III	49
संकट आये सोच समझकर आये	शिवा भारद्वाज कक्षा- B.Ed I	50
आज का अन्नदाता	रजनी कुमारी कक्षा- B.Ed I	50
राम	शिवम शर्मा कक्षा- B.Ed. I	50
माँ पर सुविचार	शिवांगी शर्मा कक्षा- B.Ed I	51
कोरोनाकाल	लवी शर्मा कक्षा- B.A. I	51
भारतीया संस्कृतिः	रुचि शर्मा कक्षा- B.Ed II	52
मूर्खः अनुचरः	अनुराधा शर्मा कक्षा- B.A. III	52
Statistics in the Everyday Life	Dr. Pradeep Kumar Tyagi, H.O.D., Statistics Department	53
Nmami Gange: An Overview	Dr. R. K. Agrawal H.O.D., Mathematics Department	54
Corona Vaccines in India	Dr. Chandrawati H.O.D., Chemistry Department	55-56
Role of women in the Bench and Bar	Yajvendra Kumar H.O.D., Physics Department	57
Yoga Asans for Healthy Life	Dr. Seemant Kumar Dubey H.O.D.,PhysicalEducation Department	58-59
Deteriorating Moral Values in Our Society	Dr. Sudha Uppadhyaya, Asst. Prof. B.Ed. Department	60
Importance of English	Dev Swaroop Gautam, Asst. Prof. B.Ed. Department	61
SPRING	Dharamdas, B.Ed. II	61
Time Management	Dr. Bhuvnesh Kumar HOD, Commerce Department	62
Environmental Awareness Days	Dr. Shailendra Kumar Singh Assistant Professor, B.Ed. Department	63
Role of Chemistry in Life and career	Dr. G.K. Bansal, Assistant Professor, Department of Chemistry	64
The Ganga-Polution and its Solution	Lalit Sharma Part Time Lecturer Physics Department	65
Dr. S. R. Ranganathan - Father of Indian Library Science A Short Biography	GuruDatt Sharma, Assistant Professor, B.Ed Department	66
Switching From One Programming Language to Another: The Benefits of Being Flexible	Pankaj Kumar Gupta, Head, Department of BCA	67
The Role Of Cryptography In Network Security	Sachin Agrawal, Assistant Professor, Department of BCA	68-72
E-Banking	Mayank Sharma, Assistant Professor, Department of BCA	73-74
Nothing Is Permanent	Tanisha Garg Class - B.Com I	75
Reaction of Life	Arpika Kaushik Class - B.Sc III	75
A beggar and young boy	Neha Class - B.Ed II	76
Teacher's Story	Imroz Class - B.Ed II	76
Shades of Lucknow	Manvi Class - B.Com III	77
Promise Yourself	Mayuri Bhardwaj Class - B.Com III	77
On His Blindness	Megha Sarin Class - B.Com III	77
"Balance Sheet of Life"	Krantika Class - B.Com III	78
MURDER OF ENGLISH	Kushagra Class - B.Com III	78
'Best Thought'	Swaleha Ansari Class - B.Ed. II	78
The Value of Health in Life	Kanika Sharma Class - B.Ed I	79
Thoughts	Km. Sapna Class - B.A. II	79
PROUD TO BE AN INDIAN	Payal Sharma, B.Ed. II	80
INDIA OF MY DREAMS	Nidhi Sharma, B.Ed. II	80
OUR BODY ALSO FUNCTIONS LIKE MINISTERS	Sheetal Pathak, B.Ed. I	81
The Success Mantra	Monika Singh, B.Ed. I	81
Respect	Neelam Class- B.Ed II	82
Season of Life	Kajal Class- B.Ed. II	82
Life	Sneh Sharma, Class- B.Ed II	82
STOP THINKING YOU ARE USELESS	Anamika Singh, B.Ed. II	83
PLEASE PAY ATTENTION!	Anshu Singh, B.Ed. I	83
महाविद्यालय प्रबन्ध समिति, महाविद्यालय परिवार एवं विभिन्न समितिया		84-88

दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर
जिला-बुलन्दशहर
प्रगति आख्या सत्र 2020-21

सन् 1965 में ऐंग्लो वैदिक एजूकेशनल एसोसिएशन, अनूपशहर द्वारा स्थापित शिक्षण संस्था **दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर** अपनी स्थापना के 56 वर्ष पूरे कर चुका है। इस अवधि में महाविद्यालय ने संरचनात्मक विकास एवं पाठ्यक्रम विस्तार दोनों ही दृष्टियों से द्रुतगति से विकास किया है।

चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सेक्शन 2 (F) एवं 12 B के तहत मान्यता प्राप्त यह महाविद्यालय अपने उत्तम अनुशासन, स्वच्छ एवं हरे - भरे वातावरण तथा उत्तम परीक्षा परिणाम के कारण पूरे विश्वविद्यालय में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है।

1965 में महाविद्यालय में शिक्षकों की संख्या मात्र 03 तथा विद्यार्थियों की संख्या 18 थी जोकि बढ़कर वर्ष 2021 में क्रमशः 32 एवं 1697 हो गयी। वर्ष 1983 तक स्नातक स्तर पर केवल विज्ञान संकाय के विषयों की पढ़ाई होती थी, लेकिन वर्ष 1984 के बाद से अब तक कई नवीन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं जोकि वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुरुप विद्यार्थियों की माँगों को पूरा कर रहे हैं। सम्प्रति महाविद्यालय में चार अनुदानित पाठ्यक्रम (बी०ए०, बी०एस०सी०, एम०एस०सी०-भौतिकी एवं एम०ए०- संस्कृत) तथा चार स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम (बी०सी०ए०, बी०एड०, बी०कॉम तथा एम०एस०सी०-रसायन) सुचारु रूप से संचालित हैं।

गत वर्षों की भाँति सत्र 2019-20 में महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम उत्तम रहा है जोकि निम्नवत् हैः-

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षाफल (उत्तीर्ण प्रतिशत)
1.	बी०ए०	91.89%
2.	बी०एस०सी०	100%
3.	एम०एस०सी० (भौतिकी)	100%
4.	एम०ए० (संस्कृत)	100%
5.	बी०सी०ए०	100%
6.	बी०एड०	100%
7.	बी० कॉम	92.96%
8.	एम०एस०सी० (रसायन)	86.36%

उपरोक्त के सन्दर्भ में उल्लेखनीय ये है कि बी०एड० की छात्रा कु. मानसी गर्ग ने चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय में प्रथम

स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। इसके अतिरिक्त सत्र 2018-20 के सभी बी०एड० विद्यार्थी सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनों परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं जोकि अपने आप में एक कीर्तिमान है। उत्तम परीक्षा परिणाम महाविद्यालय के सभी शिक्षकों के कठिन परिश्रम उपयुक्त शैक्षिक वातावरण तथा प्रबन्ध समिति के सहयोगात्मक रवैये के कारण है।

1. प्रबन्ध समिति द्वारा सभी वित्तपोषित पाठ्यक्रमों में रिक्त पदों के सापेक्ष अंशकालिक प्रवक्ताओं की व्यवस्था की गयी है।

2. कोरोना संकट से उत्पन्न विकट परिस्थितियों के कारण वर्ष 2020 हम सबके लिए अत्यन्त चुनौतीपूर्ण रहा है। फिर भी महाविद्यालय द्वारा शासन निर्देशित सभी अनुदेशों का अनुपालन करते हुए विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया। लॉकडाउन की अवधि में महाविद्यालय में संचालित सभी पाठ्यक्रमों में ऑनलाइन कक्षायें चलाकर निर्धारित पाठ्यक्रमों को पूरा किया गया तथा शिक्षकों द्वारा अत्यधिक संख्या में ई-कॉन्टेन्टस तैयार किये गये जिसे महाविद्यालय की वेबसाइट **www.dpbscollege.in** पर अपलोड किया गया।

3. महाविद्यालय के शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा 'आरोग्य सेतु' तथा 'आयुष कवच एप' डाउनलोड किया गया तथा आम लोगों को भी इस कार्य हेतु प्रेरित किया गया।

4. महाविद्यालय की एन०सी०सी० एवं एन०एस०एस० इकाईयों द्वारा कोरोना संक्रमण के रोकथाम से सम्बन्धित उपायों के सम्बन्ध में आमलोगों में जागरुकता उत्पन्न करने के अभियान में सक्रिय भूमिका निभायी गयी तथा हजारों की संख्या में मास्क एवं सेनेटाइजर वितरित किये गये।

5. दिनांक 01.06.2020 से 05.06.2020 तक तथा 05.07.2020 से 11.07.2020 तक महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा दो अखिल भारतीय संस्कृत प्रश्नोत्तरी स्पर्धाओं का आयोजन ऑनलाइन माध्यम से किया गया। प्रथम प्रश्नोत्तरी में 1217 तथा द्वितीय प्रश्नोत्तरी में 864 प्रतिभागियों ने उत्साह पूर्वक प्रतिभाग किया।

6. 5 जून 2020 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एनसीसी इकाई के द्वारा मास्क वितरित किए गए तथा कैडेट्स द्वारा वृक्षारोपण किया गया।

7. 5 जुलाई 2020 को शासन द्वारा निर्देशित बृहद वृक्षारोपण का कार्य संपन्न किया गया तथा निर्धारित लक्ष्य हो पूरा किया गया।

8. राजकीय महाविद्यालय जहांगीराबाद, बुलन्दशहर उत्तर प्रदेश में दिनांक 13.07.2020 को उत्तर प्रदेश के अशासकीय महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के डाटा को मानव संपदा पोर्टल अपलोड करने हेतु महाविद्यालय के प्राध्यापक लक्ष्मण सिंह ने डाटा सत्यापन अधिकारी, सहायक लिपिक लक्ष्मण सिंह ने डाटा एंट्री तथा प्रयोगशाला सहायक सुनील कुमार ने डाटा एंट्री सहायक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

9. दिनांक 17.07.2020 को शासन स्तर से गठित समिति द्वारा महाविद्यालय की वित्तपोषित योजना के अंतर्गत सेवारत समस्त प्राध्यापकों के सेवा संबंधी अभिलेखों का भौतिक सत्यापन किया गया तथा सभी को सही पाया गया।

10. 15 अगस्त 2020 को स्वाधीनता दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया।

11. दिनांक 29.08.2020 को राष्ट्रीय कृमि मुक्त दिवस एवं राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया गया।

12. दिनांक 05.09.2020 को राष्ट्रीय शिक्षक दिवस उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा सभी

शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

13. दिनांक 02.10.2020 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी एवं पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री जी की जन्म जयंती मनाई गई।

14. दिनांक19.10.2020 को महाविद्यालय की छात्राओं को मिशन शक्ति के अंतर्गत आत्म सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया।

15. उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ एवं संस्कृत विभाग, दुर्गा प्रसाद बलजीत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अनूपशहर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 22.10.2020 को ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : एक अवलोकन'' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस राष्ट्रीय स्तर के वैबिनार में 600 से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

16. 23 अक्टूबर 2020 को महाविद्यालय के शिक्षा विभाग में 'व्यवसायिक शिक्षा–नई तालीम' विषय पर महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद के तत्वावधान में एक दिवसीय ऑनलाईन कार्यशाला आयोजित की गयी।

17. दिनांक 28 अक्टूबर 2020 को संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री लक्ष्मन सिंह ने उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ द्वारा महर्षि वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित अमरकोष कंठस्थीकरण प्रतियोगिता में प्रांत संयोजक के दायित्व का निर्वहन किया।

18. दिनांक 31.10.2020 को महाविद्यालय में सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया।

19. दिनांक 19.11.2020 को महाविद्यालय की राष्ट्रीय कैडेट कोर इकाई द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

20. दिनांक 22.11.2020 को राष्ट्रीय कैडेट कोर का स्थापना दिवस मनाया गया।

21. दिनांक 26 नवम्बर 2020 को संविधान दिवस मनाया गया, जिसमें प्राचार्य द्वारा एनसीसी कैडेट्स एवं अन्य विद्यार्थियों को संविधान के मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति निष्ठा पूर्वक कार्य करने की शपथ दिलाई।

22. दिनांक 4 दिसम्बर 2020 को मतदाता जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता उपजिलाधिकारी अनूपशहर पदम सिंह ने की।

23. दिनांक 07 दिसम्बर 2020 को उत्तर प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'डिजिटल लाइब्रेरी' से प्रेरित होकर महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री लक्ष्मण सिंह ने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के संस्कृत के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को वीडियो लेक्चर के माध्यम से डिजिटल रूप में ccsusanskrit नामक यूट्यूब चैनल स्थापित करके अपलोड किया।

24. दिनांक 21.12.2021 को सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 800 छात्रों ने प्रतिभाग किया।

25. दिनांक 12 जनवरी 2021 को स्वामी विवेकानन्द जी के जन्मदिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया गया।

26. दिनांक 22 जनवरी 2021 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया।

27. दिनांक 23 जनवरी 2021 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जन्मदिवस को पराक्रम दिवस के रूप में मनाया गया।

28. दिनांक 25 जनवरी 2021 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन किया गया।

29. दिनांक 26 जनवरी 2021 को गणतंत्र दिवस समारोह धूमधाम के साथ मनाया गया।

30. दिनांक 12 फरवरी 2021 को वार्षिक खेलकूद स्पर्धा का आयोजन किया गया।

31. दिनांक 19.02.2021 को छत्रपति शिवाजी महाराज जयंती धूमधाम से मनाई गई।

32. दिनांक 21,23,25 जनवरी 2021 को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के एक दिवसीय तीन शिविरों का आयोजन किया गया तथा दिनांक 26.02.2021 से 04.03.2021 तक राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा स्वयंसेवकों के लिए सप्त दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

सांख्यिकी अध्ययन : प्रमुख संस्थान और अवसर

डॉ. पी.के. त्यागी
विभागाध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग

किसी भी तरह के डाटा के गणितीय तरीके से किए जाने वाले प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण और व्याख्यान करने के विज्ञान को स्टैटिसटिक्स या सांख्यिकी कहा जाता है। वर्तमान समय आर्थिक जगत ही नहीं लगभग हर क्षेत्र में आंकड़ों पर आधारित नीतिगत निर्णय लिए जाने का समय है। सांख्यिकी का उपयोग अब हर क्षेत्र में दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। चुनाव, खेल, जनगणना, चिकित्सा, पर्यावरण विज्ञान, मनोविज्ञान, मार्केटिंग, एग्रीकल्चर, बैंकिंग, बीमा, फार्मा, मीडिया, एस्ट्रोलॉजी और स्टार्टअप इत्यादि क्षेत्रों में सांख्यिकी की बात होना अब आम है। इसलिए वर्तमान ही नहीं भविष्य में भी सांख्यिकी के एक्सपर्ट के लिए अवसरों की कमी नहीं है। सांख्यिकी के क्षेत्र में विद्यार्थियों के लिए चमकदार कैरियर के कई आकर्षक विकल्प खुले हैं। सांख्यिकी के क्षेत्र में केवल देश में ही नहीं अपितु विदेश में भी अवसर मिलने की पूरी संभावना होती है। सांख्यिकी में काम और निजी जीवन में संतुलन बनाना अन्य कैरियर क्षेत्रों की तुलना में आसान है, और तनाव रहित कार्य वातावरण मिलता है। सांख्यिकी की पढ़ाई स्कूली स्तर से ही शुरू हो जाती है। इस विषय में कुछ महाविद्यालयों में प्रवेश 12वीं में प्राप्त अंकों के आधार पर होता है। तो कुछ में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। जिन्होंने 12वीं कॉमर्स से किया है या जिन्होंने 12वीं गणित एक विषय के तौर पर पड़ा है वह सांख्यिकी में बैचलर डिग्री कोर्स कर सकते हैं। यदि आपने गणित या सांख्यिकी विषय में बैचलर डिग्री प्राप्त की है तो सांख्यिकी में एमएससी करना आपके लिए ज्यादा अवसर खोलेगा। स्टैटिसटिक्स में ग्रेजुएट और **पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स के विकल्प निम्नवत हैं:-**

1. बीएससी ऑनर्स इन स्टैटिसटिक्स
2. बीएससी इन अप्लाइड स्टैटिसटिक्स
3. बैचलर ऑफ स्टैटिसटिक्स
4. मास्टर ऑफ स्टैटिसटिक्स
5. एमएससी इन स्टैटिसटिक्स
6. पोस्ट ग्रैजुएट डिप्लोमा इन अप्लाइड स्टैटिसटिक्स
7. सर्टिफिकेट कोर्स एन स्टैटिसटिक्स
8. सर्टिफिकेट इन स्टैटिसटिक्स मैथर्ड एंड एप्लीकेशंस

आप सांख्यिकी में पीएचडी करके शोध और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे सकते हैं। हमारे देश में 60 से ज्यादा यूनिवर्सिटी में सांख्यिकी के कोर्स कराए जाते हैं। जिनमें से प्रमुख संस्थान निम्न हैं-

1. भारतीय सांख्यिकीय संस्थान बेंगलूरु
2. दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
3. लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ
4. चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ
5. अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़
6. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
7. डा. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा

सांख्यिकी में रोजगार के अवसर:- सांख्यिकी में उच्च शिक्षा के बाद विद्यार्थियों के लिए अनगिनत रोजगार के द्वार खुल जाते हैं। इसमें सरकारी व प्राइवेट दोनों सेक्टर में नौकरियों की भरमार है। जिन क्षेत्रों में आपको अवसर मिलेंगे उनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं। सरकारी क्षेत्र जनगणना से जुड़े कार्य हो या आधिकारिक नीतियों का निर्धारण करना हो अधिकतर सरकारी एजेंसी आंकड़ों के आधार पर ही निर्णय लेती है। इसलिए अगर आपने स्टैटिसटिक्स में एमएससी या ग्रेजुएशन कियातो आपको सरकारी कार्यों में नियुक्ति के अवसर खुल जाते हैं। चुनाव आयोग में नियुक्ति मिल सकती है। आर्थिक

सर्वे और अन्य सरकारी योजनाओं को मुकाम तक पहुंचाने के लिए यह अहम भूमिका निभाता है। रिसर्च फील्ड और मार्केटिंग फील्ड में काम करने वालों को काम करने का मौका मिलता है। बैंकिंग में सांख्यिकी का जमकर उपयोग होता है जमा राशि, कर्ज, ब्याज ये सभी मूलभूत सिद्धांत और बैंकों की अन्य आर्थिक गतिविधियां सांख्यिकी पर ही आधारित होती हैं। इसी तरह एकाउंटिंग का काम भी सांख्यिकी के सिद्धांतों पर होता है। कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी के विविध क्षेत्र डिजिटल तकनीक में डाटा साइंटिस्ट आंकड़ों को व्यवसायियों के लिए मूल्यवान जानकारी में परिवर्तित करते हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करने में उचित एल्गोरिदम और मॉडल का चयन और निर्माण करते हैं। सॉफ्टवेयर निर्माण में सिस्टम एनालिस्ट के रूप में सांख्यिकी छात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। डाटा साइंटिस्ट की कंपनियों में काफी मांग है। शिक्षण के क्षेत्र में सांख्यिकी विषय में पोस्ट ग्रेजुएट होने के बाद आपके पास यूजीसी नेट परीक्षा और राज्य या केन्द्र सरकार की भर्ती परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके शिक्षक व प्रोफेसर बनने का विकल्प भी खुला होता है। हेल्थ केयर स्वास्थ्य और चिकित्सा में जैव सांख्यिकी के क्षेत्र में भी खूब अवसर मिलते हैं। इस क्षेत्र में स्टैटिसटिशियंस को बायोस्टैटिसटिशियंस कहते हैं। गणित और आंकड़ों के प्रयोग द्वारा जीवित वस्तुओं के जैव गुणों का वर्णन और वर्गीकरण बायोमैट्रिक्स कहलाता है। सांख्यिकी में चिकित्सा अनुसंधान के दौरान संग्रहित चीजों से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण करना होता है। चिकित्सा अनुसंधान के लिए इसी के आधार पर कोई अनुमान या नतीजा तय किया जाता है इसके लिए जीव विज्ञान और सांख्यिकी दोनों की जानकारी होना जरुरी होता है। आज के समय में चिकित्सा के क्षेत्र में प्रसार के बाद बायोमैट्रिक्स की मांग बढ़ गई है। स्टेटिस्टिक्स के डिग्री प्राप्त युवा को भारतीय कृषि सेवा, भारतीय प्रशासनिक सेवा, रिजर्व बैंक, बीमा संस्थान, इंस्टिट्यूट ऑफ अप्लाइड मेन पावर रिसर्च, इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, सामाजिक आर्थिक गणना से जुड़े क्षेत्र, अनेक वित्तीय संस्थानों में अधिकारी, संघ लोक सेवा आयोग व कर्मचारी चयन आयोग की ओर से इन्वेस्टिगेटर के रूप में काम करने का अवसर मिलता है। यदि आपके पास मास्टर्स डिग्री है तो संघ लोक सेवा आयोग की ओर से आयोजित होने वाली अखिल भारतीय परीक्षा उत्तीर्ण करके भारत सरकार की सांख्यिकी सेवा में कैरियर बना सकते हैं। वहीं भारत सरकार के अधीन सरकारी सांख्यिकी प्रणाली का सर्वोच्च निकाय योजना मंत्रालय में है, जो भारतीय सांख्यिकी संस्थान के साथ साझा प्रयास में योजना से संबंधित आंकड़ों का संकलन करता है। इसमें बड़े पैमाने पर नौकरी निकलती हैं। एक अच्छे स्टैटिसटिशियन में विश्लेषण क्षमता, मैथ्स स्किल और प्रॉब्लम सॉल्विंग स्किल्स होने चाहिए। एक जगह बैठकर काम करने की प्रवृत्ति हो क्योंकि आंकड़े एकाग्रता मांगते हैं। कई बार कम समय में विविध पहलुओं के ज्यादा से जयादा निष्कर्ष निकालने की चुनौतियां भी आती हैं। एक स्टैटिसटिशियन का विवेकशील होना जरुरी है। क्योंकि स्टैटिसटिकल टूल के इस्तेमाल से भी गलत परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस विषय में स्नातक किये युवा को निजी कंपनियों में लाखों का सलाना ऑफर मिलता है। सरकारी नौकरी में भी वेतन और सुविधायें पद अनुसार प्राप्त होते हैं। सांख्यिकी के जानकार बतौर स्टैटिसटिशियन कंसलटेंट, प्रोफेसर, रिस्क एनालिस्ट, डाटा एनालिस्ट बिजनेस एनालिस्ट, मैथमेटिशियंस, डाटा साइंटिस्ट और बॉयोस्टैटिसटिशियन काम करते हैं। विभिन्न डाटा सर्वे एजेंसी में आपको काम के भरपूर अवसर प्राप्त होंगे और विदेश में नौकरी की भी संभावनाएं मिलेंगी। प्रसिद्ध भारतीय सांख्यिकीविद पी सी महालनोबलिस की स्मृति में 19 जून को राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस मनाया जाता है। प्रो. सी. आर. राव और पी.बी. सुखात्मे अन्य प्रसिद्ध सांख्यिकीविद हैं। हमारे महाविद्यालय के सांख्यिकी विभाग से अध्ययन करके देश एवं विदेश के विभिन्न स्थानों पर सेवा दे रहे

कुछ प्रतिभावान छात्र निम्न हैं–

डा. सुरेन्द्र कुमार	सहायक प्राध्यापक	सांख्यिकी विभाग किरोडीमल महाविद्यालय दिल्ली
डा. गजराज सिंह	सहायक प्राध्यापक	सांख्यिकी विभाग रामजस महाविद्यालय दिल्ली
डा. रेणु गर्ग	सहायक प्राध्यापक	सांख्यिकी विभाग दिल्ली महाविद्यालय
हरजीत सिंह	अतिरिक्त सांख्यिकी अधिकारी	उद्यान विभाग उत्तर प्रदेश
डा. गौरव वार्ष्णेय	उपनिदेशक	वन विभाग उत्तर प्रदेश
संजीव कुमार गुप्ता	निदेशक	सांख्यिकी विभाग रिजर्व बैंक मुंबई
अमित बंसल	प्रणेता	अमेहा टेक्नोलोजिज़
विशाल शर्मा	सहायक प्राध्यापक	पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग आई आई एम टी विश्वविद्यालय मेरठ
गोपाल सिंह चौहान	वरिष्ठ सलाहकार	मेलबर्न विक्टोरिया आस्ट्रेलिया

शिक्षा की आत्मा में ऑनलाइन धड़कन

डॉ. सुनीता गौड
असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.एड. विभाग

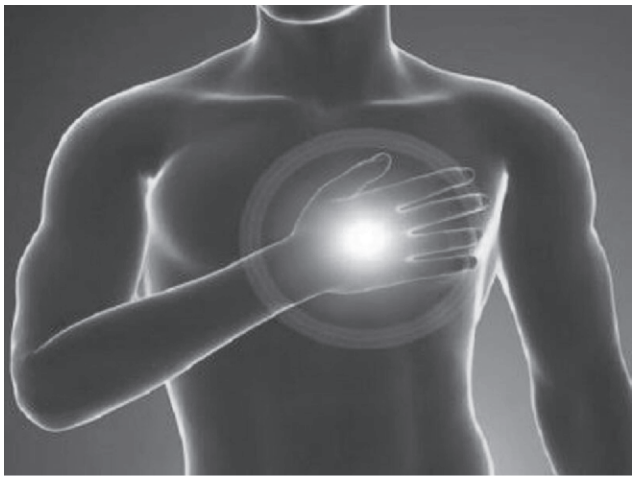

''शिक्षा के ऑनलाइन होने से गुरु-शिष्य परम्परा की एक नई व्यवस्था के शुरू होने से और विद्यार्थियों पर पड़ते प्रभाव पर तंज कसता व्यंग्य.....''

काफी कोशिशों के बाद जो शिक्षा लाइन पर नहीं आ सकी, वह अचानक ऑनलाइन आ गई है। आश्चर्य तो यह भी है कि जो शिक्षार्थी लाइन पर कभी नहीं चला, वह चुपचाप ऑनलाइन चल रहा है। अब शिक्षार्थी के ऑनलाइन हो जाने से शिक्षा को लाइन पर लाना मुश्किल हो गया है।

देश में शिक्षा लाइन पर आ जाए तो समझो सब लाइन पर आ गया। लोग शिक्षा के लाइन पर से उतरने का सारा दोष शिक्षा नीति पर डालकर निश्चिंत हो गए हैं। शिक्षा की नीति है ही ऐसी कि शिक्षार्थी अनीति पर चलने लगता है। देश में जब दूसरी चीजें लाइन से खिसक गई हैं तो बेचारी शिक्षा को लाइन से लुढ़कने का दोषी ठहराना ठीक नहीं।

ऑनलाइन शिक्षा प्रगति पर है या दुर्गति पर यह किसी को पता नहीं। यह पता कर भी लिया तो वह फिर से लाइन पर आने से रही। इसलिए शिक्षा की आत्मा को ऑनलाइन धड़कने दो। यह बात सही है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में एक बार ऑनलाइन हो जाता है, उसे वापस लाइन पर लाना कठिन होता है।

समस्त शिक्षा पद्धतियां शिक्षार्थी के कान से होकर प्रवेश किया करती है। पहले गुरु-शिष्य के कानों को खींच-खींचकर शिक्षा का प्रवेश कराया करते थे। अब कानों में लीड ठूंस-ठूंसकर ज्ञान का स्थानांतरण हो रहा है। यह एक तरह से शिक्षा का कानान्तरण है (कान के द्वारा शिक्षा का स्थानान्तरण) इससे कान मजबूत हो रहे है और बच्चों के कच्चे कान भी पक्के बन रहे हैं।

आदिकालीन गुरु ज्ञान का मंत्र कान में फूंका करते थे, अब वर्तमान कालीन गुरु भी ज्ञान का मंत्र शिष्य के कान में ठूंस रहे है, लेकिन यह कान तभी कारगर होते है जब मोबाइल फोन में डाटा हो। डाटा विहीन कान भी किसी काम के नहीं होते। शिक्षा के साथ-साथ शिक्षार्थी भी चहुंमुखी दृष्टि से ऑनलाइन हो चुका है। अभिभावक परेशान है कि वह ऑनलाइन से ऑफलाइन आने में आनाकानी कर रहा है।

विद्वानों के लिए शिक्षा के दो गुट बन गए हैं। एक लाइन का विरोधी गुट तथा दूसरा ऑनलाइन का विरोधी गुट है। दोनों ही विरोध के, क्योंकि विद्वान पक्ष में तो गुट बनते ही नहीं है। लाइन वाले ऑनलाइन को कुछ नहीं समझते। ऑनलाइन वाले लाइन वालों को भी कुछ नहीं समझते। बचे हुए लोग जो लाइन और ऑनलाइन दोनों को समझते हैं, वे शिक्षा को कुछ नहीं समझते। ऑनलाइन शिक्षा से विद्यार्थी इतना वशीभूत हो गया है कि वह कानों से पढ़ने लगा है तथा आँखों से सुनने लगा है। दिमाग तक चीजें बहुत कम पहुँच रही हैं। कान पर हेडफोन चढाए हुए, लीड लगाए हुए माना जा रहा है कि वह पढ़ रहा है। गणित में सब कुछ माना जाता है और अंत में पूरा सवाल हल होने के बाद मानी गई संख्या को बाहर कर दिया जाता है। विद्यार्थी भी माना कि पढ़ रहा है और पढ़ते हुए समस्त क्रियाएँ कर रहा है। अंत में माना गया, पढ़ना क्रिया शून्य रह जाएगी। ऑनलाइन में जो पीढ़ी पढ़ाई के लिए तैयार हो रही है, इसमें दो ही अंग ज्यादा काम कर रहे हैं आँख और कान। बाकी अंग निकम्मे होने जा रहे हैं।

हाथ पैर, दिल-दिमाग आदि का ऑनलाइन में कोई योगदान नहीं होता।

शिक्षा के बारे में कहा जाता है कि वह विद्यार्थी का चहुंमुखी विकास करती है। यह ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी का एक मुखी विकास ही कर पा रही है। वह विद्यार्थी के शरीर के अंगों के चहुंमुखी विकास तक ही नहीं पहुँच पा रही है तो व्यक्तित्व के चहुंओर कैसे पहुंचेगी ?

मुझे शिक्षा की चिन्ता नहीं है शिक्षार्थी की चिन्ता है। उसका स्कूल बैग अलमारी में बंद पड़ा आंसू बहा रहा है। किताबे - कापियां कुलबुला रही हैं। पेन पड़े-पड़े पिलपिला गया है। ड्राइंग-बॉक्स और ज्योमेट्री बॉक्स जुटे जा रहे हैं। नई किताबें लाने की जगह बेटा डाटा माँग रहा है। ज्ञान का स्त्रोत डाटा में है। डाटा के बिना ज्ञान गंगा का बहना रुक जाता है। देखा जाए तो शिक्षा के पेट में इंटरनेट का पैक घुस गया है। इन्टरनेट के पैक में शिक्षार्थी घुसा हुआ है, वह वही से सीख रहा है।

शिक्षा की आत्मा ऑनलाइन धड़क रही है आज उसकी आत्मा में प्रकाश इंटरनेट फैला रहा है। नेट के बिना शिक्षा को अन्धकारमय ही समझो। ऑनलाइन शिक्षा के महत्व को ऑनलाइनर क्या समझें ? हे प्रभु, उन्हें माफ करना।

अधिक संग्रह की महाव्याधि से कुछ ऐसे निपटें

सत्यपाल सिंह लोधी
अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

मानवीय गरिमा पर प्रकाश डालते हुए श्री रामचरित्र मानसकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान श्रीराम के चरित्र के माध्यम से बड़ी अच्छी व्याख्या की है। नागरिक कर्त्तव्यों का पालन तो उतना भर है कि हम अपने उत्तरदायित्व को निभायें और दूसरों के अधिकारों का व्यतिक्रम न करें, पर सज्जनों की शालीनता इससे भी आगे बढ़ जाती है। वे अपने उदार व्यवहार से दूसरों के सामने आदर्श उपस्थित करते हैं और अनुकरण की प्रेरणा देते हैं। मनुष्यता का गौरव बढ़ाने वाले विभूतियों को समाज का ऋण और अमानत मानते है और उनका सदुपयोग लोक–मंगल के लिए करते हैं–

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

कीर्ति (प्रभाव), कविता (साहित्य) और संपत्ति वही श्रेष्ठ है, जो गंगा जी की तरह सबका भला कर सके अर्थात् जो विभूतियाँ लोकहित में न लग सकें। वे निकृष्ठ है। विभूतिवानों को जो विशेषताएँ ईश्वर ने दी है उन्हें भगवान की धरोहर मानकर–लोक–कल्याण में ही उनका प्रयोग करना चाहिए। आवश्यकता से अधिक मात्रा में जमा संपत्ति का यही सदुपयोग है कि उसे जल्दी सत्प्रयोजनों के लिए वितरित कर दिया जाए। रावण ने प्रचुर संपत्ति जमा कर रखी थी। सिंहासनारुढ़ होने पर वह विभीषण को मिली। इस संचय के धन का क्या किया जाए? यह बात उन्होंने श्री राम से पूछी। भगवान श्रीराम ने उसे तुरंत ही वितरण करके संग्रह के पाप का तत्काल प्रायश्चित करने की सलाह दी। तदनुसार वह संपदा आवश्यकता वाले लोगों एवं कार्यो के लिए अविलंब दे दी गयी।

शिक्षा व्यवस्था

योगेन्द्र कुमार लोधी
अंशकालिक प्रवक्ता, गणित विभाग

शिक्षा व्यवस्था में बदलाव की जरुरत:– शिक्षा व्यवस्था देश के निर्माण में सबसे प्रमुख साधन है, क्या हम शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन और प्रयोग को प्रोत्साहित कर रहे हैं? जब तक प्रयोग नहीं करेंगे तब तक यही हाल रहेगा जो आज है– यानी बेरोजगारी की लम्बी कतार और स्वरोजगार के लिए कोई तैयार नहीं।

जरुरी है व्यवहारिक ज्ञान– आज की शिक्षा व्यवस्था में खाली शैक्षणिक व्याखान होते हैं और व्यवहारिक ज्ञान को बहुत कमजोर दिया जाता है कक्षा का आकार बढ़ाया जा रहा है पर गुणवत्ता पर जोर नहीं है शिक्षा विभाग के नये मापदण्डों के अनुसार कक्षा का आकार 900 स्कवायर मीटर कम से कम होना चाहिए। यानी एक कक्षा में 80–90 विद्यार्थियों का होना तय है, जबकि आदर्श रूप में सिर्फ 15–25 विद्यार्थी ही होने चाहिए ताकि विस्तार से चर्चा हो सके। हर सैद्धान्तिक चर्चा के बाद कम से कम 2 घण्टे तक उसके अभ्यास की व्यवस्था होनी चाहिए लेकिन ऐसा नहीं है।

सादगी–सौभाग्य की जरुरत– शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थी में सादगी सौभाग्य और शिष्टाचार और विनम्रता के बीज बो सकता है।

सह–शैक्षणिक गतिविधियों पर बल– हर संस्था को सह शैक्षणिक गतिविधियों पर बल देना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

खुली पुस्तक परीक्षा– विद्यार्थियों को तोता नहीं बनाना है बल्कि एक कुशल समझदार व्यक्ति बनाना है खुली पुस्तक परीक्षा में प्रश्न में प्रश्न बड़े जटिल और प्रैक्टिकल होते हैं और विद्यार्थी पुस्तककी मदद से उन प्रश्नों का समाधान खोजता है। यह एक सही तरीका है। विद्यार्थी प्रयास करते–करते अपने विषय में दक्ष बन जाता है।

नवाचार–जिज्ञासा को बल मिले– हर विद्यार्थी जिज्ञासा और नवाचार का बण्डल होता है और उसको प्रोत्साहन मिले तो वो कमाल कर सकते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता है हर कदम पर उसको हतोत्साहित किया जाता है। जरुरी है कि व्यवस्था में परिवर्तन हो और नवाचारी विद्यार्थी को हर नवाचार पर पुरूस्कार मिले।

मानव जीवन में पुस्तकालय का महत्व

के.के. श्रीवास्तव
पुस्तकालय प्रभारी

पुस्तकालय ज्ञान के वे मंदिर हैं जो मानव इच्छा को शान्त करते हैं, उसे विभिन्न विषयों पर नई जानकारियां उपलब्ध कराते हैं, ज्ञान के संचित कोशसे उसे निश्चित करते हैं।

बड़े-बड़े पुस्तकालयों में लाखों पुस्तकें संगृहीत होती है। इनमें वे दुर्लभ पुस्तकें भी होती हैं जो अब अप्राप्य हैं, जिन्हें किसी भी कीमत पर खरीदा नहीं जा सकता।

सृष्टि के समस्त चराचरों में मनुष्य ही सर्वोत्कृष्ट कहलाने का गौरव प्राप्त करता है। मनुष्य ही चिंतन-मनन कर सकता है। अच्छे-बुरे का निर्णय कर सकता है तथा अपने छोटे से जीवन में बहुत कुछ सीखना चाहता है। उसी जिज्ञासा को पुस्तकें शान्त करती है अर्थात ज्ञान का भंडार पुस्तकों में समाहित है। ऐसा स्थान जहां अनेक पुस्तकों को संगृहीत करके उनका एक विशाल भंडार बनाया जाता है। पुस्तकालय कहलाता है।

दुनियां में विषय अनंत है उन विषयों से संबंधित पुस्तकें भी अनंत हैं। उन सभी पुस्तकों को खरीद कर पढ़ पाना किसी के बस की बात नहीं। इस आवश्यकता की पूर्ति पुस्तकालय अत्यंत सुगमता से कर सकता है।

पुस्तकालय में बैठकर कोई भी व्यक्ति एक ही विषय पर अनेक व्यक्तियों के विचारों से परिचित हो सकता है। अन्य विषयों के साथ अपने विषय का तुलनात्मक अध्ययन भी कर सकता है। अनगिनत पुस्तकों वाले अधिकांश पुस्तकालय पूरी तरह व्यवस्थित होते हैं। विद्यार्थी कुछ देर में ही अपनी जरूरत की पुस्तक पा सकता है।

पुस्तकालयों में संकलित पुस्तकों के माध्यम से व्यक्ति भाव-विचार, भाषा, ज्ञान-विज्ञान आदि सभी विषयों के क्रमिक विकास का इतिहास जानकर उनका किसी भी विशिष्ट दृष्टि से अध्ययन कर सकता है। अपने प्रिय महापुरुष, राजनेता, कवि, साहित्यकार आदि के जीवन और विचारों को कोई व्यक्ति सहज ही समझ जाता है। जातियों, राष्ट्रों, धर्मो आदि के उत्थान-पतन का इतिहास भी पुस्तकों से जानकर उत्थान और पतन के कारणों को अपनाया या उनसे बचा जा सकता है।

पुस्तकालय ज्ञान-विज्ञान के अनंत भंडार होते हैं। उन्हें अपने भीतर समाए रहने वाला अनंत नदी-धारों, विचार-रत्नों, भाव-विचार प्राणियों का अनंत सागर एवं निधि कहा जा सकता है। जैसे ज्ञान-विज्ञान के कई तरह के साधन पाकर भी सागर की अथाह गहराई एवं, स्वरूपाकार को सही रूप से नाप-तोल संभव नहीं हुआ करता, उसी प्रकार पुस्तकालयों में संचित अथाह ज्ञान-विज्ञान, विचारों-भावों आदि को खंगाल पाना भी नितांत असंभव हुआ करता है। जैसे अनंत नदियों का प्रवाह नित्य प्रति सागर में मिलते रहकर उसे भरित बनाए रखता है वैसे ही नित्य नई-नई पुस्तकें भी प्रकाशित होकर पुस्तकालयों को भरा-पूरा किए रहती है। यही उनका महत्व एवं गौरव है।

पुस्तकालय के द्वारा हमें अपने देश के महापुरुषों के जीवन चरित्र सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है। यह है कि उन्होंने देश की रक्षा के लिए क्या-क्या कार्य किये और किस प्रकार अपने प्राणों का बलिदान किया। उनकी जीवनियों को पढ़कर हमें उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है। परन्तु आज के जमाने में देश में पुस्तकालयों व पुस्तकों की बहुत कमी है, जिस कारण हमें सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता। हमारी सरकार को भारत में पुस्तकालयों के विकास के लिए अधिक प्रयत्न किया जाना चाहिये।

ज्ञान वृद्धि के अतिरिक्त पुस्तकालयों से ज्ञान का प्रसार भी सरलता से होता है।

पुस्तकालय के संपर्क में रहने से मनुष्य कुवासनाओं और प्रलोभनों से बच जाता है। पुस्तकालय मनुष्य को सत्संग की सुविधा प्रदान करता है। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते कभी मनुष्य मन ही मन प्रसन्न हो उठता है और कभी खिलखिलाकर हँस पड़ता है।

श्रेष्ठ पुस्तकों के अध्ययन से हमें मानसिक शान्ति प्राप्त होती है उस समय संसार की समस्त चिन्ताओं से पाठक मुक्त हो जाता है। अत: पुस्तकालय हमारे लिए नित्य जीवन साथियों की योजना करता है। जिसके साथ आप बैठकर बातों का आनंद ले सकते हैं।

आधुनिक युग में यद्यपि मनोरंजन के अनेक साधन है परंतु ये सब मनोरंजन के साधन पुस्तकालय के सामने नगण्य हैं क्योंकि पुस्तकालय से मनोरंजन के साथ-साथ पाठक का आत्म-परिष्कार एवं ज्ञान वृद्धि होती है। पुस्तकालयों में भिन्न-भिन्न रसों की पुस्तकों के अध्ययन से हम समय का सदुपयोग भी कर लेते हैं।

उस अज्ञानांधकार को दूर करने के लिए सरकार का यह प्रयास प्रशंसनीय है। जिन लोगों पर लक्ष्मी की अटूट कृपा है, उन्हें इस प्रकार के पुस्तकालय जनहित के लिए खुलवाने चाहिए। पुस्तकालय का महत्व देवताओं से अधिक है क्योंकि पुस्तकालय ही हमें देवालय में जाने योग्य बनाते हैं।

धर्म एवं विज्ञान

डॉ. तरुण श्रीवास्तव,
सहायक आचार्य, वाणिज्य संकाय

अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, ''धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है, विज्ञान के बिना धर्म अंधा होता है'' और उसने यह भी कहा था, ''मैं जितना अधिक विज्ञान का अध्ययन करता हूँ, उतना अधिक मैं भगवान में विश्वास करने लगता हूँ।

अल्बर्ट आइंस्टीन ने मानव इतिहास के सबसे प्रतिभाशाली वैज्ञानिक थे। वह हमें बता गये कि धर्म और विज्ञान एक दूसरे पर आश्रित है और किसी भी तरह वे मजबूत संबंध के साथ जुड़े हुए हैं। अभी तक कोई ऐसी अवधारणाा या दर्शन नहीं है जो विज्ञान और धर्म के बीच संबंध की व्याख्या करता हो। आइए इन दोनों की मूल अवधारणा को पता करते हैं।

'विज्ञान एक व्यवस्थित उद्यम है जो कि ज्ञान को परीक्षण योग्य स्पष्टीकरण बनाता है और ब्रह्मांड के बारे में भविष्यवाणी के रूप में करता है।' यह अवलोकन और प्रयोग की व्यावहारिक गतिविधि है जिसके माध्यम से संरचना और प्राकृतिक दुनिया के व्यवहार का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है।

धर्म व्यवहार और प्रथाओं, दुनिया विचारों, पवित्र ग्रंथों, पवित्र स्थानों, नैतिकता, सामाजिक संगठन की एक सांस्कृतिक प्रणाली है जो कि मानवता के लिए संबंधित करता है जिसे मानव विज्ञानी 'अस्तित्व के एक आदेश' कहते है। आप में विश्वास है और पूजा करते हैं एक अलौकिक शक्ति की जो सबको नियंत्रित करती है, विशेष रूप से एक भगवान या देवता।

इन परिभाषाओं से दोनों पूरी तरह से अलग हैं लेकिन अगर हम गहराई से उन दोनों अध्ययन करते है तो हम जानते है कि दोनों एक ही बात की ओर इशारा करते हैं। जिस तरह विज्ञान बताता है कि प्राकृति और हमारे ब्रह्मांड के सभी व्यावहारिक कानून में, कैसे एक विशेष नियम द्वारा प्रत्येक वस्तु काम करती है, उदाहरण के लिए कैसे हम गुरुत्वाकर्षण बल और ऐसे अन्य बलों द्वारा इस धरती से जुड़े होते हैं जिस पर पूरी प्रकृति काम करती है। इसी तरह धर्म भी मानव जीवन से संबंधित कई कानून है, उदाहरण के लिए ''वेद'', एक बेहतर मानव जीवन बनाने के लिए योग, आयुर्वेद, ज्योतिष और कई और अधिक अवधारणा के बारे में हमें सिखाता है।

दोनों नियमों के बीच अंतर यह है कि विज्ञान के नियम निश्चित है और धर्म नियम परिवर्तनीय हैं, हमारे संविधान की तरह। विज्ञान के नियम उन चीजों पर लागू होते हैं जो अस्थिर नहीं कर रहें हैं या शायद ही कभी बदलते जैसे हमारी पृथ्वी यह हजारों साल के बाद के रूप में ही है। लेकिन मानव सजीव व्यक्ति है वे समय के साथ बदल रहे हैं। इसलिए धर्म के नियमों में समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन हो रहा है जैसे पिछले 2000 वर्षों में कई सारे नए धर्म हमारी दुनिया में शुरू हो गए हैं।

हमारे ब्रह्मांड का निर्माण

जैसा कि हम जानते है कि हमारे ब्रह्मांड 4 मौलिक बलों के बीच एक बिग बैंग द्वारा बनाया गया था। विज्ञान बिग बैंग थ्योरी के मुताबिक चार मौलिक बलों - विद्युत, गुरुत्व, कमजोर परमाणु क्रिया और मजबूत परमाणु क्रिया थे। लेकिन बिग बैंग से पहले क्या था, इसका कोई जवाब नहीं है, विज्ञान हमें बताता है कि बिग बैंग सिद्धांत के बाद हमारे ब्रह्मांड का विस्तार होता जा रहा है और यह 13.8 अरब साल पहले घटित हो गया था, हमारे ब्रह्मांड 200 अरब आकाशगंगाओं और अनंत सितारों और ग्रहों को शामिल होने का अनुमान है।

स्ट्रिंग सिद्धांत के अनुसार ब्रह्मांड के कई अतिरिक्त आयाम (Dimension) मौजूद होना चाहिए रहे हैं। Bosonic स्ट्रिंग सिद्धांत रूप में, अंतरिक्ष समय 26-आयामी है जबकि सुपर स्ट्रिंग सिद्धांत में यह दस आयामी है। समानांतर ब्रह्मांड और मल्टीवर्स (या मेटा-यूनिवर्स) के एक और कुछ सिद्धांत है जो अनंत या परिमित संभव ब्रह्मांडों (ब्रह्मांड हम लगातार अनुभव सहित) है ये सब एक साथ मौजूद हैं, आधुनिक विज्ञान के अनुसार हम कह सकते हैं हमारा ब्रह्मांड बहुत बड़ा है और वहाँ भी कई बहुआयामी ब्रह्मांड और समानांतर ब्रह्मांड की संभावना भी कर रहे हैं।

सनातन (हिन्दू) ब्रह्मांड विज्ञान इंगित करता है कि वर्तमान चक्र सब कुछ की शुरुआत नहीं है, लेकिन ब्रह्मांडों की एक अनंत संख्या से शुरू हुए और ब्रह्मांडों का एक और अनंत संख्या के बढ़ रहा है, जो आधुनिक विज्ञान अवधारणाओं जैसा है, बुलबुला और सनातन वेदों का उल्लेख है।

मल्टीवर्स सिद्धांत के अनुसार, ''हमारा ब्रह्मांड एक बुलबुला में रह सकता है और अंतरिक्ष में बुलबुला ब्रह्मांडों के एक नेटवर्क में बैठा है।'' हिन्दू शास्त्रों के अनुसार, ब्रह्मांड जिसमें कि हम में रहते हैं, यह पूरे सामग्री निर्माण और सभी ब्रह्मंडों का सिर्फ एक छोटे से छोटा हिस्सा है, श्री महा विष्णु ही इन सृष्टियां के स्त्रोत है और उनसे सभी एक ही समय में पैदा होते हैं।

श्रीमद् भागवत के अनुसार (6.16.37) ''इस एक सृष्टि के अलावा असंख्य सृष्टियां उत्पन्न कर रहे हैं, और हालांकि वे बहुत बड़े हैं, वे आप में (भगवान विष्णु) परमाणुओं के तरह चलते हैं। इसलिए आपको 'बिना सीमा वाला, असीमित कहा जाता है''

भागवत 10.14.11 में, इसे फिर से कहा गया है:'' असीमित ब्रह्मांड आपके शरीर (भगवान विष्णु) से धूल कणों के रूप में की छिद्रों के माध्यम से गुजरती हैं''। भागवत 9.4.56 में भगवान शिव फिर से इस प्रकार का उल्लेख है: ''मेरे प्यारे बेटे, मैं भगवान ब्रह्मा और अन्य देवता में हूँ, जो इस ब्रह्मांड के भीतर रहते हैं, देवत्व की सुप्रीम व्यक्तित्व के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए किसी भी शक्ति का प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं, असंख्य सृष्टियां और उनके निवासियों के अस्तित्व में आने और जाने के लिए भगवान हरि की ओर अग्रसर है।''

अन्य ग्रहों का जीवन

हमारे ब्रह्मांड अनंत तारे और ग्रह के साथ बहुत बड़ा है तो निश्चित रूप से पृथ्वी की तरह अन्य ग्रहों पर जीवन रह रहे हैं, हाल ही में नासा ने आधिकारिक तौर पर पुष्टि की है, सेटी (SETI) पृथ्वी से परे बाहय अंतरिक्ष से जीवन के मजबूत संकेतों पर काम कर रहा है। कई अन्य संगठनों सर्न आदि को भी अन्य ग्रहों पर जीवन संकेत मिल रहे हैं और सेटी को "WOW संकेत" की तरह अंतरिक्ष से कुछ संकेत मिल गया है, सर्न, ग्रह की सबसे बड़ी मशीन है जो बिग बैंग प्रयोगों पर काम कर रहे हैं और कुछ स्रोत (wormhole) वे भी बनाने की कोशिश कर रहे हैं एक wormhole अन्य आयाम या बाहय अंतरिक्ष के लिए स्टारगेट खोलने के लिए इस्तेमाल होता है। कुल मिलाकर अधिकांश अंतरिक्ष वैज्ञानिक अन्य ग्रह पर अलौकिक जीवन का पता लगाने के लिए कोशिश कर रहे हैं।

प्राचीन सनातन (हिन्दू) पद्वति अनुसार यह स्पष्ट रूप से देखते हैं, हमारे ब्रह्मांड में उल्लेख कई अन्य लोक (ग्रह) पर जीवन है अथर्ववेद के अनुसार वहाँ रहे हैं इन्द्र लोक, विष्णु लोक, ब्रहमलोक, स्वर्गलोक, नर्कलोक पाताललोक सर्पलोक आदि जैसे 14 संसारी है:

उच्चतर लोक (ग्रह)- व्याघ्रतिस Vyahrtis

लोअर लोक (ग्रही) - पाताल

01- सत्य लोक, 02- तप-लोक, 03- जना-लोक, 04- महार - लोक, 05- उत्तर-लोक, 06- भुवर-लोक, 07- भू-लोक, 08- अटल-लोक, 09-वितल-लोक, 10- सुतल-लोक, 11- तलातल-लोक, 12- महातल-लोक, 13- रसातल-लोक, 14- पाताल-लोक

पद्म पुराण में ब्रह्मांड के विभिन्न प्रकार की जीवन-रूपी संख्या की चर्चा है। पद्म पुराण के अनुसार, वहा 84,00,000 जीवन-फार्म प्रजातियों, जिनमें से 9,00,000 जलीय वाले हैं : 20,00,000 पेड़ और पौधे हैं: 11,00,000 छोटे कीड़ों प्रजातियां हैं: 10,00,000 पक्षी हैं: 30,00,000 जानवरों और सरीसृप हैं: और 4,00,000 स्तनपायी प्रजातियां हैं।

पुराण के अनुसार उन प्रजातियां का उल्लेख इस तरह हैं: यक्ष वे प्रजातिय जो वेद और आयुर्वेद की चिकित्सा तकनीकों के बारे में अत्यधिक विकसित ज्ञान के साथ पृथक भूमि, गुफाओं और जंगलों में रहते हैं।

मायावी नागाओं सबसे पहले के है, जो अपनी शुरुआत के बाद से मानव जाति के साथ घुलमिल कर रह रहे हैं। नागा उपयोग में उनकी विमान (यूएफओ), जिसके द्वारा वे करने के लिए इधर-उधर थे, नाग लोक (अस्तित्वव के नागा विभाग) और मिस्र की तरह अलग अलग सभ्यताओं को आशीर्वाद से आया था।

बिला स्वर्ग के असुरों एक दैत्याकार उन्नत दौड़ रहे हैं। वे दैत्यों, असुरों उनकी माँ अदिति से पैदा होते हैं, और अदिति से अपने दुश्मनों को देवास कहते हैं। दोनों देवता या सुरस और असुरों अलौकिक उन्नत दौड़ रहे हैं। बिला स्वर्ग की असुरों में प्रमुख पात्रों को हम जानते हैं जैसे शुक्राचार्य, महाबली, अन्धक, महिषासुर हैं, रावण आदि।

कुछ शोधकर्ताओं कह रहे हैं 'हिन्दू देवताओं वास्तव में एलियंस थे' हिस्ट्री चैनल के लोकप्रिय श्रृंखला 'प्राचीन एलियंस' भी इस सिद्धांत का उल्लेख था। हम सनातन पद्धति, तकनीक, उनकी शक्ति और क्षमता, युद्ध और वास्तुकला, जो सामान्य इंसान के लिए आसान नहीं था, का अध्ययन करें तो यह पता चलता है, कि वे अलौकिक लोग पृथ्वी पर आये थे यहाँ रहते, हमें सिखाने और जब हम इस ग्रह पर रहने के लिए सक्षम हो गया है तो वापस चले गए या वे यूएफओ में समय-समय हमारे ग्रह पर आते है। यक्ष कुबेर की पुष्पक विमान रामायण में रावण द्वारा इस्तेमाल के लिए अंतरिक्ष यान के शुद्ध उदाहरण है।

आधुनिक विज्ञान भूमि पर सबसे पुराने जीवन को Pikaia और Conodont के फॉर्म में 530 करोड़ साल पहले प्रकट होना बताता है। जीवन 480 मिलियन साल पहले मछली के रूप में प्रकट होता है जो placoderm के रूप में जाना प्रतीत होता है। स्तनधारी 256 मिलियन वर्ष में प्रकट होने के बाद पहले स्तनपायी-जैसे सरीसृप pelycosaurs, तो Primates 65 मिलियन साल पहले और Hominidae 15 लाख साल पहले कर रहे हैं। होमो इरेक्टस और होमो antecessor 3 लाख साल और बाद में होमो आदि से पहले 160 हजार साल होमो सेपियन वर्तमान मानव से पहले 80 हजार वर्षो में दिखाई देते हैं।

आधुनिक विज्ञान हमें बताता है कि मानव और सभी प्रजातियों की उत्पत्ति सर्वप्रथम जल में हुई है। भगवान विष्णु का अवतार पहले

भी भगवान 'मत्स्य' अवतार की तरह एक मछली था।

प्रभु के दूसरे अवतार 'कूर्म' अवतार (कस्यणप) द्विधा गतिवाला पानी और जमीन दोनों जीव 'चतुष्पाद' (कछुवा) की तरह में रह रहा था।

चतुष्पाद बाद स्तनधारियों दिखाई देते हैं और भगवान विष्णु के तीसरे अवतार एक स्तनपायी 'वराह' अवतार जो जंगली भूमि जानवर की तरह था।

प्राइमेट और होमिनिडे में स्तनपायी जीव जो आंशिक रूप से मानव और पशु आंशिक रूप से जो भी अन्य स्तनपायी को खाता था, अगर हम भगवान विष्णु के अवतार अगले देखो इसे 'नरसिम्हा' अवतार जो भी आंशिक रूप से मानव और आंशिक रूप से जानवर की तरह था।

होमिनिडे के बाद, 'होमो' प्रतीत होता है कि वे पहली होमो या आधुनिक मनुष्य से पहले का माना जाता है, होमो इरेक्टस और होमो antecessor उन भगवान विष्णु 'वामन' अवतार लघु मनुष्य के पांचवें अवतार के रूप में मनुष्य के प्रारंभिक चरण में थे।

जल्दी मनुष्य जंगलों में रहने वाले और लकड़ी और पत्थर आदि के प्रारंभिक हथियारों का प्रयोग - होमो heidelbergensis अगले होमो विकास, इन लोगों को, बड़ा मस्तिष्क थे, लंबा और अधिक मांसपेशियां थी जो सिर्फ भगवान विष्णु 'परशुराम' के छठे अवतार की तरह था।

आधुनिक मनुष्य के रूप में जो रोपण किया गया था, मछली पकड़ने और समाज में रह रहा था, हम कह सकते हैं कि वे पहली सामाजिक मनुष्य थे। मानव, समुदाय में रहने वाले नागरिक समाज की शुरुआत - भगवान विष्णु के सातवें अवतार 'भगवान राम' थे।

एक अन्य बिन्दु, रामायण का वहां मानव के 3 प्रकार एक ही समय में रह रहा था, राम के समय में यहां 'जामवंत' होमिनिडे मानव और 'प्रभु हनुमान' होमो मानव (ज्यादातर होमो इरेक्टस) थे और 'भगवान राम' होमो सेपियंस (आधुनिक मानव) थे।'' इसके बाद आधुनिक और राजनीतिक समाज प्रतीत होता है, भगवान विष्णु 'भगवान कृष्ण' के आठ अवतार के रूप में आये - मनुष्य पशुपालन, राजनीतिक रूप से उन्नत समाज का अभ्यास और फिर समझदार मानसिकता वाला था।

आत्मज्ञान और अधिक ज्ञान पाने वाला मनुष्य - भगवान विष्णु के अवतार नौवीं 'बुद्ध' थे। यदि हम भगवान बुद्ध के समय में देखो जिन्होंने बौद्ध धर्म शुरू कर दिया, समय कुछ अन्य महात्माओं जैसे महावीर स्वामी ने जैन धर्म बनाया है और प्रभु यीशु ने ईश धर्म शुरू कर दिया।

विनाश के महान शक्तियों, जो सब बुराई शक्ति को नष्ट कर देगा और फिर सत्य युग शुरू के साथ उन्नत मनुष्य - अंत में भगवान विष्णु के रूप में फिर से 'कल्कि' अवतार दिखाई देंगे।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

पिछले कुछ सौ सालों से वैज्ञानिक ने कई आविष्कार किया है मशीन और प्रौद्योगिकी, बिजली, इंजन, कम्प्यूटर, ऑटोमोबाइल, हवाई जहाज, प्रशीतन, टेलीफोन, मुद्रण, इंटरनेट और कई और अधिक की खोज की है।

सनातन की गई अपनी स्वयं के प्रौद्योगिकियां थी। उन सनातन प्रौद्योगिकियों के कुछ प्रकार हैं विमान, अश्त्र-शास्त्र, ब्रह्मास्त्र, वास्तुशास्त्र, कामसूत्र, नाट्यशास्त्र-नाटक और नृत्य, भूगोल (भू-पृथ्वी, गोल-क्षेत्र है, जिसका अर्थ पृथ्वी गोलाकार है, सनातन ने हजारों साल पहले बताया) और भी कई अधिक पुराण व शास्त्र है। यहां सनातन तकनीकों के बारे में कुछ रोचक तथ्य उल्लेख हैं:

डार्क मेटर: भागवत के अनुसार डार्क मैटर कुल ब्रह्मांड का 75% है, SB 2.6.20 काले पदार्थ आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में कुल मामले की 80% के आसपास। (डार्क मैटर ब्रह्मांड के द्रव्यमान का लगभग 80 प्रतिशत है जो कि वैज्ञानिक नियमों को सीधे पालन नहीं कर सकते। काले पदार्थ के रूप में जाना जाता है, इस विचित्र घटक प्रकाश या ऊर्जा का उत्सर्जन नहीं करता।)

हनुमान चालीसा में (जग सहस्त्र योजन पर भानु, लीलो ताहि मधुर फल जानू) पृथ्वी से सूर्य की दूरी: हिन्दू वैदिक रूपांतरण के अनुसार & 1Juug = 12000; Sahastra = 1000; 1 Yojan = 8 मीलों। इस प्रकार 12000 ग 1000 एक्स 8 = 96,000,000 मील की दूरी पर। 1 मील 1.6 किलोमीटर =। कुल - 153,600,000 किमी '153 मिलियन किलोमीटर)। पृथ्वी आधुनिक विज्ञान के लिए सूर्य की दूरी: 150 मिलियन किलोमीटर।

वेदों में प्रकाश की गति (सहस्र द्वे द्वे सते द्वे कै योजन एकेन निमिषार्धेन क्रमांमं (300000 किमी./सें.), आधुनिक विज्ञान (300000 किमी./से.) में प्रकाश की गति।

दिव्य दृष्टि: (लाइव प्रसारण)- भगवान कृष्ण 'दिव्य दृष्टि' के साथ संजय उपहार में दिया है, ताकि वह ''कुरूक्षेत्र'' का एक 'लाइव प्रसारण' देख सके और धृतराष्ट्र को उसका वर्णन सुना सकें।

पुष्पक विमान- यह पहली उड़ान रामायण में उल्लेख किया और रावण द्वारा इस्तेमाल के लिए विमान है। यहां तक कि पहली हवाई जहाज संयुक्त राज्य अमेरिका में राइट बंधुओं द्वारा दिसम्बर 17,1903 पर उड़ रहा था। जबकि सनातन हजार साल पहले इस प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करता था।

क्लोनिंग: श्रीमद् भागवत गीता में यह उल्लेख किया गया है कि जब महामहिमा निमी मर गया था, मंथा की प्रक्रिया द्वारा संत, एक नए बच्चे अपने मृत शरीर से बनाए गए। बच्चे को जनक कहा जाता है वह (मंथा) अपने पिता की क्लोनिंग से उत्पन्न हुआ था। यह विदेह बुलाया गया था, क्योंकि यह एक गैर यौन प्रक्रिया का जन्म हुआ था। क्लोनिंग का विज्ञान अच्छी तरह से जाना जाता था और महाभारत काल के दौरान अभ्यास किया। कौरवों ''प्रौद्योगिकी के उत्पादों थे कि आधुनिक विज्ञान भी अभी तक विकसित नहीं किया गया है।'' उन्होंने कहा कि महाभारत में विवरण के अनुसार, कौरवों 100 भागों में एकल भ्रूण बंटवारे और एक अलग कंटेनर में प्रत्येक भाग बढ़ती द्वारा बनाया गया था।

अंग प्रत्यारोपण: हम जानते हैं कि वहाँ शरीर के अंगों के प्रतिस्थापन के दो प्रकार के होते हैं: पहले की तरह हाथ, हाथ, और पैर, जो महत्वपूर्ण अंग हैं। तो फिर वहॉ महत्वपूर्ण अंगों का प्रत्यारोपण कर रहे हैं। एक उदाहरण जहां पूरे सिर की रोपाई कर, कैसे दूसरे जीव का सिर गणेश को गया था।

समय यात्रा: राजा रैवता ककुदमी की कहानी है वह प्रजापति ब्रह्मा में मिलने के लिए यात्रा करता है। यहां तक कि इस यात्रा इतनी लंबी नहीं थी, जब ककुदमी पृथ्वी पर वापस लौटे, पृथ्वी पर 108 युग बीत चुके थे, और यह कि प्रत्येक युग में 4 करोड़ वर्ष का होता है, स्पष्टीकरण ब्रहमाने ककुदमी को दिया था 'समय' अस्तित्व के विभिन्न आयामों में अलग तरह से चलाता है।

Teleportation : या Teletransportation, सैद्धांतिक दो लोगों के बीच किसी बात या ऊर्जा के हस्तांतरण, बिना शारीरिक हस्तछेप से करने को कहते है। टेलीपोर्टेशन एक संत ''नारद'' जो सभी देवताओं को भगवान विष्णु को भक्त और दूत है के द्वारा इस्तेमाल किया गया था। सेंट नारद एक ''वीना'' उसके हाथ में है और दुनिया भर के देवताओं के शिक्षण फैलता है। वह सिर्फ दो बार भगवान विष्णु के नाम कहते हैं और सेकंड के एक अंश से भी कम समय में teleported हो जाता है। वैज्ञानिकों को यह भी सहमत है कि टेलीपोर्टेशन संभव है और यह फिल्म 'स्टार ट्रैक' की तरह लहरों की श्रृंखला में हमारे शरीर को स्थानांतरित करने के लिए और किसी भी शारीरिक संपर्क के बिना दूसरे के लिए एक जगह से उन तरंगों में परिवर्तित करने, की घटना पर आधारित है।

Telepathy: इसे हिंदू धर्म के कई संत और देवताओं के द्वारा पुराणों का उल्लेख और विचार का संचार होता है प्रोफेसर एक्स द्वारा एक्स-मेन फिल्मों में दिखाया लेकिन अभी भी आधुनिक विज्ञान के लिए एक चुनौती है।

रामसेतु: यह एक इंजीनियरिंग कृति है। देखने के वैज्ञानिक बिंदु से, प्रौद्योगिकी एक बार पत्थर पानी पर तैरने लगते बनाने के लिए अस्तित्व में है और नल और नील की तरह वास्तुकार दो आर्किटेक्ट लाख विनर्स के समर्पित कार्य बल की मदद से 5 दिनों के भीतर श्रीलंका को भारत से एक पुल के निर्माण में उन्नत थे। यहाँ तक कि वाल्मीकि रामायण में, वहाँ इस पुल के निर्माण में सिविल इंजीनियरिंग की एक अवधारणा है।

प्राचीन रोबोट, कुम्भकरण – रामायण में रावण कुम्भकर्ण के छोटे भाई के रूप में जाना जाता है। लेकिन वह एक सजीव व्यक्ति नहीं था, यह एक था 'यंत्र' (मशीन/रोबोट), जो एक विशालकाय रोबोट की तरह एक विशाल उपस्थिति थी। विभीषण राम और उसकी सेना को कुम्भकर्ण की सच्चाई का पता चलता है। ''चलो सभी बंदरों को कहा जा सकता है कि यह मशीन का एक प्रकार है कि, आगे बढ़ते। यह जानकर, वे अब तक निडर बन सकता है''।

बह्ममास्त्र (परमाणु हथियार) : ब्रह्ममास्त्र क्षमता वाले पूरी सेना को एक बार नष्ट करने के लिए रामायण, महाभारत और कई अन्य पुराण में उल्लेख कर रहे हैं। महाभारत में वर्णित है, यह एक हथियार है जो एक भी ब्रह्मांड के सभी शक्ति के साथ फेंकने के होने के लिए कहा जाता है। यह आधुनिक दिन परमाणु हथियारों के बराबर माना जाता है।

गुरुत्व के कानून: ''वस्तुओं पृथ्वी द्वारा आकर्षण की एक शक्ति के कारण पृथ्वी पर गिर जाते हैं। इसलिए, पृथ्वी, ग्रह, नक्षत्री, चंद्रमा और सूर्य के इस आकर्षण के कारण कक्षा में आयोजित की जाती है।'' – सूर्य सिद्धांत, 400-500 ईस्वी, प्राचीन हिन्दू खगोलशास्त्री भास्कराचार्य में कहा गया है इन पंक्तियों दिनांकित। लगभग 1200 साल बाद (1687 ईस्वी), सर आइजैक न्यूटन इस घटना को फिर से खोज और यह गुरुत्व के कानून कहा जाता है।

यहाँ इतने अधिक तथ्यों और अवधारण है वेद पुराणों जो दावा है कि सनातन धर्म आज की तकनीक से अधिक अग्रिम था, लेकिन उन्हें कैसे यह ज्ञान मिला है और क्या कारण है कि यह समय के साथ गायब हो गया है।

शोधकर्ता के अनुसार महाभारत युद्ध प्रकृति में परमाणु और उन सभी दिव्यअश्त्र और शास्त्र (परमाणु हथियार) का उपयोग किया गया था, न केवल दुनिया की आबादी का एक बड़ा हिस्सा है, लेकिन प्रौद्योगिकी और सभ्यता प्रगति जो कि मानव जाति ने उस समय तक हासिल की थी का अंत हो गया।

हमें और अधिक शोध करने और मानव जीवन की बेहतरी के लिए सनातन ज्ञान और प्रौद्योगिकियों का पता लगाने के लिए अध्ययन करने की जरूरत है।

संस्कृत में अवसर और प्रमुख संस्कृत शिक्षण संस्थान

लक्ष्मण सिंह
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग

प्रिय भद्रजनों जैसा कि आप जानते ही हैं कि भारत देश में संस्कृतभाषा का अध्ययन और अध्यापन प्राचीनकाल से होता रहा है, इसके विपुल साहित्य भण्डार में भारत की सभ्यता और संस्कृति की विरासत का समृद्ध रूप निहित है। संस्कृत ऐसी प्राचीनतम भाषा के गौरव को धारण करती है, जिसमें लिखित साहित्य प्राप्त होता है। वर्तमान समय में संस्कृत तेजी से आम लोगों के बीच एक लोकप्रिय भाषा बन रही है। संस्कृत भारत की संसद के उच्च सदन राज्यसभा में प्रयोग की जाने वाली भारतीय भाषाओं में पांचवें स्थान की भाषा है भारत के साथ साथ विश्व भर में संस्कृत भाषा का उत्साह के साथ स्वागत किया जा रहा है, जर्मनी में संस्कृत भाषा की भारी मांग को पूरा करने के लिए हीडलबर्ग विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया संस्थान ने संस्कृत और इंडोलॉजी पाठ्यक्रम नये पाठ्यक्रम को प्रारम्भ किया है, स्विट्जरलैंड, इटली और अमेरिका में स्पोकन संस्कृत के लिए ग्रीष्मकालीन स्कूल शुरू किये गये हैं । हमें अपनी जीवन यात्रा में स्वरूचि अनुसार पथ का निर्धारण करना चाहिये । जब हमारा लक्ष्य तय हो कि हमें किस क्षेत्र में जाना है, उस क्षेत्र के अनुसार हमें सज्जता करनी चाहिए। यदि आप संस्कृत को आधारित करके अपना भविष्य बनाना चाहते हैं तो प्रिय छात्र और अभिभावकों हमें अनिवार्य विषय के रूप में कक्षा छठी से आठवीं तक संस्कृत पढने के बाद नवीं कक्षा में निरंतर पढने का निर्णय करना चाहिये, माध्यमिक कक्षाओं में संस्कृत अध्ययन के अवसर से वञ्चित छात्र स्नातक स्तर से संस्कृत अध्ययन प्रारम्भ करके भी आपने भविष्य निर्माण कर सकते हैं, अनेकों जनों के द्वारा स्वीकृत और अधीत समस्त संसार में आदर के साथ व्यवहृत संस्कृत भाषा के अध्ययन हेतु भारत के संस्कृत शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदत्त अनेक प्रकार के संस्कृत पाठ्यक्रमों में अध्ययन करके असीमित क्षेत्रों में छात्र अपना भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं, अपने सपनों को संस्कृत के माध्यम से पूर्ण करने के लिये छात्र चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर प्रदेश, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी उत्तर प्रदेश, जगद्गुरु रामानंदाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा बिहार, कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय बेंगलुरु कर्नाटक, कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय नागपुर महाराष्ट्र , कुमार भास्करवर्मा संस्कृत और प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय नलबाड़ी असम, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन मध्यप्रदेश, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति आन्ध्रप्रदेश, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय एर्नाकुलम केरल, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय जगन्नाथ पुरी उडीसा और श्री लालबहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली इत्यादि भारत के प्रमुख संस्कृत शिक्षा संस्थानों में प्रवेश हेतु प्रवेश प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का पालन करते हुये प्रवेश ले सकते हैं, आपको सबसे पहले अपनी पसंद के क्षेत्र में पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने वाले संस्थानों में से अपने लिये सर्वाधिक उपयुक्त उस संस्थान का चयन करना होगा जिसमें आप अध्ययन करना चाहते हैं । चयनित संस्थान में निर्धारित पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, सीटों की उपलब्धता तथा पाठ्यक्रम की फीस की जानकारी आपको आवेदन करने से पहले संस्थान द्वारा प्रदत्त विवरणिका को पढ़कर अवश्य कर लेनी चाहिये । विवरणिका को पढ़कर संस्थान द्वारा अपेक्षित मानदंडों को पूर्ण करने पर आवेदन करके प्रवेश पाकर आप अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं। स्नातक, स्नातकोत्तर, पीएचडी और पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रमों में प्रवेश या तो पूर्व कक्षा में प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर या प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिया जाता है ।

भारत के शिक्षा संस्थानों द्वारा उपलब्ध पूर्व मध्यमा ,उत्तर मध्यमा , शास्त्री,आचार्य, बीए, एमए, विद्यावारिधि, विद्यावाचस्पति, शिक्षाशास्त्र और शिक्षाचार्य इत्यादि पाठ्यक्रमों में संस्कृत अध्ययन करके छात्र भारत की प्रतिष्ठित सेवा

भारतीय प्रशासनिक सेवा में सम्मिलित और चयनित होकर देश सेवा कर सकते हैं, राज्यों के द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय परीक्षाओं में सम्मिलित और चयनित होकर राज्य की प्रशासनिक सेवाओं में अपना योगदान दे सकते हैं, भारतीय सेना में धर्मगुरु की पदवी को अलंकृत कर सकते हैं, प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक बन सकते हैं, व्याख्याता बन सकते हैं, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में सहायक–आचार्य बन सकते हैं, सह–आचार्य बन सकते हैं, आचार्य बन सकते हैं, अनुवादक बन सकते हैं, लेखक बन सकते हैं, कवि बन सकते हैं, अनुसंधान सहायक बन सकते हैं, योग शिक्षक बन सकते हैं, पत्रकार बन सकते हैं, सम्पादक बन सकते हैं, लिपिक बन सकते हैं, वास्तु सलाहकार बन सकते हैं, ज्योतिषी बन सकते हैं, निजी एंव सामाजिक क्षेत्र में लेखक बन सकते हैं, पुरोहित बन सकते हैं, कथा प्रवाचक उपदेशक बन सकते हैं तथा अन्य भी क्षेत्रों में अपना भविष्य निर्माण कर सकते हैं । इस प्रकार हम कह सकते हैं कि –संस्कृत के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध अपनी रूचि के विषय का चयन करके आप अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयत्न करके मनोवाञ्छित सफलता प्राप्त कर सकोगे तथा जीवन को सुगमता पूर्वक जीने के लिये निरंतर कठिन परिश्रम करके अपनी वृत्ति सुनिश्चित करके अपने जीवन में संस्कृत में निहित मानवीय गुणों का आधान करके मानवता की सेवा में अपना योगदान दे सकोगे । आप संस्कृत अध्ययन हेतु youtube पर ccsusanskrit चैनल का तथा संस्कृत विषय से सम्बंधित महत्वपूर्ण निम्न लिंकों प्रयोग कर सकते हैं–

http://sanskritshodh.org,
http://www.sanskrit.nic.in,
http://www.bhu.ac.in/sanskrit,
https://www.samskritpromotion.in

खूबियाँ हैं हम सबमें

लक्ष्मण सिंह
कनिष्ठ सहायक

जंगल का राजा शेर युद्ध की तैयारी कर रहा था। उसने जंगल के सभी जानवरों की एक सभा बुलाई। हाथी, हिरन, खरगोश, घोड़ा, गधा, भालू, बन्दर सभी आए। राजा शेर ने सबको उनके काम सौंप दिए। केवल खरगोश और गधे को काम देना बाकी था। शेष जानवर बोले, "महाराज ! आप अपनी सेना में गधे और खरगोश को शामिल मत कीजिए।" "लेकिन क्यों ?शेर ने पूछा।

तब सभी जानवरों की तरफ से हाथी खड़ा हुआ और बोला, "महाराज ! गधा इतना मूर्ख है कि वह हमारे किसी काम का नहीं है, युद्ध के समय बुद्धिमान व्यक्ति की जरूरत होती है।"

फिर भालू बोला, "और महाराज ! यह खरगोश तो इतना डरपोक है कि मेरी परछाई से भी डरकर भाग जाता है। डरपोक व्यक्ति का युद्ध में क्या काम ?"

अब शेर बोला, "भाईयों ! आपने गधे और खरगोश की कमजोरियाँ तो देख लीं, लेकिन क्या आपने उनकी खूबियों पर भी ध्यान दिया ?"

"हाँ खूबियाँ, देखिए गधा इतनी तेज आवाज में चिल्ला सकता है कि मेरी दहाड़ भी उसके सामने हल्की लगेगी और खरगोश के जितना फुर्तीला क्या कोई और है?इसलिए मैं गधे को उद्घोषक बनाता हूँ और खरगोश को सन्देशवाहक। हर किसी के अन्दर कोई–न–कोई खूबी जरूर होती है। बस जरूरत होती है तो उसे ढूँढ़ने की।"

आलोचक

सुनील कुमार गर्ग
कार्यालय अधीक्षक

हमारा देश मँहगाई से जूझ रहा है, इन कठिन परिस्थितियों में भी कुछ ऐसी नियामतें ऊपर वाले ने हमें बख्शीश में दी हैं जिनको पाकर हम और हमारा देश धन्य है। उनमें से नं०–1 मुफ्त सलाहकार, नं०–2 मुफ्त आलोचक, नं०–3 मुफ्त नीम हकीम इत्यादि। आज मैं आलोचक जी के क्रिया कलापों से दो चार होने की हिम्मत जुटा रही हूँ। एक बार की बात है एक व्यक्ति घरेलू सामान की खरीदारी करने के लिए अपने लड़के के साथ घोड़ी लेकर बाजार की तरफ चला, उस आदमी ने अपने बेटे को घोड़ी पर बिठा दिया और खुद पीछे–पीछे चलने लगा। सामने से आलोचक जी का पदार्पण होता है। वह कुछ मुंह विदका कर बोले, क्या जमाना आ गया है शर्म लिहाज को तो लोग नाश्ते में खा गये। वृद्ध बाप बेचारा पैदल घसीट रहा और लड़का तुरंग की सवारी कर रहा है। उनकी सारगर्भित मनो व्यथा भांप कर वृद्ध ने लड़के को नीचे उतार दिया और खुद घोड़ी पर बैठकर चलने लगा। लड़का पीछे–पीछे चलने लगा, कुछ ही दूर चले होंगे कि द्वितीय आलोचक महोदय सामने से प्रगट हो गये उन्हें देख वृद्ध ने राम–राम की आलोचक जी बोले, वह तो ठीक है, पर यह बताओ क्या तुम्हारी नजर का पानी मर गया है, गैरत घोल कर पी गये हो तुम्हारे हृदय की करूणा मर गई है, जो इस बालक को पैदल दौड़ा रहे हो खुद महाराणा प्रताप की तरह तनकर बैठे चेतक की सवारी कर रहे हो। वृद्ध को बहुत क्रोध आया लेकिन वह गुस्से को शरवत की तरह पी गया और आगे बढ़कर अपने लड़के को भी घोड़ी पर बिठा लिया और चलने लगा तथा इधर–उधर देखता जा रहा कि कहीं कोई और महाशय जी न मिल जाये तभी पेड़ों के झुरमुट में से एक बड़ी–बड़ी मूंछों वाले श्रीमान् जी सामने आगये और लाल–लाल आँखें कर गर्जना करते हुए बोले कि तुम इंसान नहीं निर्दयी हो तुमको बेजुवानों के प्रति रहम नहीं आता। एक घोड़ी पर दो–दो बैठकर जा रहे हो। पशुक्रूरता अधिनियम के तहत जेल जाना चाहते हो। वृद्ध डर गया और हाथ जोड़कर क्षमा याचना करने लगा खैर आलोचक जी को दया आ गई और नसीहत देकर आगे बढ़ गये। बाजार अभी थोड़ी दूर थी सो वृद्ध व लड़का घोड़ी को पकड़कर दोनों पैदल–पैदल चलने लगे कुछ ही दूर गये होंगे कि फिर एक आलोचक जी से सामना हो गया। पास आते ही वह बड़ी जोर–जोर से हंसने लगे। वृद्ध ने रूक कर पूछा भाई साहब आप हँस क्यों रहे हैं आलोचक जी ने कहा मैं करीब 50 साल का हो गया हूँ पर आज तक तुम्हारे जैसा मूर्ख जीवन में पहली बार देख रहा हूँ, घोड़ी साथ में और दोनों पैदल जा रहे हो। अरे अकलमन्दों कम से कम एक आदमी तो घोड़ी पर बैठ लो। यह सुनकर वृद्ध बिना कुछ बोले बाजार की तरफ चला गया। बाजार से सामान खरीदकर जब वापस घर को चला तो बुड्ढे का मन भयभीत हो रहा था कि कहीं फिर से किसी आलोचक जी से सामना न हो जाये, लड़का बोला पिताजी अब बिल्कुल मत घबराइये। इन लोगों से मैं बात करूँगा "लातों के देव बातों से नहीं मानते" लड़का घोड़ी पर बैठ गया तथा सामान की गठरी अपने सिर पर रख ली और चल दिया। कुछ दूर चलने पर एक पहले की तरह एक भाई साहब ने टोका, कहा कि घोड़ी पर बैठै हो और गठरी अपने सिर पर क्यों रखे हो इसे घोड़ी की पीठ पर रख लो, लड़का गुस्से से झुंझलाकर बोला क्या अंधे हो तुम्हे दिखाई नहीं देता कि घोड़ी 2–4 दिन में बच्चा देने वाली है। उसका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है, कमजोर भी है। आया नसीहत देने गठरी घोड़ी पर क्यों नहीं रख लेते। जाइये अपने काम से काम रखो। दूसरे के कामों में टांग नहीं अड़ाते। उसे धमका कर वह दोनों वापस घर आ गये। रास्ते में उन्हें किसी ने नहीं टोका।

कथा का सारांश है कि कोई व्यक्ति किसी कार्य को कितनी ही कुशलतापूर्वक सम्पन्न क्यों न करे लेकिन इस समाज में कैंसर की बीमारी की तरह व्याप्त आलोचक महोदय किसी न किसी तरह त्रुटि निकाल ही लेंगे और आपका रास्ता हर समय विवादास्पद बनाते रहेंगे। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह इन धूर्तों की परवाह किए बिना अपना कार्य धैर्य, लग्न व निष्ठापूर्वक सम्पन्न करें। कौन हमारे कार्य से खुश है कौन नाराज इसकी चिन्ता किए बिना।

पर्यावरण– विधि व न्याय

अनिल कुमार अग्रवाल
कनिष्ठ सहायक

वर्तमान आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एवं राष्ट्रीय वृद्धि को बढ़ाने के लिए प्रकृति द्वारा प्रदान किये गये संसाधनों, वन सम्पदा, खनिज सम्पदा एवं जल–संसाधनों का भारत सहित विश्व के अन्य देशों में लगातार अपछय किया जा रहा है। इससे पर्यावरण को नुकसान तो पहुँच ही रहा है साथ ही परिस्थितिय संतुलन पर भी प्रतिकूल असर पड़ रहा है। ऐसे में जीव–जन्तु एवं पेड़–पौधों के साथ–साथ मानव अस्तित्व भी खतरे में है। किसी भी देश में प्रदूषण की रोकथाम तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सबसे बेहतर उपाय है कि पर्यावरण सम्बन्धी पारम्परिक कानूनों एवं आधुनिक कानूनों को सम्मिलित करके एक बेहतर कानून का निर्माण किया जाये।

भारत में पर्यावरण संरक्षण एवं लोगों के वन सम्बन्धी अधिकारों के सम्बन्ध में सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन काल में वनाधिकार अधिनियम 1927 में लाया गया परन्तु इसमें वन संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्य नहीं थे बल्कि ब्रिटिश शासन के द्वारा अपने उपयोग के लिए वन सम्पदा का संरक्षण करना था।

आजाद भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए विधि के अन्तर्गत अनेक अधिनियमों का निर्माण किया गया। भारत के संविधान के भाग–4 में राज्य के नीति–निर्देशक सिद्धान्तों का वर्णन है। इसी का अनुच्छेद 48–क कहता है कि राज्य का यह प्रयास होगा कि वह पर्यावरण की रक्षा और सुरक्षा करें तथा वनों एवं वन्य जीवों को संरक्षण प्रदान करें।

नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों के तहत अनुच्छेद 51–क में वर्णित है कि प्रत्येक नागरिक को जंगल, झीलें, नदियों व वन्य जीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार करते हुए प्रत्येक जीव के प्रति करुणा रखनी चाहिए।

संविधान का अनुच्छेद–21 जो नागरिकों को जीवन का अधिकार देता है, जैव विविधता संरक्षण व पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रभावशाली कदम रहा है।

संविधान के प्रावधानों के अन्तर्गत पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी निम्न अधिनियमों का महत्वपूर्ण स्थान विधि में निहित है। कुछ प्रमुख अधिनियम निम्नवत हैं–

1. भारतीय वन अधिनियम 1927
2. वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972
3. जल प्रदूषण अधिनियम 1977
4. वायु प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम 1981
5. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986
6. खतरनाक अपशिष्ट पदार्थ निष्पादन अधिनियम 1989
7. राष्ट्रीय वन नीति 1988

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा समय–समय पर पर्यावरण मामलों में जनहित याचिकाओं द्वारा उठाये गये बिन्दुओं पर दिये गये निर्णयों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण को महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की गई।

वर्तमान परिवेश में पृथ्वी को कई अन्य प्रकार के प्रदूषणों, रसायनिक प्रक्रियाओं एवं ऊर्जा के प्रमुख स्रोत नाभिकीय ऊर्जा के अत्यधिक प्रयोग के फलस्वरूप उत्पन्न हानिकारक अपशिष्ट पदार्थों के निस्तारण, वन्य जीवों के संरक्षण व उनके दुरूपयोग को रोकने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक संगठनों के गठन व उनके निर्णयों के द्वारा मानव जीवन के साथ–साथ प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के लिए विधिक रूप से प्रयास किये जा रहे हैं।जो मिट जाये

कोरोना वायरस

डॉ. जागृति सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
रसायन विज्ञान विभाग

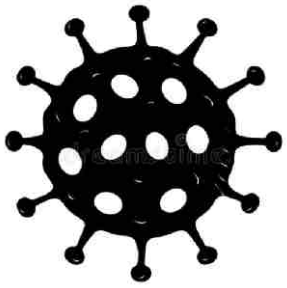

प्रस्तावना:- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कोरोना वायरस को महामारी घोषित कर दिया है। कोरोना वायरस बहुत सूक्ष्म लेकिन प्रभावी वायरस है। कोरोना वायरस मानव के बाल की तुलना से 900 गुना छोटा है लेकिन कोरोना का संक्रमण दुनियाभर में तेजी से फैल रहा है।

कोरोना वायरस क्या है?

कोरोना वायरस (सीओवी) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसम्बर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। WHO के मुताबिक, बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है।

इस संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाम बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है। यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। यह वायरस दिसम्बर में सबसे पहले पकड़ में आया था।

क्या है इस बीमारी के कारण

कोविड-19 कोरोना वायरस में पहले बुखार आता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है। इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गम्भीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उन लोगों को ज्यादा खतरा है।

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के जरिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड-19 नाम का यह वायरस अब तक 70 से ज्यादा देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते खतरे को देखते हुए सावधानी बरतने की जरुरत है ताकि इसे फैलने से रोका जा सके।

कोरोना वायरस का संक्रमण हो जाए तब?

- इस समय कोरोना वायरस का कोई इलाज नहीं है लेकिन इसमें बीमारी के लक्षण कम होने वाली दवाइयां दी जा सकती हैं।
- जब तक आप ठीक न हो जाएं, तब तक आप दूसरे से अलग रहे।
- कोरोना वायरस के इलाज के लिए वैक्सीन विकसित करने पर काम चल रहा है।
- इस साल के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जायेगा।
- कुद अस्पताल एंटीवायरल दवा का भी परीक्षण कर रहे हैं।

क्या हैं इसके बचाव के उपाय

- स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं।
- इसके मुताबिक साबुन से हाथों को धोएं।
- अल्कोहल आधारित हैंउ रब का इस्तेमाल भी किया जा सकता है।
- खाँसते और छींकते समय नाम और मुँह रुमाल या टिश्यू पेपर से ढंककर रखें।
- जिन व्यक्तियों को कोल्ड या फ्लू के लक्षण हो, उनसे दूरी बनाकर रखे।
- अंडे और मांस के सेवन से बचें।
- जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

मास्क कौन पहने और कैसे?

- अगर आप स्वस्थ हैं तो आपको मास्क की जरुरत नहीं है।
- अगर आप किसी कोरोना वायरस से संक्रमित व्यक्ति की देखभाल कर रहे हैं, तो आपको मास्क पहनना होगा।
- जिन लोगों को बुखार, कफ या सांस लेने में तकलीफ की शिकायत है, उन्हें मास्क पहनना चाहिए और तुरन्त डाक्टर के पास जाना चाहिए।

मास्क पहनने का तरीका

- मास्क पर सामने से हाथ नहीं लगाना चाहिए।
- अगर हाथ लग जाए तो तुरन्त धो लेना चाहिए।

मस्तिष्क उद्वेलन

डॉ0 के.सी.गौड़
अध्यक्ष, शिक्षा संकाय

मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming) :-

शिक्षण में सृजनाशीलता की महत्वपूर्ण भूमिका है। बालकों में सृजनशीलता विकसित करने के लिए मस्तिष्क उद्वेलन विधि एक उत्तम विधि के रूप में उभर कर आयी है। इस शिक्षण विधि का प्रारूप समस्या केन्द्रित होता है इसमें बालकों की किसी समस्या पर वाद-विवाद करने को कहा जाता है। इसके अन्तर्गत बालकों को एक समस्या दे दी जाती है, जिसे वे सामूहिक रूप से हल कर सकते हैं। इससे उनके विचारों में गुणवत्ता आती है। नवीन विचारों को पोषित करने की दृष्टि से आसवर्न ने इस विधि को 1963 में विकसित किया था। इसके अन्तर्गत बालकों को जो समस्या दी जाती है उस पर उन्हें वाद-विवाद करने को कहा जाता है। वाद-विवाद के अन्तर्गत उन्हें उनके मास्तिष्क में आये हुए विचारों को स्वतन्त्र रूप से प्रकट करने को कहा जाता है। इस विधि के द्वारा समूह गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है। इस समूह के द्वारा ही उस समस्या का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाता है।

मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming) का अर्थ शिक्षण में उन साधनों व सामग्री के प्रयोग से होता है जो छात्रों क मस्तिष्क में ज्ञान प्राप्ति हेतु हलचल मचा देते हैं। इस प्रकार यह शिक्षण व्यूह रचना (Strategy of Teaching) शिक्षक व छात्र के बीच अन्त:क्रिया (Interation) पर विशेष बल देती है।

मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming)

विचारों की गुणवत्ता में सुधार लाने की सबसे प्राचीन विधियों में मस्तिष्क उद्वेलन (Brain Storming) विधि सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। नवीन विचारों को पोषित (Fostering) करने की दृष्टि से ऑस बार्न ने 1963 में इस विधि को विकसित किया था। इस विधि का छोटे बच्चों के समूह पर आसानी से प्रयोग किया जा सकता है। इसमें सर्वप्रथम छात्रों के सम्मुख कोई समस्या प्रस्तुत की जाती है तथा उनकों इस समस्या के समाधान हेतु स्वतन्त्रतापूर्वक व्यक्त करने को कहा जाता है। अन्त में शिक्षक की मदद से किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। इस प्रक्रिया में होने वाली मानसिक क्रियाओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है:-

1. **सृजनात्मक मन (Creative Mind) :-** सृजनात्मक मन का कार्य नवीन विचारों का आविष्कार करना तथा समस्याओं के समाधान हेतु नये तरीकों की खोज करना है।
2. **न्यायिक मन (Judicial Mind) :-** न्यायिक मन का कार्य सृजनात्मक मन में संचरित विचारों की आलोचनात्मक रूप से समीक्षा करना है।

मस्तिष्क उद्वेलन विधि की विशेषताएं
(Characteristics of Brain Storming Method)

मस्तिष्क उद्वेलन की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

1. **समस्या की प्रकृति (Nature of Problem) :-** इस विधि में एक सरल समस्या का चयन किया जाता है जिससे कि चर्चा (Discusion) में सभी छात्रों की भागीदारी सम्भव हो सके।
2. **सामूहिक प्रतियोगिता (Collective Participation) :-** मस्तिष्क उद्वेलन की प्रक्रिया में छात्र सामूहिक रूप से चर्चा में भाग लेते हैं।
3. **उत्तर देने की स्वतन्त्रता (Freedom of Answering) :-** इस प्रक्रिया में छात्रों को अपनी इच्छानुसार प्रतिक्रिया करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है।
4. **विचारों का संशोधन (Modification Of Ideas) :-**

आवश्यकतानुसार विचारों में संशोधन करके उन्हें उपयुक्त बनाया जाता है।

5. **विचारों की श्रृंखला (Chain of Ideas) :-** समूह के विचारों को श्रृंखलाबद्ध करके उद्वेलन प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाया जाता है।

मस्तिष्क उद्वेलन के सोपान (Steps of Brain Storming)

मस्तिष्क उद्वेलन के सोपान निम्नलिखित हैं:-

1. **समस्या का चयन (Sellection of Probles) :-** समस्या सरल तथा विशिष्ट होनी चाहिए। बच्चों के मानसिक तथा शैक्षिक स्तर की होनी चाहिए।
2. **उपसमस्याओं का निर्धारण (Determinations of Sub Problem) :-** उन उपसमस्याओं की जानकारी करते हैं जो मुख्य समस्या से सम्बन्धित है।
3. **सम्भावित समाधान (Hypothetical Solutions) :-** समस्या के समाधान से सम्बन्धित विचारों के द्वारा सम्भावित हल खोजने का प्रयास करते हैं।
4. **साधनों का चयन (Sellection of Means) :-** समस्या से सम्बन्धित आँकड़ों को एकत्र करने के साधनों का चयन करते हैं।
5. **आँकड़ा का संकलन (Collection of Data) :-** उक्त साधनों का उपयोग करके सम्बन्धित आँकड़ों को एकत्र करते हैं।
6. **विचारों की चर्चा (Discussion of Ideas):-** समस्या समाधान के लिए समूह में विचार आमन्त्रित करते हैं।
7. **प्रोत्साहन तथा प्रशंसा (Encouragement & Appreciation) :-** छात्रों की ओर से अधिक से अधिक विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा उनके द्वारा की गयी अनुक्रियाओं की प्रशंसा करते हैं।

मस्तिष्क उद्वेलन के उपयोग (Uses of Brain Storming)

मस्तिष्क उद्वेलन के उपयोग निम्नलिखित हैं:-

(i) यह छात्रों की समस्या समाधान हेतु आकृष्ट तथा उत्तेजित करता है।

(ii) समस्या समाधान हेतु छात्रों में कल्पना-शक्ति का विकास होता है।

(iii) स्वतन्त्रतापूर्वक विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

(iv) बिना किसी भय व चिन्ता के छात्र समस्या के समाधान में रूचि लेते हैं।

(v) यह समस्या समाधान के नवीन आयामों की खोज करने में सहायक है।

(vi) इस विधि से समस्या समाधान करने में छात्र आनन्द व सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं।

(vii) मस्तिष्क उद्वेलन शिक्षण की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि मस्तिष्क-उद्वेलन विधि शिक्षण-मनोविज्ञान की एक सशक्त विधि है जो बालक को किसी भी समाधान हेतु सरलता से प्रेरित करती है। इसके माध्यम से बालकों में चिन्तन, मनन व विचार-मंथन की क्षमता की वृद्धि होती है उसकी मानसिक शक्ति दृढ़ होती है। अधिगम में सबलता आती है। अध्यापकों को चाहिए कि कक्षा-कक्ष परिस्थिति में समय-समय पर मस्तिष्क उद्वेलन विधि का प्रयोग करते रहें जिससे बालकों में विचार विमर्श तर्क-वितर्क, तथा सृजनात्मक क्षमताओं का विकास अधिक से अधिक हो सके इसके द्वारा छात्रों में सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना, सहयोग की भावना इत्यादि का विकास भी होता है।

इस प्रविधि के द्वारा बालकों में ज्ञानात्मक शक्ति विकसित होती है वे किसी भी समस्या की तह तक जाने (निष्कर्ष प्राप्त करने) हेतु तत्पर रहते हैं। इस व्यूह-रचना के माध्यम से छात्र शिक्षक के मध्य अन्त:क्रिया भी दृढ़ होती है। छात्र स्वतन्त्र रूप से तर्क-वितर्क करते हैं। यह प्रविधि ज्ञान प्राप्ति में तो सहायक है ही साथ ही वाद-विवाद, तर्क-वितर्क इत्यादि के माध्यम से समस्या की सार्थकता की भी जॉच की जाती है।

करती है हल सदा समस्या
मस्तिष्क उद्वेलन की विधि।
शिक्षण में यह है सहायिका
मनोविज्ञान की उत्तम-निधि।।

तय हों प्राथमिकताएं

डॉ. राजीव कुमार गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय

आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं, आप किन कार्यों की सर्वाधिक महत्व देते हैं? इस सवाल का जवाब अधिकतर लोगों के पास नहीं होता, पर आपकी सफलता या प्रगति का आधार यही है कि आप अपनी प्राथमिकताएं जानते हैं। जब आप अपनी प्राथमिकताओं को तय नहीं करेंगे, इसे लेकर कोताही बरतेंगे तो इसका अर्थ है कि आप समय की कीमत नहीं समझते। लोग कह देते हैं कि समय नहीं है। मुझे हैरानी होती है। अरे, जब हम इतने सारे तकनीकी साधनों से घिरे रहते हैं। उनकी बदौलत हमारा काम चुटकियों में संभव है तो लोगों के पास समय बचता क्यों नहीं! पर राज की बात तो यह है कि वे लोग ही ज्यादातर कहेंगे कि हमारे पास समय नहीं, जिन्हें नहीं मालूम कि उन्हें करना क्या है। प्राथमिकताएं क्या हैं उनकी। आपको यह पता होना चाहिए कि समय कहीं आता-जाता नहीं है, बल्कि वह अपनी जगह हमेशा स्थिर है। वह हम हैं, जिन्हें मालूम होना चाहिए कि समय का करना क्या है और कैसे करना है। जो कहते हैं समय नहीं है, वे एक और बात कहते हैं। समय उड़ जाता है, पंख लगाकर जाने कहां उड़कर गायब हो जाता है, पर जरा सोचिए, अगर समय उड़ रहा है तो क्या समय कोई हवाई जहाज है? और यदि समय वास्तव में एक हवाई जहाज भी है तो फिर, इसका पायलट कौन है?

मैं कहूँगा कि अगर हम अपनी प्राथमिकताएं पहले से निर्धारित नहीं करते हैं तो हम केवल उस हवाई जहाज के एक यात्री भर रह जाते हैं और पायलट कोई और व्यक्ति बन जाता है। ध्यान रहे, यदि प्राथमिकताएं तय नहीं कर सकते तो आप समय प्रबंधन भी नहीं कर सकते हैं।

यूं तय करें अपनी प्राथमिकताएं.....

- जो काम करना चाहते हैं, उन्हें एक जगह एकत्रित करें। उनकी सूची बनाएं।
- अर्जेन्ट यानी बहुत जरुरी और महत्वपूर्ण कामों को पहचाने।
- आपके काम का मूल्य, उसका महत्व क्या है, यह भी देखें।
- जो पहले करना है और जिन्हें बाद में, उन्हें क्रमानुसार सजा लें।
- अपनी प्राथमिकताओं में समयानुसार बदलाव करना पड़े तो करना चाहिए।

उम्मीदों के अनुरूप संतुलित बजट

डॉ. विशाल शर्मा
असि० प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय

सोमवार को पेश हुआ आम बजट वादों और अपेक्षाओं पर खरा उतरा। यह सदियों में एक बार दस्तक देने वाली आपदा से निपटने में दृढ़ता दर्शाने वाला दस्तावेज है। शेयर बाजार ने उसे सलामी दी और उसमें रिकॉर्ड तेजी जारी है। उद्योग संस्थाओं और अर्थशास्त्रियों ने भी शुरुआती प्रतिक्रिया में बजट को सराहा है। हालांकि विपक्षी नेताओं द्वारा त्वरित आधार पर बजट को खारिज करने पर हैरानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि उनकी सोच में बजट की गुणवत्ता के बजाय इस दौर की राजनीतिक विडंबना अधिक प्रतिबिंबित होती है। बजट को लेकर कोई भी निष्पक्ष विश्लेषक यही कहेगा कि वित्त मंत्री ने वही किया जो विशेषज्ञों ने सुझाया। इसमें तात्कालिक एजेंडा यही था कि महामारी से निपटने के साथ-साथ कोरोना के कारण अर्थव्यवस्था को हुई क्षति की पूर्ति की जाए। ऐसे में सरकार से तीन प्रमुख अपेक्षाएं थीं। पहली यह कि कोरोना के कोप से बाहर निकला जाए। दूसरी यह कि मानव पूंजी में निवेश बढ़ाया जाए और तीसरी यह कि बुनियादी ढांचे को उन्नत बनाकर रोजगार सृजन और आर्थिक कायाकल्प के लिए मांग को बढ़ावा दिया जाए।

बीते एक वर्ष के दौरान महामारी से निपटने के हमारे प्रयासों को दुनिया ने संशय से लेकर अविश्वास और अब कुछ हिचक के साथ प्रशंसाभाव से देखा है। क्या हमने विकसित देशों से बेहतर किया? निश्चित रूप से। बजट में भी टीकाकरण के लिए सरकार द्वारा 35,000 करोड़ रूपये का प्रावधान उसकी उसी प्रतिबद्धता को ही दर्शाता है कि वह किसी गड़बड़ी के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ना चाहती। इसमें संदेह नहीं कि चाहे कोई भी सरकार हो, लोगों के जीवन की रक्षा सदैव ही उसकी सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। हमारी 130 करोड़ की जनसंख्या में दुनिया की सबसे युवा आबादी है और यह हम पर निर्भर करता है कि वह हमारे लिए वरदान बने या अभिशाप। लम्बे अर्से से चर्चा होती आई है कि हमें अपने मानव संसाधन का उन्नयन करना होगा और सामाजिक सुरक्षा पर खर्च में वृद्धि करनी होगी। इस बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र को 2.23 लाख करोड़ रुपये दिए गए हैं, जो गत वर्ष से 137 प्रतिशत अधिक है। यह जीडीपी के 1.8 प्रतिशत के बराबर है। स्वास्थ्य में यह अभी तक का सबसे बड़ा आवंटन है। कोरोना के अलावा निमोकोकल वैक्सीन का टीकाकरण भी किया जाएगा। पोषण पर जोर, बीमारी से बचाव और उपचार पर ध्यान देने से ही हमारे स्वास्थ्य संबंधी मानक सुधरेंगे।

किसी समाज के उत्थान में शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है। तीन दशक बाद गत वर्ष ही देश को नई शिक्षा नीति मिली है। उसे सहारा देने के लिए वित्त मंत्री ने शिक्षा के लिए जीडीपी का 3.5 प्रतिशत आवंटन किया है, जो पिछले वर्ष जीडीपी का तीन प्रतिशत था। इस दिशा में 15,000 आदर्श विद्यालयों की स्थापना और अगले पांच वर्षों के दौरान 50,000 करोड़ रुपये की राशि से राष्ट्रीय शोध प्रतिष्ठान को लेकर दिखाई गई प्रतिबद्धता से हमारे हितों की पूर्ति होनी चाहिए।

कोविड के बाद अर्थव्यवस्था मांग की कमी से जूझ रही है। लोगों के हाथ में पैसा पहुंचाना ही मांग बढ़ाने का सबसे प्रभावी तरीका

है। हम सार्वभौमिक आय हस्तांतरण जैसी योजना का बोझ नहीं उठा सकते। ऐसे में सरकार ने बुनियादी ढांचे पर खुले हाथों से खर्च करने का फैसला किया है। इसमें राजमार्ग मंत्रालय के लिए 1.20 लाख करोड़ रुपये और रेलवे के लिए 1.10 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। वहीं अगर समग्र पूँजीगत व्यय की बात करें तो उसके लिए 5.54 लाख करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इससे विकास के लिए आधार तैयार होने के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों पर अनुकूल प्रभाव पड़ने और रोजगार सृजन जैसे अवश्यंभावी लाभ होने तय हैं। रक्षा सरीखे महत्वपूर्ण क्षेत्र के लिए भी बजट में अच्छा-खासा आवंटन हुआ है। उसके लिए 4.78 लाख करोड़ रुपये की व्यवस्था भले ही बहुत अधिक बढ़ोतरी न हो, लेकिन उसमें पूंजीगत व्यय के लिए रिकॉर्ड 19 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ 1.35 लाख करोड़ दिए गए हैं जिससे रक्षा आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिलेगा।

क्या यह बजट सभी समस्याओं का निदान है? इस सत्य की अनदेखी नहीं की जा सकती कि सामाजिक क्षेत्र में भारी खर्च के बावजूद विकसित देशों और हमारी आबादी के अनुपात में यह अपर्याप्त है। मिसाल के तौर पर नॉर्वे अपने जीडीपी का 6.4 प्रतिशत शिक्षा पर और अमेरिका अपने जीडीपी का करीब 17 प्रतिशत स्वास्थ्य पर खर्च करता है। ऐसे में मानव विकास सूचकांक और विश्व नवाचार सूचकांक जैसी सूचियों के शीर्ष में आने के लिए हमें लंबा सफर तय करना है। वास्तव में अभी भी कई पहलू ऐसे हैं जहां हम अपनी क्षमता से कम दांव लगा रहे हैं। जैसे कि विनिवेश। इसके लिए पिछले वर्ष के 2.1 लाख करोड़ रुपये के लक्ष्य को घटाकर इस बजट में 1.75 लाख करोड़ रुपये किया गया है। अतीत में इस मोर्चे पर हमारी असफलता को देखते हुए व्यावहारिक दृष्टिकोण से ऐसा किया गया लगता है। हालांकि शेयर बाजार में तेजी के इस दौर में भी यदि हम निर्धारित लक्ष्य से पार नहीं जाते तो यह निराशाजनक होगा। केन्द्र और राज्य सरकारों के पास जिन अनुत्पादक जमीनों का अंबार लगा है, उन्हें भुनाकर उत्पादक कार्यों में लगाया जाना चाहिए।

प्रत्यक्ष करों के साथ कोई छेड़छाड़ न करने को भले ही एक बड़ी राहत के रूप में देखा जा रहा हो, परंतु वास्तविकता यह भी है कि वेतनभोगियों के लिए मानक कटौती में बढ़ोतरी, लाभांश कर और कॉरपोरेट एवं निजी आयकर की सबसे ऊंची दरों के बीच अंतर अभी भी चिंता का विषय है। स्वाभाविक है कि फिलहाल परिस्थितियों के कारण वित्त मंत्री के हाथ बंधे हुए हैं, परंतु वह मध्य वर्ग को भविष्य में राहत देने के संकेत तो दे ही सकती थीं। जैसे कॉरपोरेट कर की दरों में जो कमी सितम्बर 2019 में हुई थी, उसके संकेत कुछ साल पहले उनके पूर्ववर्ती अरुण जेटली ने दे दिए थे। न्याय की राह में परिणाम के साथ धारणा भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है।

यह बजट भले ही संपूर्ण प्रतीत न हो, परंतु पूर्णता तो काल्पनिक होती है। समग्र रूप में यह बजट उपयुक्त है, जिसमें कई स्वागत योग्य विचार हैं। यह एक सुगठित दस्तावेज है, जो हमारी प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करता है। लक्ष्य भले ही दूर हो, लेकिन इसके माध्यम से सही दिशा में आगे बढ़ा गया है। जीवन में किसी भी मोर्चे की भांति यहां भी सफलता विचार में नहीं, बल्कि उसे मूर्त रूप देने में ही निहित होगी।

एक मनोरोग – अहंकार

दीपक कुमार शर्मा
लेखाकार

अहंकार एक मनोरोग–मनोविकार है। इस मनोरोग के रोगी कई प्रकार के होते हैं। किसी को अपने ज्ञान का, किसी को धन ऐश्वर्य का किसी को अपने बल व शक्ति का तथा किसी को अपने रूप सौन्दर्य का अहंकार होता है, और यदि इनके साथ किसी को अधिकार व सत्ता मिल जाये तो फिर तो उसका अहंकार आसमान की बुलंदियों को छूने लगता है।

अहंकारी व्यक्ति अपने समक्ष सब को तुच्छ समझता है। वह यह भूल जाता है कि संसार में तुच्छ कोई नहीं है। सब का अपना–अपना महत्व है। भगवान ने सबको सोच समझकर बनाया है। एक पूरा वर्ष चार ऋतुओं से पूर्ण होता है। यदि कभी एक ऋतु भी अपने गुण के अनुसार न चले तो सृष्टि में हाहाकार मच जाता है। हर ऋतु का अपना महत्व है। यदि वर्षा ऋतु में वर्षा न हो तो सारे जीव जन्तु बिलबिला जाते हैं। यह शरीर और समस्त सृष्टि पाँच तत्वों से बना है – जल, वायु, भूमि, अग्नि और आकाश। यह सभी तत्व महत्वपूर्ण हैं। इसमें से एक का भी अभाव शरीर और सृष्टि में असंतुलन उत्पन्न कर देता है। शरीर अनेक असाध्य बीमारियों का घर बन जाता है।

किन्तु अहंकारी व्यक्ति यह सब जानते हुए भी अपने अहं के मद में सब कुछ भूल जाता है। वह समझता है कि वह स्वयं ही केवल सर्वश्रेष्ठ है और शेष लोग उसे कीड़े मकोड़े की तरह लगते हैं। अपने अहंकार के नशे में वह कोई विरोध सहन नहीं करता। दया, उदारता, स्नेह, संवेदना से उसका दूर–दूर तक वास्ता नहीं रहता। वह दूसरों को अपमानित, प्रताड़ित करने के अवसर खोजता रहता है। अहंकारी व्यक्तियों की प्रजाति अनादि काल से जन्म लेती रही है। रावण महादानी होते हुए भी अहंकार की व्याधि से ग्रसित था। अहंकार ने उसके ज्ञान चक्षुओं को बन्द कर दिया था, और इसी के फलस्वरूप वह राम के देव स्वरूप को नहीं पहचान पाया और उनसे युद्ध कर बैठा।

अहंकार को समझने के लिए मैं एक प्रसंग आपको बताना चाहता हूँ, जो इस प्रकार है–

दिग्विजय के पश्चात भरत (जिनके नाम पर देश का नाम भारत पड़ा) को यह अहंकार हो गया कि मैनें बहुत बड़ा कार्य किया है। उसने सोचा कि कुछ ऐसा किया जाये, जिससे आने वाली पीढ़ियां उसके इस कार्य को जाने, आश्चर्य करे और उसकी प्रशंसा करें।

अहंकारी व्यक्ति का यही चिंतन होता है कि लोग उसके कार्य को देखकर दंग रह जाते हैं और उसकी प्रशंसा करें।

भरत के मन में भी यही भाव जागा। उसने सोचा कि मैं अपना नाम किसी ऐसी जगह अंकित करूँ, जहॉ से वह मिटाया न जा सके तथा मेरा नाम अमर हो जाय, इसके लिए वह ऋषभकूट पर्वत पहुँचा, पर वह यह देखकर दंग रह गया कि वहाँ कोई भी ऐसा स्थान न था जहाँ कोई न कोई नाम न लिखा हो। भरत ने मंत्री से पूछा कि वे असंख्य नाम किनके हैं मंत्री ने कहा कि यह नाम उन लोगों के हैं जिन्होंने आपसे पहले दिग्विजय प्राप्त की है। भरत को झटका लगा– परन्तु अहंकार ने पीछा नहीं छोड़ा। उसने सेनापति से वहाँ अंकित एक नाम को मिटाने और उस जगह अपना नाम लिखने का आदेश दिया। सेनापति ने भरत का नाम अंकित कर दिया तभी एक जोर का अट्टाहस हुआ, और शब्द उभरें – आज तुमने किसी का नाम मिटाकर अपना नाम अंकित किया है। भविष्य में कोई तुम्हारा नाम मिटाकर अपना नाम अंकित कर देगा।

वास्तव में अहंकार अज्ञान का लक्षण है। और अज्ञान का लक्षण है आत्म पहचान का अभाव। जो अपने बारे में नहीं जानता कि मैं कौन हूँ वह अज्ञानी है। वह अपने लिए पहचान बनाता है और पहचान बनाने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है। जो स्वयं को नहीं जानता वही दूसरों को यह बताना चाहता है कि वह कौन है।

अत: इस अहंकार रूपी मनोरोग से स्वयं को बचाये रखो। सब के साथ उदारमन से व्यवहार रखो। किसी का बुरा मत सोचो, किसी को तुच्छ मत समझो। अपने को बड़ा मत समझो – यहाँ सेर को सवा सेर मिलने में देर नहीं लगती। अहंकारी व्यक्तियों के अन्त से सबक लो। अहंकार से बचो और प्रसन्न रहो।

भारत–चीन संबंध

साक्षी चौधरी
बी.एड. (प्रथम वर्ष)

राजनीतिक दृष्टि से संबंधों की दुनिया भी बड़ी अनोखी हुआ करती है। एशिया के दो महान और अत्यंत प्राचीन सभ्यता – संस्कृति वाले देश भारत और चीन अपनी खोई हुई स्वतंत्रता मात्र एक वर्ष के अंतर से पुनः प्राप्त करने में सफल हो पाए थे। भारत का नया जन्म सन् 1947 में हुआ। अपने नए जन्म के लिए दोनों को लगभग समान स्थितियों में लंबा संघर्ष करना पड़ा। चीन जब जापान से जूझ रहा था, तब स्वयं पराधीन और ब्रिटिश सरकार से संघर्षरत होते हुए भी भारत ने चीन की हर प्रकार से सेवा–सहायता की। इतिहास इस बात का गवाह है। फिर भी कुछ महत्वकांक्षी राजनीतिक कारणों से एशिया के इन दो महान देशों में संबंध मधुर न रह सके। इसे न केवल इन दो देशों, बल्कि पूरे एशिया प्रायद्वीप और सारी शान्तिप्रिय मानवता का दुर्भाज्य कहा जाएगा। इस संबंधहीनता ने नए–नए अस्वाभिक समीकरणों को भी जन्म दिया है। चीन जब आधुनिक रूप में उदित हुआ तो सबसे ऊपरी तौर पर हर प्रकार से भारत, चीन और उसकी जनता के प्रति सद्भावना एवं मैत्रीभावना प्रदर्शित की। दोनों देशों के महान नेता पं. जवाहर लाल नेहरु और चाऊ एन लाई एक दूसरे देश की यात्राएं कर, एक – दूसरे की सार्वभौमिक स्वतंत्रता सत्ता और सीमाओं को स्वीकार कर हर स्तर पर संबंधों को सुदृढत्र बनाने की बात कहते रहे। सन् 1953 में जब चाऊ एन लाई भारत आए, तब नेहरु और चाऊ ने पंचशील के उन सिद्धांतों को पुनर्जन्म दिया, जो महात्मा बुद्ध के काल से भारत और पूरे एशिया के आधारभूत आदर्श रहे हैं। बड़े जोर शोर से हिन्दी–चीनी भाई–भाई के नारे लगाए जाते रहे। भारत सच्चे मन से इन नारों का और पंचशील की नीतियों का पालन करता रहा। जबकि चीन इन सबकी आड़ में और ही निहित स्वार्थ छिपा रहा था। इसी की पूर्ति की दिशा में वह भीतर ही–भीतर सक्रिय रहा और तब तक रहा कि जब तक भाई–चारे की पवित्र भावना से प्रेरित होकर भारत ने अपना ही एक हिस्सा तिब्बत चीन को नहीं सौप दिया। चीन वस्तुतः पंचशील और 'भाई–भाई' के नारों की आड़ में तिब्बत तो लेना ही चाहता था, उसने उत्तर–पूर्वी सीमा पर मैकमोहन सीमा रेखा के इधर भी भारतीय भूमि पर अपनी नजरें गड़ा रखी थी। अतः जब उसे तिब्बत मिल गया और वहाँ के धार्मिक नेता दलाई लाभा चीनियों के आतंक से पीड़ित होकर भारत आ गए तो और भी चिढ़कर उसने भारत की उत्तर–पूर्वी सीमा प्रदेश के भीतर कभी झंडे गाड़ने कभी चौकियां बनाने और कभी गलत मानचित्र प्रकाशित करने जैसे विरोधी एवं शत्रुतापूर्ण कार्य आरंभ कर दिए। पंचशील और भाई चारे के नाम पर भारत जब विरोध प्रकट करता, तो उसे एक मानवीय भूल कहकर टाल दिया जाता। पर अंत में सन् 1962 में उसकी भेड़िया–वृत्ति की पोल तब खुल गई जब उसने अचानक भारतीय सीमाओं पर आक्रमण कर हजारों वर्ग मीटर भारतीय प्रदेश पर अपना अधिकार जमा सभी समझौतों और संबंधों की धज्जियां उड़ा दी। तब से लेकर आजतक भारत चीन संबंध सुधर नहीं पाए। छोटी–छोटी बातों पर तनाव होता रहता है। जब तक सीमा – संबंधी मामले नहीं सुलझते जतब तक संबंध भी पूर्ण रूप से सुधर नहीं सकते। भारत से दुश्मनी निभाने के लिए चीन ने पाकिस्तान से दोस्ती की पीछे बढ़ाई औरआज भी बढ़ा रहा है। जिस कश्मीर को पहले वह भारत का भाग मानता था, आज पाकिस्तान के माध्यम से उस पर भी उसने नजर गाड़ रखी है। दो बार भारत पाक युद्ध होने पर भी उसने पाक का ही समर्थन किया। एशियाड के अवसर पर जब अरुणाचल प्रदेश के लोकनर्तक मैदान में आए, तब उनका बहिष्कार कर खेल में राजनीति, घुसेड़ने का भद्दा प्रयास भी चीन ने किया। हाँ राष्ट्रीय–अंर्तराष्ट्रीय मंचों पर वह भारत के विरूद्ध पहे की तरह अपना रूख अपनाए नहीं रखता है। अतः टूटा हुआ दूत स्तर का संबंध फिर से कायम हो जाने के बाद भी भारत–चीन संबंधों को अभी तक संपूर्ण ठीक नहीं कहा जा सकता। प्रयास जारी है परिणाम भविष्य ही बता सकता। चीन की जिस प्रकार की विस्तारवादी नीतियाँ हैं, उनके चलते कभी संबंध पूरी तरह सुधार पाएँगे, कहा नहीं जा सकता। फिर भी राजनीति में असंभव कुछ नहीं होता। आजकल जो लगातार कई तरह के प्रयत्न चल रहे हैं। उनसे संबंध के संपूर्ण सुधार की आशा अवश्य की जा सकती है।

हिम्मत हारे मत बैठो

दीपशिखा गौड़
कक्षा- B.Sc III

जीवन में कुछ करना है, तो मन को मारे मत बैठो,
आगे–आगे बढ़ना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो।
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है,
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता निर्मल रहता है,
पाँव मिलने चलने की खातिर, पाँव पसारे मत बैठो,
आगे – आगे बढ़ना है, तो हिम्मत हारे मत बैठो।
धरती चलती, तारे चलते, चाँद रात भर चलता है,
किरणों का उपहार बाँटने, सूरज रोज निकलता है
हवा चले तो महक बिखेरे, हिम्मत हारे मत बैठो
आगे – आगे बढ़ना है तो मन को मारे मत बैठो।

शिक्षा और सत्संगति

सोमदत्त शर्मा
बी.एड. द्वितीय वर्ष

सत्संगति का मानव जीवन पर बड़ा महत्व है। सत्संगति मानव जीवन का हर प्रकार से कल्याण करती है, जीवन में सुख, प्रसन्नता और उन्नति लाती है। अति प्राचीन काल से ही हमारे पूर्वजों ने सत्संगति के महत्व को जान लिया था, उनकी एक झलक संस्कृत के इस श्लोक मं मिलती है–

जाडयं धियो हरतिसिचति वाचि सत्यम मनोन्नति
दिशति पापमयाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम सत्संगति कथय,
किम् न करोति पुंसाभ।।

अर्थात : सत्संगति मनुष्य की बुद्धि की जड़ता को दूर कर ज्ञान का स्त्रोत बहाती है, वाणी में सत्यता लाती है तथा पाप की भावना दूर करती है। संसार में मानव का मान बढ़ाती है और उसकी कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाती है। बताओ सत्संगति कौ–सा भला नहीं करती ? अर्थात् मनुष्य का सब प्रकार से भला करती है। सत्संगति का अर्थ है–

अच्छी संगति–मनुष्य का कल्याण करने वाली संगति, मनुष्य में सदाचार और विवेक को जागृत करने वाली और उसके तन और मन दोनों को स्वस्थ रखने वाली संगति। अमानवीय व्यवहार सिखाने वाली संगति कुसंगति होती है, जिसमें पड़कर मनुष्य का जीवन बर्बाद हो जाता है।

अब प्रश्न ये है कि सत्संगति मिलती कहॉ से है सत्संगति तीन प्रमुख स्त्रोतों से प्राप्त होती है–

1. श्रेष्ठ ज्ञानी जन और अच्छी प्रेरणादायक पुस्तकों की संगति
2. सत्य की संगति
3. प्रकृति की संगति

हम सब के अन्दर अच्छाई–बुराई, शुभ–अशुभ, सुबुद्धि– कुबुद्धि, देवत्व – असुरत्व सब बीज रूप में विद्यमान हैं।

वेद – पुराण भी ऐसा कहते हैं–

सुमति कुमति सबके उर रहहीं।
नाथ पुराण निगम अस कहहीं।।

अर्थात: ज्ञानवान, श्रेष्ठ जनों और अच्छी प्रेरक पुस्तकों की संगति में मनुष्य के अन्दर को देवत्व एवं सुबुद्धि स्पंदित और विकसित होती है। और बुरे लोगों और अश्लील साहित्य के कुत्सिक विचारों के संग से मनुष्य के अंदर की बुराई या कुबुद्धि स्पंदित होकर विकसित होती है।

ऐसा होने का वैज्ञानिक आधार भौतिक विज्ञाान का अनुनाद का सिद्धान्त है। जिसके अनुसार–यदि समान आवृत्ति की धातु की दो पत्तियाँ, इनमें से एक को कम्पित किया जाये तो दूसरी स्वमं कम्पन करने लगती है।

वैसे भी नीचे की ओर गिरना या पतन बिना प्रया के स्वत: हो जाता हैं जबकि ऊपर चढ़ने में प्रयास करना पड़ता है, जैसे–खेत में फसल उगाने के लिए, किसान को बड़ा परिश्रम करना पड़ता है, परन्तु हानिकारक खरपतवार स्वयं उग आती है, जिसे चतुर किसान उखाड़ कर फेंक देता है। खरपतवार की तरह कुत्सित एवं नकारात्मक विचार हमारे मन में स्वमं प्रवेश कर हमारी बुद्धि को विचलित कर देते हैं। बुद्धि के विचलित होते ही व्यक्ति की सुख शान्ति नष्ट हो जाती है। कुत्सित एवं नकारात्मक विचारों को मन में प्रवेश से रोकने की अवरोधक शक्ति सत्संगति से ही मिलती है। सत्संगति में मानसिक उपलब्धि बनते है और इस सबके लिए कोई परिश्रम नहीं करना पड़ता है।

जीवन में सुख शान्तिमय रहने के लिए कुसंगति से बचकर रहना अति आवश्यक है। कुछ नवयुवक सोचते हैं थोड़ा मजा ले लें फिर कुसंगति से बच निकलेंगे और ऐसा करने के लिए हम में पर्याप्त बल है, ऐसा मानना बिल्कुल भ्रामक है। कुसंगति ऐसी दलदल है जिसमें मनुष्य एका बार गिर गया तो उसमें और अधिक और अधिक धसता ही चला जाता है और उसका सर्वनाश हो जाता है। महापुरुषों ने भी इस विषय पर यही चेतावनी दी है – ''विषयों के साथ खेलना और उससे अछुता रहना अनहोनी बात है।'' महात्मा गांधी साधारण आदमी ही नहीं शुद्ध मन वाला व्यक्ति भी कुसंगति के प्रभाव से नहीं बच पाता है। कुसंगति में पड़कर होनहार प्रतिभावान और भला व्यक्ति भी पशु तुल्य जीवन जीने लगता है।

सत्संगति का दूसरा स्त्रोत सत्य है। सत्य का अर्थ है, जैसा देखा या सुना वैसा ही बोलना।

सत्याचरण से मनुष्य की वाणी में अमोध ओज व तेजआ जाते है। ऐसी वाणी का जन मानस पर गहरा प्रभाव पड़ता है। गांधी जी के अनुसार– ''जहॉ सत्य है वहॉ ईश्वर है''। अर्थात् सत्य की संगति ईश्वर की संगति है।

सत्याचरण ने महाराजा हरिश्चन्द्र, धर्मराज युधिष्टिर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी आदि अनेक महापुरुषों को अमर बना दिया।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने 70 वर्ष की आयु में स्वस्थ एवं तरोताजा रहने के लिए प्रकृति की संगति को बताया– ''मैं कुदरत के सुन्दर दृश्यों से गहरा सम्बंध रखता हूँ। पहाड़, नदी, पेड़, पक्षी, चाँद, सितारे आदि के साथ मेरा घनिष्ट नाता है। हरे–भरे जंगल और ताजी हवा मेरी जिन्दगी को तरोताजा बनाए रखती हैं।''

आजकल बड़ी संख्या में युवक उदासीनता, डिप्रेशन तथा तनाव से ग्रसित है, इसका प्रमुख कारण है उनका अधिकतर समय घर या दफ्तर की चारदीवारी में ही बीतता है और जीवन दायिनी ताजगी और स्फूर्ति देने वाली प्रकृति की संगति उन्हें नहीं मिल पाती है।

आज के मनुष्य ने अपने स्वार्थ और लालच में प्रकृति का बड़ी निष्ठुरता से दोहन किया है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, अनियमित खनन, नदियों में फैक्टरी और कारखानों के गिरते कचरे से बढ़ता जल प्रदूषण। इन सबने मिलकर जलवायु – परिवर्तन और ग्लोबल गर्मिंग को जन्म दिया और ये मानव जाति के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हो रहे हैं। अत: आज की बड़ी आवश्यकता प्रकृति को बचाने की है। आज के विषाक्त वातावरण को अमृतमय बनाया जा सकता है तो केवल प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन से।

अत: सत्संगति का स्त्रोत कुछ भी हो, वह कल्याण करक, आनन्ददायक और गौरवान्वित करने वाली होती है। सत्संगति में बिना कुछ किए ही उन्नति होती है और कुसंगति में केवल पतन होता है।

सोचा है कभी

टुविंकल शर्मा
कक्षा- B.A. III

नारसिसस एक युवक था जो किसी झील में अपना अद्वितीय रूप देख खुद पर मोहित हो गया और सुध-बुध खोकर उसी में गिरकर डूब गया। कहते हैं वह जहां गिरा वहाँ एक सुन्दर फूल खिला जिसे नरगिस कहते हैं। नारसिसस की मौत के बाद वनदेवियों ने पाया कि झील का पानी मीठे से खारा हो गया। यह झील के आंसू से हुआ था। तब वन देवियों ने झील से कहा ''हम जानते हैं कि नारसिसस के जाने का सबसे ज्यादा दुख तुम्हें है क्योंकि हमने उसे हमेशा दूर से देखा जबकि तुमने उसकी सुंदरता को करीब से निहारा'' तब झील बोली, मैं नहीं जानती कि वह सुंदर था मेरे रोने की वजह कुछ और है। जब वह यहाँ बैठता था तो मुझे उसकी आंखों में अपनी खूबसूरती नजर आती थी।

नववर्ष

सांक्षी सिंघल
कक्षा- B.A. III

नववर्ष मुबारक सबको,
सबके घर खुशियाँ आ जाएँ।
मेरे हाथों से रचित ये रचना
सबके मन को भा जाए।
लेकर खुशियों की सौगात
चारो ओर उमंगे हैं
और खुशियाँ है सारी ओर।
देख पुराने साल की
तू गंदी आदतें छोड़
आ गया नया साल
तू भी कुछ अच्छी आदतें जोड़।
हर्ष नया है, वर्ष नया है
जीवन का संघर्ष नया है।
नभ में भी उत्कर्ष नया है।
हर्ष नया है वर्ष नया है।

क्या होती है जिन्दगी?

शुभांगी
कक्षा- B.Ed. I

खुशियों का भंडार होती है जिंदगी,
फूलों की बहार होती है जिंदगी,
गमों की पतवार होती है जिंदगी,
किसने जाना क्या होती है जिंदगी ?

जीने की वजह जिंदगी,
सहने की कला जिंदगी,
बड़ों की दुआ होती है जिंदगी,
किसने जाना क्या होती है जिंदगी ?

आशा की झलक जिंदगी,
चांद की पलक होती है जिंदगी,
पायल की खनक होती है जिंदगी,
किसने जाना क्या होती है जिंदगी ?

महकता गुलाब होती है जिंदगी,
आंखों का ख्वाब होती है जिंदगी,
ईश्वर का ईमान होती है जिंदगी,
किसने जाना क्या होती है जिंदगी ?

उद्देश्यों से भरा पथ होती है जिंदगी,
चाहतों से सजा रथ होती है जिंदगी,
अब हो गया मालूम, ये होती है जिंदगी।

कहानी
राम प्रसाद 'बिस्मिल' की

कनिष्का
कक्षा- B.Ed. I

ग्याहर वर्ष की उम्र में माता जी विवाह कर शाहजहाँपुर आयी थीं। शाहजहाँपुर आने के थोड़े दिनों बाद ही दादी जी ने अपनी छोटी बहन को बुला लिया। मेरे जन्म के पांच या सात वर्ष बाद आपने हिन्दी पढ़ना आरम्भ किया। मौहल्ले की संग-सहेली जो घर पर आ जाती थी, उन्हीं में जो कोई शिक्षित थी, माता जी उनसे अक्षर-बोध करतीं। इसी प्रकार घर का सब काम कर चुकने के बाद जो कुछ समय मिल जाता उसमें पढ़ना-लिखना करतीं। मेरी बहनों को छोटी आयु में माता जी ही शिक्षा दिया करती थीं। यदि मुझे ऐसी माता न मिलती; तो मैं भी अति साधारण मनुष्य की भाँति संसार के चक्र में फँसकर जीवन-निर्वाह करता। माताजी का सबसे बड़ा आदेश मेरे लिए यही था कि किसी की प्राणहानि न हो। उनका कहना था कि अपने शत्रु को भी कभी प्राणदंड न देना।

जन्मदात्री जननी, इस जीवन में तो तुम्हारा ऋण-परिशोध करने के प्रयत्न करने का भी अवसर न मिला; इस जन्म में तो क्या यदि अनेक जन्मों में भी सारे जीवन प्रयत्न करूँ तो तुमसे उऋण नहीं हो सकता। जिस प्रेम तथा दृढ़ता के साथ तुमने इस तुच्छ जीवन का सुधार किया है, वह अवर्णनीय है। मुझे जीवन की प्रत्येक घटना का स्मरण है कि तुमने किस प्रकार अपनी दैवी वाणी का उपदेश करके मेरा सुधार किया है।

जीवनदात्री! आत्मिक : धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति में तुम्हीं मेरी सदैव सहायक रहीं। जन्म-जन्मान्तर परमात्मा ऐसी ही माता दें। यही इच्छा है। महान से महान संकट में भी तुमने मुझे अधीर न होने दिया। सदैव मुझे अपनी प्रेम भरी वाणी सुनाते हुए मुझे सान्त्वना देती रहीं। तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन भर में कोई कष्ट न अनुभव किया। इस संसार में मेरी किसी भी योग-विलास तथा ऐश्वर्य की इच्छा नहीं।

केवल एक तृष्णा है। वह यह कि एक बार श्रद्धापूर्वक तुम्हारे चरणोंकी सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लेता। किन्तु वह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखायी देती। तुम्हें मेरी मृत्यु का दुखद संवाद सुनाया जायेगा। माँ मुझे विश्वास है, तुम यह समझकर धैर्य धारण करोगी कि तुम्हारी पुत्र माताओं की माता भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारे कुल को कलंकित न किया : अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़ रहा। जन्मदात्री। वर दो कि अन्तिम समय भी मेरा हृदय किसी प्रकार विचलित न हो और तुम्हारे चरण-कमलों को प्रणाम कर मैं परमात्मा का स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करुँ।

अभिप्रेरणा

मनीष गौतम
कक्षा- B.A. III

(1) अपने हौसले को ये मत बताओं कि तुम्हारी परेशानी कितनी बड़ी है अपनी परेशानी को ये बताओ कि तुम्हारा हौसला कितना बड़ा है।

(2) जिन्दगी बड़ी अजीब होती है कभी हार तो कभी जीत होती है तमन्ना रखो समंदर की गहराई को छूने की किनारे पे तो बस जिन्दगी की शुरुआत होती है।

(3) किस्मत तो पहले ही लिखी जा चुकी है तो कोशिश करने से किया मिलेगा क्या पता किस्मत में लिखा हो कि कोशिश से ही मिलेगा।

(4) मंजिल मिलेगी भटककर ही सही गुमराह तो वो है जो घर से निकले ही नहीं।

(5) मंजिल मिले ना मिले ये मुकद्दर की बात है हम कोशिश भी ना करें ये गलत बात है।

(6) आसमां में मत ढूंढ़ अपने सपनों को सपनों के लिए तो जमी जरुरी है सब कुछ मिल जाए तो जीने का किया मजा जीने के लिए कुछ कमी भी तो जरुरी है।

(7) रास्ते भी जिद्दी हैं। मंजिले भी जिद्दी हैं। देखते है कल किया होगा क्योंकि मेरे हौंसले भी जिद्दी हैं।

(8) ठोकर लगने का मतलब, यह नहीं कि आप चलना छोड़ दें ब्लकि ठोकर लगने का मतलब यह होता है कि आप संभल जाएँ।

(9) ईश्वर कहते हैं किसी को तकलीफ देकर मुझसे अपनी खुशी की दुआ मत करना लेकिन..... अगर किसी को एक पल की भी खुशी देते हो तो अपनी तकलीफ की फिक्र मत करना।

(10) सम्भव की सीमा जानने का केवल ही तरीका है असम्भव से भी आगे निकल जाना।

(11) इंसान बड़ा होता है तो बचपन को भूल जाता है शादी हुई तो माता पिता को भूल जाता है बच्चे हुए तो भाई को भूल जाता है अमीर होता है तो गरीब को भूल जाता है और जब वृद्ध होता है तो भूला हुआ सब कुछ याद आता है।

अनमोल विचार

निशी चौधरी
कक्षा- B.Sc II

- तेरे गिरने में तेरी हार नहीं
  तू इंसान है, अवतार नहीं
  गिर, उठ, चल, दौड़ फिर भाग
  क्योंकि जीवन संक्षिप्त है
  इसका कोई सार नहीं।।
- गलतियाँ भी होगी और गलत भी
  समझा जाएगा यह जिन्दगी है जनाब
  यहाँ तारीफें भी होंगी और
  कोसा भी जाएगा।
- सोच अच्छी होनी चाहिए
  क्योंकि नज़र का इलाज तो
  मुमकिन है पर, नजरिये का नहीं।।
- ठोकर लगने का मतलब यह नहीं कि
  आप चलना छोड़ दें।
  बल्कि ठोकर लगने का मतलब
  यह होता है कि आप संभल जाएँ।
- सबर कर बन्दे मुसीबत के
  दिन भी गुजर जाएंगे
  हंसी उड़ाने वालों के भी
  चेहरे उतर जाएंगे।
- जिन्दगी में एक बात हमेशा याद रखना
  जहाँ स्ट्रगल नहीं होता वहाँ सक्सेस भी नहीं होती।
- अगर अपने सिग्नेचर को
  ऑटोग्राफ में बदलना है, तो
  हार्ड वर्क करना ही पड़ेगा।
- विकल्प मिलेंगे बहुत,
  मार्ग भटकने के लिए
  संकल्प एक ही काफी है
  मंजिल तक जाने के लिए।
- माना मुश्किलों के साथ चलना
  थोड़ा भारी रहेगा पर सफर मेरा हमेशा जारी रहेगा।

खुशी की चुटकी

मानसी गर्ग
कक्षा- M.Sc I Chemistry

1. दूसरों की मदद करते रहें। हो सकता है कि कुछ लोगों के लिए केवल आप ही उम्मीद हो। आपके लिए जो बहुत छोटी बात हो, वहीं दूसरों के लिए बहुत बड़ी राहत है।
2. हम जिन्हें पसन्द करते हैं, वे हमें प्यार न करें तो दु:ख होता है, पर दूसरों की सोच के लिए खुद को कोसते न रहे बहुत सारे ऐसे लोग है। जो खुद को ही पसन्द नहीं करते।
3. अपनी गलती मान लेना आसान नहीं है। सामने वाला भले ही अपनी गलती न माने पर अपने हिस्से की भूल मान लेना और उसकी जिम्मेदारी उठाकर आगे बढ़ जाना खुद को हल्का कर देता है।
4. आप किसी की तारीफ कितनी भी कर सकते हो लेकिन..... बेईज्जती हमेशा नाप-तोल कर करना, क्योंकि..... यह वो उधार है, जो हर कोई ब्याज सहित चुकाने के लिए भरा जाता है।
5. आप कितने भी खूबसूरत, गुणवान या धनवान हो आपके बोलने का अंदाज बता देगा कि आप 100 कौड़ी के है या 2 कौड़ी के।
6. यदि आपको किसी एक से शिकायत है, तो उससे बात कीजिए.. .यदि आपको अधिकतर लोगों से शिकायत है, तो खुद से बात कीजिये....।
7. अगर आप सही हो तो कुछ भी साबित करने की कोशिश मत करो बस सही बनो, गवाही..... वक्त खुद दे देगा।

संघर्ष

हेमन्त शर्मा
कक्षा- B.Sc III

एक गए अगर तुम हो रह जाओगे पीछे
दूर नहीं अब मंजिल, बस कुछ ही मोड़ और है।
ओझल ना हो मंजिल एक पल भी नजरों से,
हर पल करती, दिल की धड़कन यही शोर है।
चाहे गरजे बादल या बिजली ही चमके
आंधियां हो घनी या बारिश घनघोर बरसे
हर मुश्किल पार कर जाना उसकी ओर है।
दूर नहीं अब मंजिल बस कुछ ही मोड़ और है।
चलते-चलते पैर थक जायें
या पथरीली रास्तों में बाधा कोई डाले,
घने अंधियारे के बाद ही, आती इक भोर है।
दूर नहीं अब मंजिल, बस कुछ ही मोड़ और हैं।

माता – पिता

प्रीति
कक्षा- B.Ed. II

माँ तुमने अपने आँचल में पूरी सृष्ठी को समेटा है खुद दर्द सहकर भी हमें उज्जवल जीवन दिया है। हमारी एक मुस्कान के लिए न जाने तुमने कितना आंसुओं का सैलाब पिया है।।

किसी ने मुझसे मुकाबला भी नहीं किया और कहने लगे कि तुम हार जाओगी। भला ये भी कोई बात है। मैं कहती हूँ मैं सारी दुनियाँ जीत सकती हूँ जब तक मेरे सिर पर मेरे माता पिता का हाथ है।।

एक बार एक गाँव में बूढ़े माता पिता रहते थे वो अपने बेटे D.N. से मिलना चाहते थे जो एक शहर में रहता था। दोनों ने अपनी यात्रा शुरू की और उस शहर में उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से उन्हें लम्बे समय से उनके बेटे की चिट्ठियाँ आती थीं। जब उन्होंने दरवाजा खटखटाया तो बहुत उत्साहित हुए अपने बेटे से मिलने के लिए और खुशी से मुस्कुरा रहे थे। पर जब दरवाजा खुला तो उन्होंने देखा कि दरवाजा किसी और ने खोला है। पिता ने पूछा कि इस जगह पर D.N. रहते थे। तो दरवाजा खोलने वाले व्यक्ति ने कहा, नहीं वो अब यहाँ नहीं रहते हैं। वो कहीं और रहते हैं। पिता निराश हो गये वो सोच रहे थे कि अब अपने बेटे से कैसे मिलेंगे। इसी सोच में डूबे थे तभी पीछे से एक व्यक्ति उनकी पीठ को थपथपाने लगा और पूंछा कि आप D.N. की तलाश कर रहे हो। पिता ने कहा हाँ जी हाँ तभी उस व्यक्ति ने D.N. का पता बताया। तब पिता बेटे के ऑफिस पहुँचे और अपने बेटे से मिले। मिलने पर पिता की आँख भर आई तभी पिता ने बेटे से कहा बेटा तुम्हारी माँ तुमको देखना चाहती है मेरे साथ घर चलोगे। बेटे ने जाने से मना कर दिया पिता मुस्कुराते हुए वापस लौटे। वक्त बीतता गया और D.N. के मन में पिता के साथ न जाने का दर्द हमेशा रहता था। D.N. को कुछ दिनों बाद छुटटी मिली तो वो अपने माता पिता से मिलने गाँव गया। वो उस जगह पर पहुँचा जहाँ वो पैदा हुआ था तब उसने देखा कि उसके माता पिता वहाँ नहीं थे तो वह चौंक गया। तभी उसने पड़ौसी से पूछा यहाँ मेरे माता पिता रहते थे पड़ौसी ने कहा अब वो यहाँ नहीं है तब पड़ौसी ने D.N. को उसके माता पिता का पता बताया वहाँ जाकर D.N. ने देखा कि उसके माता पिता टूटे फूटे घर में रहते हैं। जिसकी छत भी टपकती है। यह सब देखकर D.N. की आंखों में आंसू भर आए और वह धीरे–धीरे घर की ओर चलने लगा तभी उसके पिता ने देखा और बेटे की तरफ हाथ हिलाया। D.N. ने पिता को देखा और दौड़कर पिता को गले से लगा लिया। D.N. ने पूछा ये सब कब और कैसे हो गया। D.N. शर्म से झुक गया और कहा मुझे एहसास ही नहीं था कि मैं आपको अपने गाँव में इस तरह से देखूंगा पर ये सब कैसे हुआ। पिता ने कहा बेटे तुम जब से शहर गये हो तब से गाँव में बारिश नहीं हुई तो बस इसी कारण फसल नहीं हो पाई। तुम्हारी पढ़ाई के लिए हमें अपना घर गिरवी रखना पड़ा। तभी D.N. ने कहा पापा आपने मुझे बताया क्यों नहीं तभी पिता ने कहा मैं तुमसे मिलने गया था लेकिन तुमको काम में व्यस्त देखकर तुमसे कुछ कहा नहीं। बेटा मैं तुम्हारी खुशियाँ चाहता था इसलिए कुछ कहा नहीं। D.N. की आंखों से आंसू निकलने लगे और अपने पिता को गले से लगा लिया और कहा माँ और पिताजी मुझे माफ कर दो। पिता ने मुस्कुराते हुए कहा बेटा इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। बस हम ये चाहते है कि तुम समय निकालकर कभी–कभी हमसे मिलने आ जाया करो। बेटा D.N. बोला पापा अब ये गलती दोबारा नहीं होगी।

I LOVE MOM DAD

घर लौट के रोयेंगे माँ बाप अकेले में मिट्टी के खिलौने भी सस्ते न थे मेले में। खुद काँटों पर चले लेकिन बच्चों को अहसास होने न दिया तलवों का लहू धोया छुप–छुप कर अकेले में।

घर लौट के रोयेंगे माँ बाप अकेले में।।

दोस्तो माँ एक ऐसा बैंक हैं जहाँ आप हर भावना और दुख जमा कर सकते हैं। और पिता एक ऐसा क्रेडिट कार्ड है जिनके पास बैलेंस न होते हुए भी हमारे सपने पूरे करने की हर सम्भव कोशिश करते हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण एक समस्या

इमरोज
कक्षा- B.Ed. II

प्लास्टिक कचरे के कारण होने वाला प्लास्टिक प्रदूषण एक खतरनाक ऊँचाइयों पर पहुंच चुका है और हर गुजरते दिन के साथ तेजी से बढ़ रहा है। यह वैश्विक चिन्ता का कारण बन गया है। क्योंकि यह हमारे खूबसूरत ग्रह को तेजी से नष्ट कर रहा है। और सभी प्रकार के जीवित प्राणियों पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है।

प्लास्टिक प्रदूषण को दूर करने के उपाय

यह प्लास्टिक को कम करने के सरल उपाय है जिनका हम अपने दैनिक जीवन में अभ्यास कर सकते है।

उपयोग से बचें- प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए पहला सबसे महत्वपूर्ण कदम प्लास्टिक के उत्पादों से बचना है। अब चूंकी हम प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग करने के लिए काफी आदी हो गए हैं। और ये हमारी जेब पर प्रभाव डालते हैं। इसलिए हम इनमें उपयोग से पूरी तरह नहीं बच सकते हैं। हालांकि,हम उन प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग करने से निश्चित रूप से बच सकते है। जिन्हें आसानी से पर्यावरण के अनुकूल विकल्पों के साथ बदला जा सकता है। उदाहरण के लिए प्लास्टिक थैलियों का उपयोग करने के बजाय हम खरीदारी के लिए कपड़ों के थैलों का या पेपर बैग का प्रयोग कर सकते हैं। इसी तरह, पार्टियों के दौरान डिस्पोजेबल प्लास्टिक कटलरी और बर्तनों के बजाय हम स्टील, पेपर, थर्माकोल या अन्य किन्हीं सामग्रियों का उपयोग कर सकते है। जो पुनः प्रयोग या निपटान के लिए आसान हो। यदि आप किसी कारण प्लास्टिक की थैलियों से नहीं बच सकते हैं तो आप उन्हें बंद करने से पहले जितना सम्भव हो सके उनका प्रयोग कम से कम करें।

रीसाइकल- प्लास्टिक को नष्ट करना मुश्किल है परन्तु प्लास्टिक को कम करने और उसके उत्पादन को कम करने के लिए इस प्रकार की ही प्लास्टिक की वस्तुएं खरीदी जानी चाहिए जो रीसायकलेबल हों। प्लास्टिक के रीसायकल होने से इस प्रदूषण पर नियन्त्रण लगाया जा सकता है। कई कम्पनियाँ है जो प्लास्टिक को रीसायकल करती है।

निष्कर्ष- हम सभी प्लास्टिक प्रदूषण को हरा देने के तरीकों का पालन करें तो हम निश्चित ही प्लास्टिक प्रदूषण को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

अपनापन चला गया

टुविंकल शर्मा
कक्षा- B.A. III

अब देर रात ऑफिस से घर आकर इंटरनेट मीडिया की जिम्मेदारी शायद बूढ़े मां-बाप की जिम्मेदारी से बढ़कर हो गई है। हाँ, कमाने खाने के तौर-तरीके जो बदल गए है। ''मैं तंग आ गया हूँ, इस बदलती अपनों की दुनिया से, भला कब तक नौकरो के सहारे जिंदा रहूँगा ? रामलाल ने एक गहरी सांस लेते हुए अपनी पत्नी शकुन्तला से कहा।

अरे आप परेशान न हों, मैं सब कुछ संभाल लूंगी शकुन्तला बोली तभी कमरे के अंदर से आई खाने की दो थाली बूढ़े माँ-बाप को देकर चली गई। दोनों ने एक दूसरे को देखा और फिर नजरें झुकाए भोजन करना शुरू कर दिया। भोजन समाप्ति के बाद ही बहू और बेटे का घर के अंदर प्रवेश हुआ। बेटा तो फिर भी खैरियत पूछ लेता है परन्तु बहू शायद ज्यादा ही आधुनिक है, तभी सीधे अपने कमरे में चली जाती है।

कैसा खाना बना बाबू जी ? बेटे ने पूछा। खाना तो ठीक बना है, लेकिन अब खाने में स्वाद नहीं लगता है, स्वाद ही चला गया है। तभी कमरे से बाहर निकलती हुई बहू बोली, 'बाबू जी स्वाद का चला जाना तो कोरोना का लक्षण हो सकते हैं चलो कल आपकी जांच कराते हैं। ठीक है बहू, कल जांच करा देना, अब तो स्वाद के साथ-साथ अपनापन भी चला गया है। किस-किस की जांच कराई जाएगी। बाबू जी के शब्दों ने खामोशी की लम्बी दीवार खड़ी कर दी थी। खामोशी में पता ही नहीं चला कब बहू बेटा अपने कमरे में चले गए और बाबू जी कल का इंतजार कर रहे थे।

दोस्ती

साक्षी चौहान
कक्षा- B.Com Ist year

कहते हैं दोस्ती का रिश्ता सबसे पवित्र होता है।
तो आज क्यों इंसान दोस्ती में रोता है
दोस्त वो होता है जो सदा दोस्ती निभाता है
जो दोस्त की खातिर कुर्बान हो जाता है।
लोग जो दोस्ती को खेल समझते हैं
तभी तो शायद आँखों से अश्क टपकते हैं
जिंदगी में अब सच्चे दोस्त नहीं मिलते हैं
उजड़े चमन में कभी फूल नहीं खिलते हैं

गमगीन जिंदगी और 30 सेकेंड

नेहा
कक्षा- B.Ed. II

''महज 30 सेकेंड में उस लड़की को मंच से हटने के लिए कह दिया गया''

वह मंच पर कूदकर अवतरित हुई और दोनों पैरों को थोड़ा फैलाकर कमर पर दोनों हाथ रख हंसती हुई खड़ी हो गई। उसने आगे देखा मंच से नीचे आगे की पंक्ति में बैठे निर्णायक आपस में बात करते दिखे, ऐसा लगा कि सबने नजरंदाज कर दिया तभी मुख्य निर्णायक (जूरी) अध्यक्ष की आवाज गूंजी इसे रोको-रोको बस काफी है। धन्यवाद मिस। नेक्स्ट प्लीज

मतलब महज 30 सेकेंड में उस लड़की को मंच से हटने के लिए कह दिया। वह 18 साल की लड़की एकदम से तनाव में आ गई। यह क्या मेरा एक्ट पूरा देख तो लेते मौका ही नहीं दिया एंट्री करते ही स्टाप कह दिया। आडिशन में फेल? अब क्या होगा? वह बिना परिणाम जाने सड़कों पर हैरान परेशान निकल पड़ी, आडिशन की कितनी तैयारी की थी, मंच पर खिलंदड अंदाज में एंट्री करते हुए सोचा था, सबको चौका देगी कि लो मैं आ गई मुझे देखो तो सही लेकिन यहां तो मंच पर आते ही नेक्स्ट प्लीज सुनने को मिल गया। क्या गलती हो गई? जूरी ने मेरा पूरा संवाद तक न सुना। उन्होंने यह भी नहीं माना कि मैं सुनने लायक हूँ, अब मैं फिर कभी अभिनेत्री बनने के बारे में नहीं सोच सकती। आडिशन एक अच्छा मौका था, पर सारी मेहनत धुल गई। उदासी के उन क्षणों में वह सीधे समुद्र तट पर चली गई।

''जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं कई बार हम अटक कर रह जाते हैं। उदास रहने लगते हैं। हमारी उदासीनता के घेरों को तोड़ती है। हमारी जिज्ञासा, जो नया जानने और चाहने की हमारी इच्छा। हमारी जिज्ञासा ही हमें अपने समय हालात और सीमाओं से आगे ले जाती है''

वह बंदरगाह का इलाका था, समुद्री चिड़ियां यानी सीगल की आवाज हवा में गम घोल रही थी। लड़की के दिमाग में एक ही उपाय उमड़ रहा था, अभी खुद को इसी पानी के हवाले कर दूं कि किस्सा खत्म हो जाए। ख्वाब तो ख्वाब ही रहेगा, जब साकार नहीं होना है, तो जीकर क्या करना है? लेकिन हिम्मत न हुई। देखो, यहां पानी गंदा है, जब डूबने के बाद निकाला जाएगा, तो गाद में लिपटी मैं कैसी दिखूंगी? कॉफी देर वहीं तट पर गमगीन टहलने के बाद वह तेजी से चलती अपने घर आई। इंतजार कर रही दो चचेरी बहनों ने आते ही पूछा बड़ी देर लगा दी क्या हुआ? लड़की के पास देने लायक जवाब न था, तो वह और तेज कदमों से अपने कमरे में आई और खुद को बिस्तर के हवाले कर दिया। फूटकर रोने लगी। मेरा कौन है?

चाचा ने बड़ी मुश्किल से एक आडिशन की इजाजत दी थी और वादा लिया था कि फेल हुई तो अभिनेत्री बनने का भूत हमेशा के लिए सिर से उतारना पड़ेगा। आज अगर पापा होते, तो आडिशन के और मौके मिलते और मम्मी होती तो अपने गले से लगा लेती जब में दो-तीन साल की थी, तभी मम्मी क्यों छोड़ गई? और पापा ने ही तो सपने संजोए थे, पापा कैमरा लिए साथ लगे रहते थे। शहर में कोई ऐसी लड़की नहीं थी, जिसकी इतनी तस्वीर खीचीं जाती हो। पिता हर मौके पर फोटो लेते थे।

थियेटर ले जाते थे फिल्म दिखाते थे। 13 साल की हुई कि बीमार पिता ने भी हाथ छुड़ा लिया। फिर एक चाची ने सहारा दिया। लेकिन उनका साया भी छह माह में उठ गया। कोई लड़की इतनी बदकिस्मत भी हो सकती है। क्या? अब एक चाचा ने आश्रय दिया लेकिन वह मेरे ख्वाब के खिलाफ है।

''जीवन में अपने भले के लिए फैसले लेना गलत नहीं है, अपने लिए खुद खड़े होने का साहस होना चाहिए। दूसरे मूर्ख कहेंगे इस डर से अपनी भावनाओं को जाहिर करने से न रोकें। आपकी अपनी भी एक दुनिया है। उसकी बेहतरी के लिए किसी दूसरे के गैर जरुरी कार्यों को मना कर देना खुदगर्जी नहीं है। बेहद जरुरी है। कि दूसरे भी आपकी भावनाओं सपनों, चाहतों और सीमाओं का ध्यान रखें।''

अभिनय को सम्मानित पेशा नहीं मानते, बमुश्किल एक मौका उन्होंने

दिया था कि जा किस्मत आजमा लें लेकिन यहाँ भी निराशा हाथ लगी अब वह क्या करेगी ? रो-रोकर बुरा हाल था, लेकिन तभी एक दोस्त का फोन आया, और बहनों ने बात करके बताया कि आडिशन थियेटर पर सफेद लिफाफा तुम्हारा इंतजार कर रहा है। वह विस्तार से उछलकर खड़ी हुई। तेजी से सीढ़िया उतरकर मानो उड़ चली, कदम थियेटर पहुंचकर ही थमे। वह आडिशन पास कर गई थी कैसे ? यह पूछने की हिम्मत नहीं पड़ी, बस सफलता का सफेद लिफाफा लिए ऐसे चल पड़ी कि जिंदगी में कभी पीछे पलटकर नहीं देखना पड़ा। नाटक और फिल्मों में काम का सिलसिला चल पड़ा। वह बला की खूबसूरत बेहद सम्मानित-पुरस्कृत अभिनेत्री 'इंग्रिड़ बगमिन (1915-1982) दुनिया में किसी पहचान की मोहताज नहीं रही। जिन्दगी खुशियों से भर गई। लेकिन वह दुखद लम्हा बार-बार दिमाग में आता था, एक बार रोम में उस आडिशन जूरी में शामिल एक सदस्य से मैंने पूछ ही लिया - कि पहले आडिशन में आप लोगों ने मेरे साथ इतना बुरा वर्ताब क्यों किया ? पता है। मैं आत्महत्या कर सकती थी, मुझे इतना नापसंद कर दिया गया कि महज 30 सेकेंड में खारिज कर दिया। ''जवाब मिला 'प्यारी लड़की तुम पागल हो ? तुम आत्मविश्वास से भरी जैसे ही मंच पर छलांग लगाकर एक बाघिन की तरह आई हमने एक-दूसरे से कहा, समय बर्वाद मत करो इसे तत्काल चुन लो.....

''किसी एक के नापसंद करने से जिन्दगी खत्म नहीं हो जाती है। अपने जहन में आने वाले नकारात्मक विचारों को अपने ऊपर हावी ना होने दें हो सकता है। आने वाला समय हमारे लिये कुछ अच्छा लिख रहा हो।''

''जीवन में कुछ अच्छे रिश्तों का होना हमें खुशी देता है। हम लगातार यही कहते-सुनते हैं कि हमेशा ऐसे लोगों के साथ रहें जो खुशियां दे। यही कारण है कि खुशिया पाने के लिए हम दूसरे के पीछे दौड़ते रहते हैं, पर किसी ने कहा है कि खुशियां तो हम खुद पैदा करते हैं, हम ऐसे लोगों के साथ रहे, जो उन खुशियों में कुछ खुशी जोड़ते हैं....''

उद्यमिता गिरे, उठे और फिर चलें

काजल चौधरी
कक्षा- B.Ed. I

जब भी हम कुछ सीखने, कुछ बनाने या कुछ करने का प्रयास करेंगे तो जाहिर है कि हमसे गलतियाँ भी हो सकती हैं। जैसे शुरू में जब हम सीखने जाते हैं तो हारमोनियम पर सरगम बजाते हुए हमसे अचानक गलती से शुद्ध गंधार की जगह कोमल गंधार वाला बट दब जाता है इससे सरगम का सुर बिगड़ जाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम म्यूजिक सीखना छोड़ दें इस गलती का फायदा यह होता है कि अगली बार जब हम सरगम बजाते हैं तो इस बात का ध्यान रखते हैं इसलिए गलतियाँ होने पर निराश न हों बल्कि यह मानकर चले कि यदि हमसे गलती हुई है तो वह हमें सिखाने के लिए है आखिर गलतियाँ ही तो हमें सिखाती हैं।

- कोई भी नया काम हाथ में लेने से न डरे कोशिश तो यह होनी चाहिए कि हम आगे बढ़कर नया काम हाथ में ले अपने लिए चुनौती मानकर उसे पूरा करें।
- शिशु चलना खुद ही सीखता है वह खुद ही खड़ा होता है चलता है गिरता है लेकिन बार-बार गिरने के बावजूद आखिरकार वह खड़ा होकर चलना सीख जाता है कोई भी चीज सीखने की सही प्रक्रिया है इसलिए गिरने से कभी न डरे खुद में आत्म विश्वास जगाकर कदम बढ़ाएँ हर राह आसान होती चली जाएगी।
- गलती होने पर शर्मिदगी या ग्लानि का अनुभव ना करें क्योंकि गलती सभी से होती है इसका सबसे अच्छा तरीका यह है गलती होते ही आप यह सोचना शुरू कर दे गलती का क्या कारण था और कैसे आप उसे सुधार सकते हैं।
- यह मानकर चलें कि गलती उसी से होती है जो कुछ नया करता है जो कुछ करेगा ही नहीं उससे न तो गलती होंगी और न ही उसका विकास हो पायेगा।
- आमतौर पर गलतियाँ शुरुआत में ही होती है शुरुआती मुश्किलों को आपने पार कर लिया तो अपने पैरों पर खड़े होकर दौड़ सकते हैं।
- विफलताओं के बाद जो सफलता मिलती है वह हमारे अंदर गजब का आत्मविश्वास ला देती है जिससे हम कोई भी काम सहजता से कर पाते हैं।
- गलतियों से हम तभी डरते हैं जब हमारे अंदर आत्मविश्वास नहीं होता अपने आत्म विश्वास को बढ़ाएँ।

आकाशीय बिजली

प्रज्ञा वार्ष्णेय
कक्षा- B.Sc III

सभ्यता की शुरूआत से ही बिजली गिरने की घटनाएँ देखी गई हैं, लेकिन बादल किस तरह गर्म हो जाते हैं, इसे अभी पूरी तरह नहीं समझा जा सका है। जो समझ पाए हैं वह यह है कि आँधी तूफान की स्थिति में बादलों के ऊपरी सिरे में पॉजीटिव चार्ज होता है, जबकि निचले हिस्से में निगेटिव चार्ज होता है। पानी की बूंदों को अपने में समाई नीचे की गर्म हवा जब बर्फ से भरे ठंडे बादलों से टकराती है, तब आँधी-तूफान की शुरूआत होती है, इस प्रक्रिया में पानी की बूंदो और बर्फ के टुकड़े के बीच लगातार घर्षण होता है। जब आकाश का गर्म क्षेत्र अचानक खुद को डिस्चार्ज करता है तब बिजली गिरने की घटना होती है। यह घटना दो क्षेत्रों या दो बादलों के बीच होती है। जब यह डिस्चार्ज बादलों के दो क्षेत्रों के बीच होता है तब हम एक जगह और देर तक बिजली गिरने की घटना का अनुभव करते हैं पर जब डिस्चार्ज दो बादलों के बीच होता है। तब हम रोशनी को एक से दूसरी जगह जाते देखते हैं जब ऐसी घटना बादलों के निचले हिस्से और जमीन के बीच बिजली चमकने से हो, जिसे हम बिजली गिरना कहते हैं।

प्रभाव:- बिजली गिरने का असर कई किलोमीटर तक हो सकता है इसकी गति काफी तेज लगभग 1,50,000 किमी./से. होती है। और यह अपने आस-पास के वायुमण्डल को काफी गर्म कर देता है।

सुरक्षा:- आकाशीय बिजली से बचने का मुख्य सुरक्षा नियम 30/30 है यानि बिजली चमकने पर 30 तक गिनने से पहले ही बादल के गरजने पर घर के अन्दर चले जाना चाहिए और आखिरी बार बादल गरजने के 30 मिनट तक बाहर नहीं निकलना चाहिए। खेत में होने पर दोनों पैरों को एक साथ कर सिर झुकाकर बैठ जाना चाहिए। लेटने पर खतरा बढ़ जाता है। पेड़ के नीचे खड़ा नहीं होना चाहिए। घर के अन्दर बिजली के उपकरणों को प्लग से निकाल देना चाहिए।

मेरी कोरोना गीतमाला

रुचि शर्मा
कक्षा- B.Ed. II

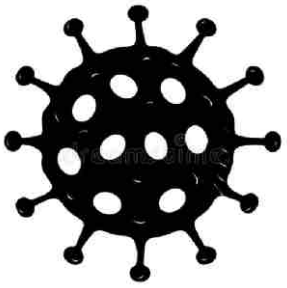

भाईयों और बहनों कोरोना गीतमाला में आपका स्वागत है। पन्द्रह गीतों की इस गीतमाला में आइये सुनते हैं कौन-सा गीत है। दसवें पायदान पर - ''मेरे सामने वाली खिड़की में एक कोरोना पेसेन्ट रहता है। अफसोस यह है कि वो हमसे कुछ चिपका चिपका रहता है।'' प्रोग्राम को आगे बढ़ाते है। और सुनते है वो गीत जो नवें पायदान पर है-''दुनिया में हम आये है तो जीना पड़ेगा, मास्क है अगर जरुरी तो पहनना पड़ेगा'' कान खोलकर सुनिऐ आठवें पायदान का गीत ''सुहाना सफर और ये मौसम हसीन, हमें डर है हम पॉजिटिव हो ना जाये कहीं'' और यह रहा सातवें नम्बर का गीत- ''तुमने पुकारा हम चले आये मास्क हथेली पर ले आये रे'' बी पॉजिटिव अच्छा है पर कोई सुनना नहीं चाहता है। हमारे छठे पायदान का गीत भी यही कह रहा है- ''पल भर के लिए हमें कोई निगेटिव कह दे झूठा ही सही'' कोरोना काल काला है या नीला हमें नहीं पता पर पांचवें पायदान का गीत काला कह रहा है। - ''घर से निकले कोरोना काटे, काले कोरोना से डरियो'' कोरोना काल में जिन्दगी ऐसी हो गयी है पल में पॉजिटिव पल में निगेटिव चौथे पायदान पर सुनिये कौन सा गीत है आपके लिए- ''जिन्दगी कैसी है ये पहेली कभी ये डराऐ कभी ये हंसाऐ। तीसरे पायदान पर आपका गीत- ''अजीब दास्ताँ है ये कहां से शुरू कहां से खत्म दूसरे पायदान पर- ''एहसान तेरा होगा मुझ पर दिल जो चाहता है वो करने दो, मुझे मास्क से चिढ़ हो गयी है मुझे मास्क उतारकर फेंकने दो'' पहले पायदान पर है वो गीत जिसे पूरी दुनिया गा रही है।- उस वैक्सीन के लिए जो सिर्फ सपने में ही है- ''मेरे सपनों की रानी कब आयेगी तू बीती जाये जिन्दगानी कब आयेगी तू..... चली आ तू चली आ।

कुछ सकारात्मक विचार.....

काजल पाल
कक्षा- B.Ed. II

1. जीवन में वो ही व्यक्ति असफल होते हैं, जो सोचते है पर करते नहीं।
2. वो सपने सच नहीं होते जो सोते वक्त देखे जाते है, सपने वो सच होते है जिनके लिए आप सोना छोड़ देते है....
3. सफलता का चिराग परिश्रम से जलता है।
4. कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदल देते है
5. ये सोच है हम इंसानों की, कि एक अकेला क्या कर सकता है, पर देख जरा उस सूरज को वो अकेला ही तो चमकता है।
6. लगातार हो रही असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि कभी कभी गुच्छें की आखिरी चाबी भी ताला खोल देती है...
7. झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं तरक्की के बाज की उड़ान में कभी आवाज नहीं होती....
8. इंसान तब समझदार नहीं होता जब वो बड़ी बड़ी बातें करने लगे, बल्कि समझदार तब होता है जब वो छोटी छोटी बातें समझने लगे...
9. अगर तुम उस वक्त मुस्कुरा सकते हो जब तुम पूरी तरह टूट चुके हो तो यकीन कर लो कि दुनिया में तुम्हें कभी कोई तोड़ नहीं सकता।
10. हमें जीवन में भले ही हार का सामना करना पड़ जाये पर जीवन से कभी नहीं हारना चाहिये...
11. बनो सहारा बेसहारों के लिए, बनो किनारा बे किनारों के लिए, जो जिये अपने लिये तो क्या जिये, जी सको तो जियो हजारों के लिए।
12. खुद की तरक्की में इतना समय लगा दो, कि किसी की बुराई करने का वक्त ही ना मिले।
13. पराजय तब नहीं होती जब आप गिर जाते हैं, पराजय तब होती है जब आप उठने से इनकार कर देते हैं।
14. आने वाले कल को सुधारने के लिए बीते हुए कल से शिक्षा लीजिए।
15. पसंदीदा कार्य हमेशा सफलता, शांति और आनन्द ही देता है।
16. दुनिया में कोई काम असंभव नहीं, बस हौसला और मेहनत की जरुरत है।
17. घड़ी सुधारने वाले मिल जाते हैं लेकिन समय खुद सुधारना पड़ता है।
18. मुश्किल वक्त का सबसे बड़ा सहारा है ''उम्मीद''।
19. यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ सिखा देती है।
20. असली खुशी तो वो है; जो आपके माँ-बाप के चेहरे से झलके और उसकी वजह आप हो.....

सफलता की ओर चल

कुमारी चमन चकोर
कक्षा- B.Ed. II

करुण क्रन्दन न कर, विफलता मिलने पर
विफलता की गोद ही सफलता की नींव हैं।।
गलतियां होने से स्वसुधार होता है।
कठिनाइयाँ मिलने से क्षमताओं का ज्ञान होता है।
केवल सिद्धि मिलना जीवन का लक्ष्य नहीं।
संघर्ष करके देखो क्या गलत क्या सही।।
मूक बनकर पशुम केवल उदर पूर्ति करना
सोचिए स्वयं ही क्या उचित है ऐसे रहना।।
समाधान का हिस्सा सदैव बनकर ही जीना
लक्ष्य को निरन्तर भेदकर सफलता की ओर चल।
अपने कर्म पथ पर दृढ़ता से डटकर
ओजस्वी स्वभाव से सफलता की ओर चल
लगन ज्ञान मान से, बुद्धि और विज्ञान से
अपने स्वाभिमान से सफलता की ओर चल।

जल का महत्व

गगन राघव
कक्षा- B.Sc. III

जल ही जीवन है।
कहा गया है, ये भाई।
जब जल खत्म हो जायेगा,
तो मच जायेगी तबाही।।

जल के बिना जीवन न सम्भव,
जल को बचाओ ये करो प्रचार।
और जीवन का करो संचार।।

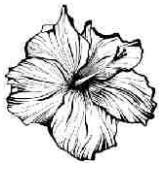

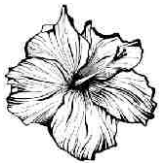

इसलिए जल को संभालो,
मत करो ज्यादा बेकार।
जल खत्म होने पर,
तुम्हें रोना पड़ेगा यार।

जल में रहते हैं जीव अपार
करते हैं ऑक्सीजन का संचार।
पौधे पर निर्भर हैं इंसान,
पौधे का है जल ही भगवान।।

मन अपना हो जाये बादल

रूसी रानी
कक्षा- B.A. II

आसमान में उड़ते बादल,
रूप बदलते आते बादल।
बनकर काले-भूरे चेहरे,
कभी गरज चौंकाते बादल।
संग हवा के दौड़ लगाते,
यहाँ-वहाँ दिख जाते बादल।
देह अकड़ती ठंड से अपनी,
गुप-चुप धूप दिखाते बादल।
हाथ किसी के कभी न आते,
दूर गगन-छा जाते बादल।
सूरज गुस्से में जब आता,
दूर कहीं छुप जाते बादल।
रूई के फाहे-से दिखते,
पलभर में छंट जाते बादल।
सबके मन को भाते रहते,
दिखते प्यारे नन्हे बादल
वह दिन कब आएगा प्यारे,
मन अपना हो जाये बादल।

अपना-अपना भाग्य

श्याम
कक्षा- B.A. II

जिस तरह मनुष्य के हाथ की पांचों अंगुलियां अलग-अलग होती है, वैसे ही माँ के सभी बेटों का भाग्य अलग-अलग होता है,
शिक्षा के क्षेत्र में, कोई डॉक्टर, कोई वकील, कोई अध्यापक, कोई इंजीनियर, कोई I.A.S. और कोई I.P.S. आदि ये मनुष्य कड़ी मेहनत करके अपने-अपने भाग्य को संभाल लेते हैं तथा दूसरी ओर वे लोग जो अपने भाग्य को संभालने की जगह अपना-अपना भाग्य बिगाड़ लेते हैं। जैसे- जुआरी, शराबी, आरोपी, अपराधी और आतंकवादी तथा कानून का उल्लंघन करने वाले बन जाते हैं फिर अन्त में जाकर पछताते हैं कि उस व्यक्ति के पास गाड़ी बंग्ला, धन दौलत रूपया पैसा है और हमारे पास कुछ नहीं है वह एक बड़ा इंसान है।
''एक बार तो जाकर पूछो उससे कैसे वह बड़ा इन्सान बना
रात दिन कर कड़ी मेहनत वह एक कामयाब इन्सान बना''
वर्तमान में एक कहावत है कि- व्यक्ति अपने दुख को न देखते है दूसरे के सुख से बड़ा परेशान है।
व्यक्ति को अपना भाग्य बनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

आखिर क्यों?

अंशुल गिरि
कक्षा- B.Sc. III

भ्रष्टाचार मिटाओ का नारा लगाते हैं, क्यों ?
खुद ही भ्रष्टाचार फैलाते हैं, क्यों ?
रिश्वत लेकर खुश हो जाते हैं, क्यों ?
रिश्वत देकर कंगाल हो जाते है, क्यों ?
दहेज लेने में शान दिखाते हैं, क्यों ?
दहेज देने में विरोध जताते हैं, क्यों ?
बेटा हो तो गर्व दिखाते हैं, क्यों ?
बेटी पाकर लाचार हो जाते हैं, क्यों ?
दूसरा सहे तो किस्मत बताते हैं, क्यों ?
खुद सहे तो आरोप लगाते हैं, क्यों ?
अपनी गलती हो तो छिपाते हैं, क्यों ?
दूसरों की गलती हो तो दोष लगाते हैं, क्यों ?
आखिर क्यों ? ऐसे हो जाते हैं लोग क्यों ?

गंगा

सुनिधि वर्मा
कक्षा- B.Ed. I

निर्माणों के गीत लिखेंगे हम गंगा के नीर पर,
उजड़े शहरों को बसाएंगे हम माँ के शीश पर,
कल-कल बहती गोमुख से पवित्र जल धारा।
यूँ-पुलों का जाल बिछाएंगे गंगा के आशीष पर।
भागीरथ ने तप किया लाने गंगा को पृथ्वी पर,
शिव ने वरदान दिया सगर पुत्रों का उद्धार कर
पधारी मानव जीवन की मुश्किलों को समेटे,
हिमालय की गोद से सारी उत्तर भूमि पावन कर।
कहाँ जाओगे आधुनिकता से गंगा को दूषित कर
क्या काशी में मोक्ष पाओगे इसको कुलुषित कर
सदियों निर्मल जल से प्यास बुझा आस जगाती
क्या उसी को जहर बनाओगे इन कारखानों की रेत पर।
प्रकृति का रूदन देखो, गंगा माँ के हाल पर
समंदर का उफान देखो शीतल जल के आन पर
क्या छोड़कर जाओगे आने वाली पीढ़ियों को
हिंद का अपमान देखो औषधिमय नीर के ह्रास पर।

"जिन्दगी"

चंचल शर्मा
कक्षा- M.A. I

जिन्दगी एक अनमोल तोहफा है।
कभी मिले वफा तो कभी खफा है।
यह हार-जीत का एक खेल है।
हमारी किस्मत और मेहनत का मेल है।
देखने पड़ते हैं कितने उतार-चढ़ाव,
पार करने होते हैं बहुत से पड़ाव
मान लो तो हार है ठान लो तो जीत है।
यही तो सदियों पुरानी जिन्दगी की रीत है
दो पल की है जिन्दगी जी भरकर जी लो
अगर मिले विष तो खुशी-खुशी पी लो
उम्मीद पर टिकी सारी दुनिया है
जिससे बनती जिन्दगी की बुनियाद है।
सफर जिन्दगी का मुश्किल है।
रास्ते की बाधाएँ भी जटिल है
इतनी जल्दी हार न मानो
अपने हुनर को खुद पहचानो
इन मुश्किलों को स्वीकार करो
अपनी मेहनत से सपनों को साकार करो
कहते है जिनके अन्दर होता अभिमान है
उसका जल्दी खो जाता स्वाभिमान है।
हमारे विश्वास और हौंसलों का खेल है
सबसे न्यारा इस जिन्दगी का खेल है।

बचपन

लक्ष्मी चौहान
कक्षा- B.A. III

जवानी के मेले में कहां बचपन मेरा खो गया.....
वो खुशियों का जमाना शायद मुझसे रूठ कर सो गया.....
ना फिक्र थी ना कोई परेशानी, दिलों दिमाग में रहती थी.....
सारी थकान मिट जाती थी जब,
माँ गोद में लेकर 'मेरा बच्चा' प्यार से कहती थी.....
आज तो अच्छी अच्छी कहानी, सुनकर भी नींद आती नहीं
तुम्हारी मीठी लोरी की वो गुनगुनाहट, आज भी कानों से जाती नहीं....

सीता माता सी कोई नहीं

लक्ष्मी चौहान
कक्षा- B.A. III

राधा बनने को सब चाहें
माता सीता सी कोई नहीं।
सब कृष्ण के प्रेम में भटक रही
संग राम के वन में कोई नहीं।।

ये क्यों कहते हैं धोखा खा गई
रो रो वक्त गुजार रही।
सब ढूंढ़ती रही है राजभवन
सीता सा वन पथ कोई नहीं।।

फिर कहां मिलेगा सत्य प्रेम
जो कर्त्तव्यों से जूझी नहीं।
वो जनक सुता महलों की ज्योति
वन आकर भी बुझी नहीं।।

बिता दिया कांटों में जीवन
फिर भी लंका की हुई नहीं।
राम हुए बस सीता के.....
वो और किसी की हुई नहीं।।

राधा बनने को सब चाहें
माता सीता सी कोई नहीं।
सब कृष्ण के प्रेम में भटक रही
संग राम के वन में कोई नहीं।।

अपनी कलम से...

प्रदीप शर्मा
कक्षा- B.Sc III

जिन्दगी अभी बाकी है,
जो खो दिया वो काफी है।
देखना नहीं है मुड़के पीछे,
जो हमें दुख की ओर खींचे।
डरना नहीं है आने वाले कल से,
कर खत्म हर काम आज ही तू अपने यकीं से।
बन खुदा तू खुद का,
जीत ले तू दिल इस दुनिया में सभी का।
मंजिल तेरी, रास्ता तेरा, साथ कोई नहीं जाएगा,
साथ होंगे सब तेरे, जब तू कुछ बन जाएगा।

दहेज

यशिका अग्रवाल
कक्षा- B.A. II

घर बर्बाद हो गए, इस दहेज की बोली में
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में।
कितनों ने कन्या के अपनी, पीले हाथ कराने थे,
कहाँ-कहाँ तक मस्तक टेके, आती शर्म बताने में।
जिस पर बीती वही जानता, बात नहीं है कहने की,
जीवन भर के कर्ज लद गए, सीमा टूटी सहने की।
गहने, खेत, मकान बिक गए, सिर्फ मांग की रोली में,
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में।
पति-पत्नी के बीच खाईयाँ, खोदी इस शैतान ने,
सास-बहू को शत्रु बनाया देखो इस हैवान ने।
बे मतलब की बातों पर भी, रार मचायी जाती है,
क्रूर कर्म कर कहीं-कहीं तो, बहू जलायी जाती है।
दानवता आ घुसी, कहाँ से, मानवता की खोली में,
अर्थ चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में।
सहन मत करो क्रूर प्रथा यह, इसे सदा को दूर करो,
दानवता के अहंकार को, संकल्पों से चूर करो।
बहुत हो चुका नाच अशिव का, अब सज्जनता अपनाओ,
छोड़ रूढिया सदविवेक संग, निर्भय हो आगे आओ,
पापों का मत भरो खजाना, अब तो अपनी झोली में,
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में।
लाखों पर बर्बाद हुए इस, दहेज की बोली में।।

गिरना भी अच्छा है

मोनिका सिंह
कक्षा- B.Ed I

''गिरना भी अच्छा है,
औकात का पता चलता है
बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को, अपनो का पता चलता है।
जिन्हें गुस्सा आताहै,
वो लोग सच्चे होते हैं,
मैंने झूठे को अक्सर,
मुस्कुराते हुये देखा है।
सीख रही हूँ मैं भी,
मनुष्यों को पढ़ने का हुनर,
सुना है चेहरे पे
किताबों से ज्यादा लिखा होता है।

सच्ची बातें

निधि सिंह
कक्षा- B.A. III

1. कर्त्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता और..... धैर्य ही एक ऐसा कड़वा पौधा है जिस पर फल हमेशा मीठे आते है।
2. मुझे पता नहीं, पाप और पुण्य क्या है, बस इतना पता है, जिस कार्य से किसी का दिल दु:खे वो पाप है, और..... किसी के चेहरे पर हँसी आये वो पुण्य है।
3. समस्या जब अपनों से हो तब समाधान खोजना चाहिए न कि न्याय..... न्याय में एक खुश होता है तो दूसरा नाराज
4. जबकि समाधान में दोनों खुश होते हैं आये हो जब निभाने को किरदार जमीं पर तो कुछ ऐसा कर चलों की जमाना मिसाल दे।
5. किसी के कहने से यदि 'अच्छा' या 'बुरा' होने लगे तो ये संसार या तो 'स्वर्ग' बन जाये या पूरी तरह से 'नर्क' इसलिए ये ध्यान मत दो कि कौन क्या कहता है बस वो करो जो 'अच्छा' है और सच्चा है।
6. कभी ना कहो कि दिन अपने खराब है समझ लो कि कांटों से घिरे गए गुलाब हैं रखो हौंसला वो मंजर भी आयेगा, प्यासे के पास समन्दर भी आयेगा थककर ना बैठो ऐ मंजिल के मुसाफिर मंजिल भी मिलेगी और जीने का मजा भी आयेगा।
7. उबलते हुए पानी में जिस तरह प्रतिविम्ब नहीं देखा जा सकता उसी तरह क्रोध की स्थिति में सच को देखा नहीं जा सकता.....
8. कुछ रहम कर ऐ जिन्दगी थोड़ा संभल जाने दे तेरा अगला जख्म भी सह लेंगे..... पहले-पहले वाले को तो भर जाने दे।
9. कुछ उलझनों के हल, वक्त पर छोड़ देने चाहिए..... बेशक जवाब देर से मिलेंगे लेकिन बेहतरीन होंगे।
10. छोटी सी जिन्दगी है हंसकर जियो क्योंकि लौटकर सिर्फ यादें आती हैं वक्त नहीं।
11. प्यास लगी थी गजब की पर पानी में जहर था। पीते तो भी मर जाते, ना पीते तो भी मर जाते, यही दो मसले जिन्दगी भर न हल हुए..... जिन्दगी ने कहा थोड़ा और वक्त होता..... वक्त ने कहा, थोड़ा और सब्र होता.....

अनमोल वचन

कविता
कक्षा- B.A. II

1. जिन्दगी में दो लोगों का ख्याल रखना बहुत जरूरी है। पिता जिसने तुम्हारी जीत के लिए सब कुछ हारा हो। माँ जिसका तुमने हर दु:ख में पुकारा हो।
2. मैं बता दूँ आपको कि अच्छों की क्या पहचान है? वो हैं खुद अच्छे, जो औरों को नहीं कहते बुरा।
3. इन छ: का कभी त्याग न करें- सत्य, दान, कर्म, क्षमा, धैर्य और गुरु।
4. ईश्वर के मार्ग पर जब कोई एक कदम बढ़ाता है तो ईश्वर उसे थामने के लिए सौ कदम आगे बढ़ते हैं।
5. कहते हैं कि पहला प्यार भुलाया नहीं जाता, फिर पता नहीं लोग क्यों अपने माँ-बाप का प्यार भूल जाते हैं।
6. वक्त अच्छा जरूर आता है, पर वक्त परआता है। कागज अपनी किस्मत से उड़ता, लेकिन पतंग अपनी काबिलियत से, इसलिए किस्मत साथ दे या ना दे, काबिलियत जरूर साथ देती है।
7. महानता कभी ना गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।
8. विश्वास वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश किया जा सकता है।
9. एक सफल व्यक्ति वह है जो दूसरो के द्वारा अपने ऊपर फेंके गए ईटों से एक मजबूत नींव बना सकें।
10. ऐसा छात्र जो प्रश्न पूछता है वह पांच मिनट के लिए मूर्ख लगता है, लेकिन जो पूछता ही नहीं वह जिन्दगी भर मूर्ख रहता है।
11. जो क्षमा करता है और बीती बातों को भूल जाता है, उसे ईश्वर की ओर से पुरस्कार मिलता है।

नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है

अल्पना
कक्षा- B.A. I

प्रस्तावना- मदर टेरेसा आयरलैण्ड से 1929 की कोलकाता के लोरेटो कॉन्वेंट पहुँची। इसके बाद मदर टेरेसा ने पटना के होली फैमिली हॉस्पिटल से आवश्यक नर्सिग ट्रेनिंग पूरी की। इसके बाद मदर टेरेसा 1948 में कोलकाता वापस आ गई। मदर टेरेसा ने यहाँ के बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल खोले, तथा टेरेसा ने मिशनरीज ऑफ चैरिटी की स्थापना की। जिसे 1950 में रोमन कैथोलिक चर्च ने मान्यता प्रदान की। मदर टेरेसा की मिशनरीज संस्था ने 1996 तक करीब 125 देशों में 755 निराश्रित गृह खोले। जोकि तकरीबन 5 लाख लोगों की भूख मिटाने लगी। टेरेसा ने निर्मल हृदय और निर्मल शिशु व्यवन आश्रम की स्थापना की। निर्मल हृदय आश्रम में बीमारी से पीड़ित लोगों की सेवा के लिए था। जबकि निर्मल शिशु व्यवन आश्रम में बेघर और अनाथ बच्चों की देखभाल और पीड़ितों की सेवा टेरेसा स्वयं करती थीं। क्या मदर टेरेसा की लोगों के प्रति सहिष्णुता, समानुभूमित, संवेदना, उदारता, परोपकार यह प्रमाणित नहीं करता है कि नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है?

आइए कुछ अन्य उदाहरणों पर विचार करके एक निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। जैसे- परिवार के क्षेत्र में, राजनीति क्षेत्र में, प्रशासन क्षेत्र में, शिक्षा क्षेत्र में, स्वास्थ्य क्षेत्र में, पर्यावरण क्षेत्र आदि में प्रमाण के साथ स्पष्ट करेंगे कि नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।

परिवार क्षेत्र में:- माँ की ममता और स्नेह किसी भी मनुष्य के व्यक्ति के विकास में प्रमुख भूमिका निभाती है। माँ परिवार की नि:स्वार्थ और नि:शुल्क सेवा करती है। माँ बच्चे की पहली गुरू होती है। जिस प्रकार जीजाबाई ने शिवाजी को देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत कर दिया। ऐसे ही प्रत्येक माँ को अपने बच्चों में प्रारम्भ से ही देश-प्रेम का भाव तथा सेवा भाव से परिपूर्ण करना चाहिए।

निष्कर्ष:- उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से हमने देखा कि महिलाओं ने परिवार क्षेत्र, प्रशासनिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र, पर्यावरण क्षेत्र, शिक्षा क्षेत्र, स्वास्थ्य क्षेत्र में महिलाओं का सेवा भाव, समानुभूति, सत्यनिष्ठा, प्रेम, सहिष्णुता, संवेदना, उदारता, परोपकार आदि से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि नारी में ईश्वरीय गुण विद्यमान हैं। अर्थात् यह प्रमाणित होता है कि नारी ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।

साधना से सिद्धि तक

रेनू मीणा
कक्षा- B.A. II

जैसे कोई बीज जमीन में जाकर अपना सम्पूर्ण समर्पण कर देता है, तभी वह बीज से वृक्ष बन पाता है। वैसे ही साधक को साधना की भूमि में। गहराई में उतरकर अपनी वर्तमान मनोभूमि को मिटाना होता है। सम्पूर्ण समर्पण करना होता है, तभी उसके अन्दर एक नये मनुष्य का जन्म होता है। और उसका आमूलचूल रूपान्तरण होने लगता है। उसकी पूर्व की आदतें, मान्यताऐं, इच्छाऐं, कामनाऐं आदि सभी मर जाती है, तब मनुष्य की दृष्टि व्यापक हो जाती है। इस प्रकार, हम देखते हैं, कि यदि अध्ययन की साधना सच्ची हो तो साधना से सिद्धि अवश्य मिलती है। शास्त्रों में वर्णित साधना से सिद्धि के लक्षण साधक के जीवन में सचमुच अभिव्यक्त होने लगते हैं।

अत: हमारी साधना सफल नहीं होने का बस एक ही कारण है, और वह यह है कि हमने साधना के मर्म को नहीं समझा। चिन्तशुद्धि व मन को निर्मल बनाने की ओर कभी ध्यान ही नहीं दिया। इसलिए हम मन के विकारों से दूर नहीं हो पाए। हमने इस ओर ध्यान नहीं दिया कि हमारे गुरू ही हमारे आराध्य भावना की तरह है। जो साधना को सिद्धि तक से जाकर जीवन को सफल बना सकते हैं।

साधना का अर्थ याचना या कामना नहीं वरन् ईश्वरीय अनुशासन पर जीवन भर चलना है।

मेरी माँ

प्रीति राघव
कक्षा- M.A. I

कोई है जो मेरे लिए खास है कुछ भी कहो उससे हर आस है भला मुझे दर्द कैसा जब तक वो पास है ज्यादा तो कुछ नहीं ये मेरी माँ का एहसास है। मेरी माँ ही तो मेरे लिए खास है। वही मेरी सहेली वही मेरे जीवन की आस है। ईश्वर से मैं और क्या मांगू जब मेरी माँ मेरे पास है। जब कोई गलती हो जाती है मुझसे, तो डर सी जाती हूँ मैं तब मेरी माँ ही कहती है। डर मत लाडो अभी तेरी माँ तेरे साथ है। खिल जाता है मेरा चेहरा अक्सर ये सोचकर कि जीवन की सबसे कीमती चीज मेरे पास है। हर मुश्किल का सामना डट कर करो दोस्तों कोई हो ना हो आपकी माँ आपके साथ है। अच्छी लगे कविता अगर तो माँ के बारे में भी थोड़ा सोचते रहना जब तक सांसों में सांस है।

''हर बेटी के लिए उसकी माँ सबसे खास होती है क्योंकि माँ के बिना घर और मन सूना लगता है।''

गजल

कुमारी चमन चकोर
कक्षा- B.Ed II

बहुत सोचा, बहुत समझा, बहुत जाना जमाने को
रहा बाकी जमाने में तुम्हें बस आजमाने को
निशाना चूक ना जाए, जरा सी जी नजर बहके
हमेशा बाँध के रखना तुम निशाने को
चमकता चाँद पत्थर है वहाँ पर जाके हम समझे
मुझे तुम दूर ही रखो, कहो ना पास आने को
हंसी ये शाम का मौसम, परिंदों की ये आवाजें
मचलते तुम भी तो होंगे, मेरे नजदीक आने को
जमाना वे-मुरब्बत है, बहुत कुछ मुझसे कहता है।
कभी मैं कह नहीं पापा, मुरब्बत में जमाने को।

सफर

अर्जुन कुमार
कक्षा- B.Sc II

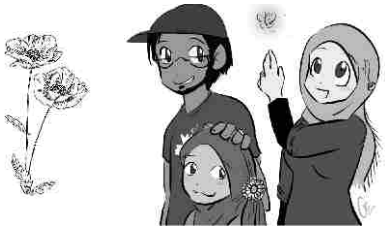

मंजिल को पाना ही क्या जरुरी है ?
सफर का भी अपना मजा है।
दूर कहीं रोशनी एक आम है,
मिल ही जाए तो क्या पता
एक दीया सिर्फ मजार का हो,
या हो सिर्फ एक पड़ाव, मंजिल न हो।
और फिर कौन सी मंजिल है आखिर आखिरी ?

जिंदगी तो खुद एक सफर है
इसलिए, यूँ न मचल, न हो बेचैन,
आस रख, हाँफ मत, कुछ देर रूक,
रास्ता तो देख कितना खूबसूरत है।
मंजिल को पाना ही क्या जरूरी है ?
सफर का भी अपना मजा है।

कुछ अच्छी बातें

कु० सपना
कक्षा- B.A. II

1. मित्र बनाने में सदा कंजूसी करें। पुराने परखे हुए मित्रों को जरा सी बात से मत ठुकरायें। दोस्त बढ़ाने की अपेक्षा दोस्ती कम करना ज्यादा बेहतर है।
2. सोच का ही फर्क होता है, वरना मुश्किलें वो औजार हैं, जो आपको कमजोर नहीं बल्कि मजबूत बनाने के लिए आती हैं।
3. कड़वा सत्य किसी व्यक्ति को ज्यादा सुधारना चाहोगे तो वो आपका दुश्मन बन जायेगा।
4. ''लोग क्या कहेंगे'' यह वाक्य हर दिन हजारों सपनों को मारता है।
5. सेल्फी निकालना तो सेकेण्ड्स का काम है, वक्त तो इमेज बनाने में लगता है।
6. रास्ते में अगर मंदिर देखों तो प्रार्थना नहीं करोगे तो चलेगा, पर रास्ते में एम्बुलेंस मिले तो प्रार्थना अवश्य करना शायद कोई जिंदगी बच जाए।
7. झूठ इसलिए बिक जाता है क्योंकि सच को खरीदने की सबकी औकात नहीं होती।
8. बेहतरीन इंसान अपनी मीठी जुबान से ही जाना जाता है, वरना अच्छी बातें तो दीवारों पर भी लिखी होती हैं।
9. आज भी लोग अच्छी सोच को नहीं बल्कि अच्छी सूरत को तरजीह देते हैं।
10. जरुरी नहीं हर गिफ्ट कोई चीज ही हो। प्रेम, परवाह और इज्जत भी बहुत अच्छे गिफ्ट हैं, कभी किसी को देकर तो देखें।
11. लोग जो अपनी जिंदगी का नियंत्रण अपने हाथों में नहीं लेते उनका नियंत्रण समय के हाथों में चला जाता है।
12. जिंदगी को सफल बनाने के लिए बातों से नहीं बातों से लड़ना पड़ता है।
13. अगर जिंदगी में कोई मुकाम हासिल करना है तो देर रात तक चैटिंग करने की जगह अपने कैरियर की सेटिंग करने पर फोकस करो।
14. ना ही मैं हारुँगी और ना ही अपने हौसलों को टूटने दूंगी, जो बुने हैं वो ना मैं वक्त को लुटने दूंगी, होगी मेरी भी जगह उन चमकते सितारों में, जो शुरू किया है सफर तो इसे अधूरा ना छूटने दूंगी।
15. जीवन में कठिनाईयां हमें बर्वाद करने नहीं बल्कि यह हजारों छुपी हुई सामर्थ्य और शक्तियों को बाहर निकालने में हमारी मदद करती है। कठिनाईयों के यह जान लेने दो कि, आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।
16. आपका हमेशा खुश रहना, आपके दुश्मनों के लिए सजा है।
17. चाहें कितनी भी अच्छी किताबें पढ़ ले, कितनी भी अच्छी बातें सुन लें, उनका कोई फायदा नहीं है जब तक कि हम उन बातों को अपने जीवन में नहीं अपनाते।

मेहनत

मयूरी भारद्वाज
कक्षा- B.Com III

कुछ करना है, तो डटकर चल।
थोड़ा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते है।
कभी इतिहास को पलटकर चल।।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के, दाम कैसा?
जब तक ना हांसिल हो मंजिल
तो राह में, आराम कैसा?
अर्जुन सा, निशाना रख।
मन में, ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है, बस उसी पे अपना ठिकाना रख।।
सोच मत, साकार कर।
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी और का ना इंतजार कर
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले हैं।.....
जो करते रहे इंतजार उनकी जिंदगी में आज भी झमेले हैं।

सफलता का गुरू मंत्र उड़ना है तो गिरना सीख लो

अर्चना शर्मा
कक्षा- B.A. I

दोस्तों आज मैं आपको सबसे बड़ा सफलता का गुरू मंत्र बताने जा रही हूँ। ये एक ऐसा गुरू मंत्र है जिसे अगर आपने अपनी जिन्दगी में ढाल लिया तो दुनिया की कोई ताकत आपको सफल होने से नहीं रोक सकती।

एक चिड़िया का बच्चा जब अपने घोंसले से पहली बार बाहर निकलता है ते उसके पंखों में जान नहीं होती। वो उड़ने की कोशिश करता है लेकिन जरा सा उड़कर गिर जाता है वह फिर से दम भरता है और फिर से उड़ने की कोशिश करता है लेकिन फिर गिरता है। वो उड़ता है और गिरता है। यही क्रम निरन्तर चलता जाता है। एक बार नहीं, दो बार नहीं बल्कि हजारों बार वो गिरता है लेकिन वो उड़ना नहीं छोड़ता और एक समय ऐसा भी आता है जब वो खुले आकाश में आनन्द से उड़ता है। मेरे दोस्त जिन्दगी में अगर उड़ना है तो गिरना सीख लो क्योंकि आप गिरोगे एक बार नहीं बल्कि कई बार आपको गिरकर फिर उठना है और फिर उड़ना है। याद करो वो बचपन के दिन, जब बच्चा छोटा होता है तो वो चलने की कोशिश करता है। पहली बार चलता है तो गिरता है आप भी गिरे होंगे। एक बार नहीं कई बार और कई बार तो बच्चों को चोट भी लग जाती है किसी का दाँत टूट जाता है, या सिर पर चोट लग जाने से खून तक निकल आता है पट्टी बांधनी पड़ती है लेकिन वो बच्चा चलना नहीं छोड़ता। सिर पे पट्टी बंधी है चोट लगी है दर्द भी हुआ है लेकिन माँ की नजर बचते ही वो फिर से चलने की कोशिश करता है। उसे गिरने का डर नहीं है और ना ही किसी चोट का डर है। उसको चलना सीखना है और वो तब तक नहीं मानता जब तक चल ना ले सोचो उस बच्चे में कितनी हिम्मत है, उसके मन में एक लक्ष्य है-चलना सीखना और वो चलना सीख भी जाता है क्योंकि वो कभी गिरने से डरता ही नहीं है लेकिन जब यही बच्चा बड़ा हो जाता है, उसके अंदर समझ आ जाती है तो वो डरने लगता है। इंसान जब भी कोई नया काम करने की कोशिश करता है उसके मन में गिरने का डर होता है।

1. प्रार्थी डरता है कि पहला इंटरव्यू है नौकरी लगेगी या नहीं लगेगी।
2. बिजनेसमैन डरता है कि पहला बिजनेस कर तो लिया लेकिन चलेगा या नहीं चलेगा।
3. क्रिकेटर सोचता है कि मेरा पहला मैच है रन बना पाऊंगा या नहीं बना पाऊंगा।

अरे नादान मानव, तुमसे ज्यादा साहसी तो वो बच्चा है जो हजार बार गिरकर भी गिरने से नहीं डरता। सर से खून भी आ जाये तो भी नन्हें कदम फिर से चलने की कोशिश करते हैं और एक तुम हो जो थोड़े समझदार क्या हुए तुम तो समझदार होकर भी नासमझ हो गए। दुनिया में कोई भी इंसान इतनी आसानी से सफल नहीं होता, ठोकरे खानी पड़ती हैं। अब ठोकरों से डरोगे तो कभी सफल नहीं हो पाओगे। राह में चाहे जितनी भी ठोकरे आये आप अपने लक्ष्य को मत छोड़ो। ये ठोकरें तो आपकी परीक्षा लेती हैं, आपके कदम को मजबूत बनाती है ताकि जिन्दगी में फिर कभी ठोकर ना खानी पड़े।

दोस्तों कोशिश करोगे तो सफलता अवश्य मिलेगी और हाँ एक बात मन में गॉठ बांध लो कि उड़ना है तो गिरना पड़ेगा।

कलम

कृतिका
कक्षा- B.Com. III

कलम देखने में तो छोटा है ये,
बड़े से बड़े काम करता है ये,
कटारी है न कोई तलवार है,
बहुत तेज इसकी मगर धार है।
जो है दोस्त उनसे करता है प्यार,
कलेजे से दुश्मन के होता है पार।
कलम देखने में तो छोटा है ये,
बड़े से बड़े काम करता है ये।
कहो इल्म दौलत की कुँजी इसे,
तरक्की के जिससे खुले रास्ते।
न होता कलम और कागज अगर,
तो ये सब किताबें न आती नजर।
कलम देखने में तो छोटा है ये,
बड़े से बड़े काम करता है ये।
कलम क्या मिला एक दौलत मिली,
हमें लिखने-पढ़ने की इज्जत मिली।
कलम से जो लिखना न आता हमें,
न कोई अपने पास बिठाता हमें।
कलम देखने में तो छोटा है ये,
बड़े से बड़े काम करता है ये।

लक्ष्य की प्राप्ति

मीनाक्षी लोधी
कक्षा- B.A. II

एक राज्य में एक राजा था, राजा बहुत बुद्धिमान, धार्मिक प्रवृति का था। वह अपने राज्य की जनता को बहुत प्रेम करता था। उसके राज्य में लोग बहुत खुश रहते थे क्योंकि राजा हमेशा अपनी प्रजा के बारे में सोचता और उनके हित में कार्य करता रहता था। राजा धर्म और अपने कर्म पर विश्वास करता था। एक बार की बात है कि राजा ने 'जंगल में आकर भगवान की घोर तपस्या की। राजा की तपस्या से भगवान बहुत खुश हुए। एक दिन भगवान उनके सामने आकर प्रकट हुए। और राजा से बोले हे! राजन मैं आपके तप से खुश हूँ अत: आपको जो वरदान मांगना है मांगो राजा भगवान के दर्शन पाकर अति प्रसन्न हुआ, और उनके चरणों में प्रणाम किया। राजा ने कहा हे! भगवान आपकी कृपा से मैं और मेरी प्रजा बहुत प्रसन्न है। उसे किसी भी कोई बात की कमी नहीं है। मुझे आपके दर्शन हो गये इसी में मेरा कल्याण है। अत: मुझको वरदान नहीं चाहिए। राजा के बार-बार मना करने पर भगवान ने कहा आपने मेरी तपस्या की है। इसलिये वरदान तो आपको मांगना ही पड़ेगा। राजा बहुत देर सोचता रहा , सोचते-सोचते उसके मन में विचार आया कि मैंने तो ईश्वर के दर्शन कर लिये लेकिन मेरे परिवार व मेरी प्रजा को दर्शन नहीं हुए। इसलिये मुझे यही वरदान मांगना चाहिए। राजा ने फिर भगवान से यह वरदान मांगा कि जो दर्शन आपने मुझे दिये हैं, वह आप मेरी प्रजा को दर्शन दे तो मैं धन्य हो जाऊंगा। राजा की यह बात सुनकर भगवान ने उत्तर दिया - हे राजन, यह सम्भव नहीं है। आपने मेरा तप किया है आपको दर्शन की प्राप्ति हो गई है। पूरी प्रजा को नहीं हो सकती है। राजा ने भगवान से कहा तो आप अपना वरदान वापस ले लो। भगवान के बार-बार मना करने पर राजा ने एक नहीं मानी। लेकिन भगवान ने अन्त में कहा हे! राजन जैसे आप चाहते हैं। वैसा ही होगा लेकिन आपको कल उस पहाड़ी पर अपनी प्रजा के साथ आना पड़ेगा तब दर्शन होंगे। राजा बहुत खुश होता हुआ अपने दरबार आया और पूरे राज्य में घोषणा करवा दी, अगले दिन राजा अपने परिवार सहित भगवान की बताई हुई पहाड़ी की ओर चल दिये। राजा आगे-आगे चल रहे थे और प्रजा पीछे-पीछे पहाड़ी पर चढ़ते समय रास्ते में बहुत रुपये बिखरे पड़े थे। 25 प्रतिशत जनता उन पैसों को बटोरने में लग गयी। आगे जाकर उन्हें चांदी के सिक्के जमीन पर पढ़े मिले। 25 प्रतिशत लोग उनको इकट्ठा करने में लग गये। आगे जाकर उन्हें सोने के सिक्के मिले 50 प्रतिशत लोग उनके पाने में लगे रहें। अब राजा उस स्थान पर पहुंच गया जहां भगवान ने कहा था आगे सामने भगवान खड़े थे। भगवान ने कहा राजा आप अकेले आये है। प्रजा कहाँ है। राजा ने देखा तो पीछे कोई नहीं था भगवान ने कहाँ जिस व्यक्ति को ईश्वर की प्राप्ति होती है। उसे धन, दौलत आदि उसके मार्ग में बांधा नहीं डाल सकती है। अत: इस कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उसी पर ध्यान देना चाहिए मन को इधर उधर नहीं भटकाना चाहिए। तभी हम सफल होते हैं।

रोज सिर्फ इतना करो

कुशाग्र
कक्षा- B.Com. III

गम को	→	Delete
खुशी को	→	Save
रिश्तों को	→	Recharge
दोस्ती को	→	download
दुश्मनी को	→	erase
सच का	→	broadcast
झूठ का	→	switch off
टेंशन को	→	not recharge
प्यार को	→	in coming
नफरत को	→	out going
ऑसुओं को	→	out box
हंसी को	→	in box
गुस्से को	→	hold
मुस्कान को	→	Send
हेल्प को	→	Ok
दिल को करो	→	Vibrate
फिर देखो जिंदगी का	→	Ringtone
कितना प्यार बजता है।		

दूसरों के विचारों को दे सम्मान

हेमलता
कक्षा- M.Sc II Chemistry

दूसरों के विचारों को आदर देने से हमारे अन्दर उदारता विकसित होती है। उदार होना बड़प्पन की निशानी है। आमतौर पर हम यह सोचते है कि जो बात हम कह रहे हैं वही सही है। इसी कारण अक्सर हम दूसरों के विचारों से सहमत नहीं हो पाते हैं। ऐसी धारणा ठीक नहीं है। हमें दूसरों के विचारों का सम्मान करते हुए उन पर भी विचार करना चाहिए। हमारा भारत तो विविध संस्कृतियों का देश है, जहाँ पर विभिन्न धर्म, विभिन्न जातियाँ भाषाएँ, भांति-भांति के रीति-रिवाज, विभिन्न भौगोलिक वातावरण, तरह-तरह के स्वादिष्ट खानपान की विविधता है तो जाहिर है कि लोगों के विचार और जीवनशैली भी भिन्न होगी। यदि हम इस विभिन्नता का सम्मान नहीं करेंगे, तो हम इस विभिन्नता का सम्मान न करने के कारण लड़ते रहेगे। इसलिए उदार बनें और सभी के विचारों को भरपूर सम्मान दें।

- सभी मायने में उदार व्यक्ति वह है, जो दूसरों के विचार और जीवन शैली का भरपूर सम्मान करें। यदि हमारे बीच कोई मांसाहारी दोस्त है और हम शाकाहारी के समर्थक हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि इस बात पर उससे दुश्मनी ठान लें और उसे बुरा - भला कहें।
- उदारता तभी आती है, जब हम समाज में हो रहे परिवर्तनों के अनुसार खुद को बदल लें। समय के साथ चलने को तैयार रहें।
- एक ही विचार को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। हो सकता है जो आपको सही लग रहा हो अन्य व्यक्तियों को न लगे। इसलिए दूसरों के विचारों का सम्मान करें।
- कभी भी अपनी बात दूसरों पर थोपने का प्रयास न करें। जरुरी नहीं कि जो बात हम मान रहे हैं दूसरा भी उसे उसी रूप में मान लें।
- इसकी शुरुआत अपने घर से ही करें। अपने घर के सभी लोगों के विचारों का सम्मान करें। हो सकता है कि दादी या नानी के विचारों को पुराना मानते हो आप उनसे सहमत न हो फिर भी उनकी बात को अनुचित न ठहरायें बल्कि उनकी बातों को समझें और उनसे सीख लें। बातों ही बातों में आप उनसे विनम्रतापूर्वक आज के समय में हो रहे बदलावों की चर्चा कर सकते हैं।
  अभिभावकों के लिए भी जरुरी है कि वह अपने बच्चों पर अपनी बातों को जबरदस्ती न थोपें। उन्हें अपने निर्णय स्वयं करने दें। उनके दृष्टिकोण से सोचने पर आप उनकी मदद कर सकते हैं। कभी किसी धर्म संप्रदाय को गलत न ठहरायें। बच्चों को भी हमेशा यही सीख दें कि सभी धर्म तथा संप्रदाय समान है। सारे धर्म हमें अच्छा इंसान बनाते हैं।

अत: सभी को अपने विचारों के साथ-साथ दूसरों के विचारों का भी सम्मान करना चाहिए।

जिन्दगी

गौरव कुमार
कक्षा- B.Sc III

तू जिन्दगी को जी उसे समझने की
कोशिश ना कर.....
सुन्दर सपनों के ताने बाने बन उसमें उलझने की
कोशिश ना कर.....
चलते वक्त के साथ तू भी चल, उसमें सिमटने की
कोशिश ना कर.....
अपने हाथों को फैला, खुलकर साँस ले अंदर ही अंदर घुटने की
कोशिश ना कर.....
मन में चल रहे युद्ध को विराम दे,
खामख्वाह खुद से लड़ने की
कोशिश ना कर.....
कुछ बातें भगवान पर छोड़ दे, सब कुछ खुद सुलझने की
कोशिश ना कर.....
जो मिल गया उसी में खुश रहा कर,
जो सुकून छीन ले वो पाने की
कोशिश ना कर.....
रास्ते की सुंदरता का लुत्फ उठा.....
मंजिल पर जल्दी पहुंचने की
कोशिश ना कर.....
तू जिंदगी को भी सुलझाने की
कोशिश ना कर.....

नई शिक्षा नीति 2020

पायल
कक्षा- B.Ed. I

नई शिक्षा नीति 2020 भारत की शिक्षा नीति है जिसे भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई 2020 को घोषित किया गया सन् 1986 में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है। यह नीति अंतरिक्ष वैज्ञानिक के कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति रिपोर्ट पर आधारित है।

प्रमुख परिवर्तन:-

1. शिक्षा नीति में यह पहला परिवर्तन बहुत पहले लिया गया था लेकिन अबकी बार 2020 में जारी किया गया और यह बहुत अच्छा परिवर्तन है।
2. पांचवीं कक्षा तक की शिक्षा में मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया। साथ ही मातृभाषा को कक्षा-8 और आगे की शिक्षा के लिए प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।
3. अब अनुसंधान में जाने के लिए तीन साल के स्नातक डिग्री के बाद एक साल स्नातकोत्तर करके पीएचडी में प्रवेश लिया जा सकता है।
4. पहले समूह के अनुसार विषय चुने जाते थे, किन्तु अब उसमें भी बदलाव किया गया है जो छात्र इंजीनियरिंग कर रहे हैं वह संगीत को भी अपने विषय के साथ पढ़ सकते हैं।
5. नेशनल साइंस फाउंडेशन के तर्ज पर नेशनल रिसर्च फाउंडेशन लाई जाएगी जिससे पाठ्यक्रम में विज्ञान के साथ सामाजिक विज्ञान को भी शामिल किया जाएगा। नीति में पहले और दूसरे कक्षा में गणित और भाषा एवं चौथे और पांचवीं कक्षा के बालकों के लेखन पर जोर देने की बात कहीं गई है।
6. स्कूलों में 10+2 फार्मेट के स्थान पर 5+3+3+4 फार्मेट को शामिल किया जाएगा। इसके तहत पहले पाँच साल में प्री प्राइमरी स्कूल के तीन साल और कक्षा एक और कक्षा दो सहित फाउंडेशन स्टेज शामिल होंगे। पहले जहाँ सरकारी स्कूल कक्षा एक से शुरू होती थीं वहीं अब तीन साल के प्री-प्राइमरी के बाद कक्षा एक शुरू होगी।
7. इसके बाद कक्षा 3-5 के तीन साल शामिल हैं। इसके बाद 3 साल का मिडिल स्टेज (कक्षा 9 से 12 वीं तक का) 4 साल का होगा। पहले जहाँ 11 वीं कक्षा से विषय चुनने की आजादी थी वहीं एवं 9 वीं कक्षा से रहेगी।
8. किसी कारणवश विद्यार्थी उच्च शिक्षा के बीच में ही कोर्स छोड़ कर चले जाते है। ऐसा करने पर उन्हें कुछ नहीं मिलता एवं उन्हें डिग्री के लिए दोबारा से नई शुरुआत करनी पड़ती है। नई नीति में पहले वर्ष में कोर्स को छोड़ने पर प्रमाण पत्र, दूसरे वर्ष पर छोड़ने पर डिप्लोमा एवं अन्तिम वर्ष में छोड़ने पर डिग्री देने का प्रावधान है।

कोरोना का कहर

भूमिका वार्ष्णेय
कक्षा- B.Com. III

ओ कोरोना तू कहाँ से आया,
सब कुछ हो गया पराया-पराया।
तेरा आना किसी को न भाया,
मम्मी बोले हाथ धोए,
घर से बाहर कहीं ना जाए।
सखा सहेली सब भूल जाए,
स्कूल के टीचर की याद संताए।
नानी का घर हमें बुलाए,
शॉपिंग के लिए मन ललचाए।
बर्थ-डे फीका पड़ जाए।
ओ कोरोना तू बता हम छोटे-छोटे,
बच्चे अपना दिल कैसे बहलायें।
तेरा भय इतना सताए,
ओ कोरोना तुझसे नहीं डरते हम,
हममे है तुझसे लड़ने का दम।
सोशल डिस्टेंसिंग निभाएंगे,
सरकार के रूल्स अपनाएंगे।
घर में बैठकर तुझे हराएंगे,
फिर अपना जीवन खुशहाल बनाएंगे।

सच्चा ज्ञान पाने की उम्र

प्रभाकर
कक्षा- B.Sc II

एक राजा वेश बदलकर अपनी प्रजा का हाल चाल लेता रहता थां एक बार जैसे ही वह महल से बाहर निकला कि उसे बाहर एक वृद्ध किसान मिल गया, जिसके बाल पूरी तरह सफेद हो गए थे, लेकिन उसका चेहरा किसी युवा की तरह तेजोमय था। राजा ने उस वृद्ध किसान से उसका हाल-चाल पूछा और उसकी उम्र भी पूछी। किसान ने अपनी उम्र 4 वर्ष बताई। राजा ने वृद्ध से कहा आपके बाल पक गए हैं, शरीर में झुर्रियां पड़ गई हैं। फिर भी आप अपनी उम्र 4 वर्ष ही बता रहे हो।

वृद्ध ने गंभीर होकर कहा, मेरी उम्र 80 साल है, लेकिन अपनी जिंदगी के 76 वर्ष धन कमाने, शादी-ब्याह करने और बच्चे पैदा करने में गंवा दिए। ऐसा जीवन तो कोई पशु भी जी सकता है, इसलिए इस काल को जीवन में शामिल नहीं किया जा सकता है। यह बात मुझे चार वर्ष पहले समझ आई और मैंने अपना जीवन ईश्वर की उपासना, जप-तप करूणा और सेवा में लगा दिया। इसलिए मैं अपने आपको सहज 4 वर्ष का ही मानता हूँ।

कथासार- जीवन का असली उद्देश्य सज्जनता का सच्चा ज्ञान पाना ही है।

बगीचा मेरी सन्तान

विपिन कुमार
कक्षा- B.A. I

हमारे शहर में एक वृद्ध व्यक्ति रहा करते है। जिनकी कोई सन्तान नहीं थी। उन्होंने अपने जीवन में अपार धन कमाया परन्तु सन्तान धन प्राप्त न कर सके। जिस कारण वह उदास रहा करते थे। एक दिन वह वृद्ध व्यक्ति एक बगीचे में घूमने गये उस बगीचे में उन्होंने रंग बिरंगे फूल देखें, फूलों की खुशबू वृद्ध व्यक्ति को मोहित कर गयी अत व्यक्ति अपनी उद्धासीनता को भूलकर फूल की मनमोहक खुशबू में खो गया। वृद्ध व्यक्ति पुनः घर लौटकर आया लेकिन उसके दिमाग में वहीं फूलों को खुशबू महक रही थी तत्पश्चात् वृद्ध व्यक्ति ने बगीचा लगाने का निर्णय किया। बगीचे में विभिन्न के पेड़-पौधे लगाये कुछ दिनों में उन पेड़ पौधों, फूल पत्तियों ने एक सुन्दर बगीचे का रूप धारण कर लिया। बगीचे में अत्यधिक सुगंधित फूल थे। जिसकी खुशबू वहाँ के पूरे वातावरण को महका देती थी जिससे वहां के पास वाले रास्ते से होकर गुजरने वाले व्यक्ति फूलों को महक सूंघकर बगीचे की तरफ खिंचा चला आता था। थोड़े ही दिनों में बगीचे की चर्चा पूरे शहर में फैलने लगी और अब लोग दूर-दूर से आकर बगीचे को देखने लगे। वृद्ध व्यक्ति अब बहुत खुश था। वृद्ध व्यक्ति ने बगीचे को अपनी सन्तान की तरह बड़ा किया और उसी खुशी के साथ इस संसार से विदा हो गया। वह बगीचा वृद्ध व्यक्ति के मरने के बाद भी वृद्ध के नाम को चारों दिशाओं में अपनी खुशबू की तरहा महकाता रहा।

गुरु वंदना

कु० गुँजन
कक्षा- B.Sc II

गुरु वही जो जीना सिखा दे
आपकी आपसे पहचान करा दे
तराश दे हीरे की तरह तुमको
दुनिया के रास्तों पे चलना सिखा दे
कर दे कायाकल्प वो तुम्हारा
सच और झूठ से साकार करा दे
हमेशा दिखाए सच्चा मार्ग वो तुम्हे
तुम्हें एक अच्छा इंसान बना दे
मुश्किलों से लड़कर आगे उठ जाओ तुम
तुम्हें वो इतना समझदार बना दे
बताये वो तुम्हें जीत जाना ही सब कुछ नहीं
हारकर जीत जाने का हुनर सिखा दे
गुरु वही जो जीना सिखा दें, आपकी आपसे पहचान करा दे।

बेटी

छाया शर्मा
कक्षा- B.Sc II

जब जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी,
आँगन की चिड़ियाँ है बेटी।
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी?
नये नये रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी,
बार बार याद आती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं हैं बेटी।
बहुत छोटा सा सफर होता है बेटी के साथ,
बहुम कम वक्त के लिए वह होती हमारे पास
असीम दुलार पाने की हकदार हैं बेटी,
समझो भगवान का आर्शीवाद है बेटी।

गायन विप्लव

कु० सांक्षी
कक्षा- M.Sc I Chemistry

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए।

प्राणों के लाले पड़ जाए,
त्राहि-त्राहि स्वर नभ में छाए।
नाश और सत्यानाशों का,
धुँआधार जग में छा जाए।

बरसे आग, जल्द जल जाएं,
भस्मसात् भूधर हो जाएं।
पाप पुण्य सदभावों की,
धूल उड़े उठ दाए-बाए।

नभ का वक्षस्थल फट जाए,
तारे टूक-टूक हो जाए,
जिससे उथल-पुथल मच जाए।

माता की छाती का अमृतमय
व कालकूट हो जाए,
आंखों का पानी सूखे
हो वह खून की घूंट हो जाए।

क्लास मॉनीटर

मेघा सरीन
कक्षा- B.Com. III

जो क्लास में बने मॉनीटर,
कोरी शान दिखाते हैं।

आता जाता कुछ भी नहीं,
पर हम पर रोब जमाते हैं।

जब क्लास में टीचर नहीं,
तो खुद टीचर बन जाते हैं।

कॉपी पेंसिल लेकर,
बस नाम लिखने लग जाते हैं।

खुद तो हमेशा बातें करें,
हमें चुप करवाते हैं।

अपनी तो बस गलती माफ,
हमें बलि चढ़ाते हैं।

क्लास तो संभाल पाते नहीं,
बस चीखते और चिल्लाते हैं।

भगवान बचाए इन मॉनीटर से
इन्हें हम नहीं चाहते हैं।

संकट आये सोच समझकर आये

शिवा भारद्वाज
कक्षा- B.Ed I

अगर व्यक्ति पर कोई संकट या आपत्ति आती है तो व्यक्ति कहते है कि हम पर बहुत बड़ा संकट आया है। संकट के समय तो पता ही चलता है कि व्यक्ति किन परिस्थितियों से लड़कर इस मुकाम पर पहुंचा है। कुछ साल पहले एक मूवी रिलीज हुई थी उसका नाम है 'SUPER 30' जिसमें भारत के महान गणितज्ञ 'आनंद कुमार जी' के जीवन पर प्रकाश डाला गया है इस मूवी में एक बहुत अच्छा वाक्य बोला गया था जो है 'आपत्ति ही आविष्कार की जननी है'। ये वाक्य वास्तव में अपने नाम के अनुरूप ही है व्यक्ति को कोई भी अच्छा काम करने से कोई नहीं रोक सकता। चाहें उस पर कितनी भी परेशानी आयी हों। जिस प्रकार सूरज की प्रकाश की किरणों को कोई नहीं रोक सकता। सूरज का प्रकाश क्या आज तक किसी पर रूका है सभी व्यक्ति अपने घरों में शीशे लगवाते है घर के मुख्य दीवार पर या चारों तरफ तो उससे क्या होता है वायु तो अंदर प्रवेश नहीं कर पाती लेकिन सूरज का प्रकाश उस शीशे पर जरूर पड़ेगा और उसको गर्म कर देगा। लेकिन वायु अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाती है। इसी प्रकार बाँधाएं भी सभी के जीवन में आती है और सूरज के भी। जब बारिश का मौसम होता है तो सूरज को बादल ढक देते हैं। लेकिन वह मेहनत करके एक दिन बाद। दस दिन बाद दर्शन जरूर देता है तो मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि हमें संकट के समय घबराना नहीं चाहिए उसका डटकर सामना करना चाहिए ताकि आने वाला जीवन सभी के लिए मिसाल बन जाए।

आज का अन्नदाता

रजनी कुमारी
कक्षा- B.Ed I

आज के दौर में वही परेशान है,
वो मेहनत करने वाला किसान है,
सरकार वादे पर वादा कर रही है,
लेकिन किसान की किस्मत नहीं बदल रही है
पक्ष हो या विपक्ष दोनों ही छल रही है,
यहाँ तो सरकार भी भगवान भरोसे चल रही है।
आज के दौर में वही परेशान है,
जो मेहनत करने वाला किसान है?
कर्ज के दवाब में किसान आत्महत्या कर रहा है,
किसान आन्दोलन के नाम पर बेमौत मर रहा है,
देश का किसान कागजों में खूब तरक्की कर रहा है,
अपने हक के लिए सड़कों पर ठंड में मर रहा है।
आज के दौर में वही परेशान है,
जो मेहनत करने वाला किसान है?
किसानों को राह खलता है,
सत्ता हमेशा उसे छलता है,
किसान परेशानी की आग में जलता है
पर उनकी किस्मत नहीं बदलता है।
आज के दौर में वही परेशान है,
जो मेहनत करने वाला किसान है?

राम

शिवम् शर्मा
कक्षा- B.Ed I

राम उठत, राम चलत, राम शाम-भोर है।
राम बुद्धि, राम चित्त, राम मन विभोर है।।
राम रात्रि, राम दिवस, राम स्वप्न-शयन है।
राम काल, राम कला, राम मास-अयन है।।

राम शब्द, राम-अर्थ, रामहि परमार्थ है।
राम कर्म, राम भाग्य, रामहि पुरुषार्थ है।।
राम स्नेह, राम राग, रामहि अनुराग है।
राम कली, राम कुसुम, रामहि पराग है।।
राम भोग, राम त्याग, राम तत्व ज्ञान है।
राम भक्ति, राम प्रेम, रामहि विज्ञान है।।
राम स्वर्ग, राम मोक्ष, राम परम साध्य है।
राम जीव, राम ब्रह्म, रामहि आराध्य है।
।।जय श्री राम ।।

माँ पर सुविचार

शिवांगी शर्मा
कक्षा- B.Ed I

माँ, जिसके बारे में जितना बताया जाए उतना कम है। एक इंसान अगर किसी काबिल होता है तो उसके पीछे भी माँ के दिए संस्कार और उपदेश होते हैं। माँ भगवान का ही तो दूसरा रूप है। जिस इंसान ने अपनी माँ को उसके जीवनकाल में खुश रखा उसने समझो भगवान पा लिया। बस उसी माँ के आशीर्वाद से आज मैं माँ पर सुविचार की कुछ पंक्तियाँ लिख रही हूँ। माँ के लिए कुछ शब्द ''माँ पर सुविचार'' में:-

- इन्सान की सबसे अच्छी दोस्त उसकी माँ होती है।
- उम्र भले ही कितनी भी हो जाए सुकून तो माँ की गोद में ही आता है।
- संसार में चाहे कितने भी सुन्दर चेहरे हों लेकिन माँ से सुन्दर कोई भी नहीं है। उसी तरह माँ के लिए भी सबसे सुन्दर चेहरा उसकी संतान का होता है।
- माँ अपनी खुशी सदा अपने बच्चों में ही देखती है।
- एक छोटे से घर का गूगल माँ होती है। जिसे हर चीज पता होती है। आपके सामान से लेकर आपकी भावनाओं तक।
- बच्चे बड़े होने पर माँ को भूखा छोड़ सकते है लेकिन माँ बच्चों के बूढ़े होने पर भी उन्हें खाना खिलाने की हिम्मत रखी है।
- घर तो माँ से होता है। वरना ईटों का तो सिर्फ मकान होता है।
- हर इंसान का पहला प्यार उसकी माँ होती है।
- जमाना कहाँ गलतियां माफ करता है साहब, वो तो माँ है जो मुस्कुरा कर हर खता भुला देती है।
- दुनिया में मशहूर नहीं है तो क्या? मेरी माँ के हाथों का खाना सबसे ज्यादा लजीज होता है। माँ की लोरी कानों में आज भी अमृत घोल देती है। जिंदगी जीने की सीख देने वाली वही तो मेरी सबसे पसंदीदा अध्यापक है।
- अगर मेरे अन्दर कोई बुराई है तो उसकी जिम्मेदार मैं खुद हूँ और अगर मेरे अन्दर कोई अच्छाई है तो उसकी जिम्मेदार मेरी माँ है।
- माँ को हमारी समस्याओं से परेशानी हो सकती है। हमसे नहीं। वो इंसान कभी गरीब नहीं हो सकता जिसके सिर पर माँ का साया होता है।
- माँ की सारी तकलीफें दूर हो जाती हैं। जब उसकी संतान उसे प्यार से गले लगाती है।
- अपने बच्चों के सपनों के लिए अपनी बहुत-सी ख्वाहिशों का गला सिर्फ माँ ही घोंट सकती है। माँ ही है, जिसने ध्रुव, प्रहलाद, गुरु नानक, कबीरदास, तुलसीदास और बहुत से महान पुरुषों को जन्म दिया। इन सबके महान बनने का कारण माँ ही है।
- शब्दों को तो सारी दुनिया जानती है लेकिन खामोशी को तो सिर्फ माँ पहचानती है। तकलीफ बच्चे को होती है। और वो सारी रात नहीं सोता। कैसे बताऊँ उसके बारे में, माँ कभी शब्दों में बयान नहीं होती।
- परिस्थितियां बदलती रहती है लेकिन माँ का प्यार नहीं बदलता। दुनिया भर में सबसे सुरक्षित जगह माँ की गोद है।
- हम सबसे अच्छे है दुनिया को ये दिखाने के लिए हमें खुद को साबित करना पड़ता है। एक माँ ही है जिसे ये बात हमारे जन्म से ही पता होती है।
- संसार में सबसे अच्छी चीज माँ की आंखों में खुशी के आंसू है।
- प्यार शब्द की सबसे उत्तम परिभाषा है :**'माँ'**

कोरोनाकाल

लवी शर्मा
कक्षा- B.A. I

कोरोना महामारी से विश्व भर में अनेक प्रकार के नुकसान हुए हैं। दुनिया भर में ना जाने कितने लोगों को भूखा सोना पड़ा। अपने शहर अपने गाँव में पहुंचने के लिए लोगों को पैदल चलकर अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा।

शायद ही दुनिया में पहली बार ऐसा हुआ कि लोगों के आने जाने पर नाकाबन्दी कर दी गई। शिक्षा की ओर से भी बच्चों को समस्या सामना करना पड़ा। लेकिन धीरे-धीरे भारतवासियों ने इस समस्या से उभरना सीख लिया। सभी भारतवासियों ने अपने-अपने कार्य क्षेत्र में सावधानी व सुरक्षा कवच के साथ आगे बढ़ना सीख लिया।

इस महामारी से लोगों को बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ा मानते है। लेकिन जो हमारे देश में कुछ ऐसे परिवार जो शहर रहने की वजह से परिवार को समय नहीं दे पाते थे। महामारी के चलते लॉकडाउन की वजह से लोगों ने अपने परिवार के साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत किया। जिससे परिवाारिक सम्बन्ध काफी हद तक बेहतर हो गए।

भारतीया संस्कृतिः

रुचि शर्मा
कक्षा- B.Ed II

भारतीया संस्कृतिः विश्ववारा संस्कृतिः। वस्तुतः विश्वसंस्कृतिः इयम्। इयं संस्कृतिः न केवल भारतराष्ट्रस्य चपि भारतवासिनां हितं चिन्तयति। इयं संस्कृतिः समस्त विश्वस्य समस्त मानवा चे कल्याणं चिन्तयति। विश्वस्य अन्याः संस्कृतस्यः कवल जातिविशेषस्य, धर्मविशेषस्य राष्ट्रविशेषस्य वा पक्षं पुष्णन्ति। भारतीया संस्कृतः विश्वशान्ति कामयते, सकलमेवभूतलं कुटुम्वसदश वर्तते। अतऐव भारतीया संस्कृति दैषदैन्यहिंसाऽत्याचार मुक्तं समाज कल्पते सर्वे सुखिनो भवन्तु। सर्वे निश्मया सन्त। सर्वे जनाः भद्रामि भट्ट पश्यन्तु, कश्चिदपि जनः संसारेऽस्मिन दुःखभाजनं न भवेत्। ईदशी मंगलमयी सङ्कल्पना केवल भारतीय संस्कृतिरेव वर्तते।

अनेकत्येऽपि पश्यति एकत्वं भारतीया संस्कृतिः। इयमेवास्यां उदारदति? सर्वेषा मानमानां लक्ष्य वर्त्तते परमेश्वर राधनमात्रं परन्तु तेषा आराधनमार्गाः भिन्नाः। कोऽपि शैवः कोऽपि शाक्तः कोऽपि द्वैतजनः कोडपि बौद्धः, कोऽपि जैनः कोऽपि तान्त्रिकः।

किञ्च, केचन जनाः खिस्तेस्लाम मतानुयायिनः परन्तु एवं सत्यपि ईश्वराधने न कोऽपि विरोधः। एवं हि भारतीय संस्कृतिः व्यक्ति स्वातन्त्रपं समर्थयते। अत एवं उक्तं भारतीया संस्कृतिः विविधतायां एकतां आवहति।।

मूर्खः अनुचरः

अनुराधा शर्मा
कक्षा- B.A. III

कश्चन महाराजः आसीत। तस्य प्रासादे कश्चंन वानरः आसीत्। सः वानरः महाराज्ञः अतीव विश्वासपात्रम् अनुचरः। अतः राजभवने सर्वत्र अपि तस्य प्रवेशः अनुमतः आसीत्। एकदा राजा अन्तः पुरे निद्रां कुर्वन आसीत्। तदा वानरः तंत्र आगतवान्। सः निद्राङ्गतस्य महाराजस्य समीपं गत्वा व्यजनेन वीजनम् आरब्धवान्। अत्रान्तरे महाराजस्य वक्षस्थले एका मक्षिका उपविष्टा। वानरः व्यजनेन तां दूरीकर्तु पुनः पुनः प्रयत्नं कृतवान्। तथापि मक्षिका ततेः दूरं न गता। तदा सः स्वभावचपलः मूर्खः वानरः कुपितः सन् तीक्ष्णं खड्गं गृहीत्वा तस्याः उपरि प्रहार कृतवान्। मक्षिका उड्डीय ततः दूर गता। खड्गप्रहारेता महाराजस्य वक्षस्स्थलं विदीर्ण जातम्। तेन महाराजः मृतः अभवत्। अतः एवोक्तम् मूर्खे राह सङ्गतिं न कुर्वीत।

काकस्य उपायः

कश्चन महावृक्षः आसीत्। तत्र कश्चन काकः पत्न्या सह पसति स्म। तस्या एव वृक्षस्य कोटरे कश्चन कृष्णसर्पः अपि वसति स्म। यदा काकी प्रसूता भवति तदा कृष्णसर्पः तस्याः शावकान् खादति स्म। एतेन काकः काकी च दुख अभनताम् महत् एकदा काकः स्वमित्रस्य शृगालस्य समीपं गत्वा उक्तवान् – ''भोः मित्र! सः कृष्णसर्पः कथञ्चित् मारणीयः। भवान् कमपि उपायं सूचयतु'' इति। शृगालः एकम् उपायं सूचितवान्। तत् श्रुंत्वा काकः बहु सन्तुष्टः। डानन्तरं काकः उड्डयनं कुर्वन् नगरम् आगतवान्। तत्र महाराज्ञः प्रासादस्य सरोवरे अन्तः पुरास्त्रयः जलक्रीडायां भग्नाः आसन् तासां वस्त्राणि आभरणनि च सरोवरस्य सोपानेषु स्थापितनि आसान् काकः तत्र गतवान्। एकं सुवर्णहारं स्वीकृत्य अरण्याभिमुखं प्रस्थितवान्। तत दृष्टवा राजभटाः काकम् अनुसृतवन्तः। काकः अरण्यम् आगत्य महावृक्षस्य कोटरे तं हारं पातितवान्, स्वयं दूरं गतवान्। राजभटाः तत्र आगतवन्तः कोटरे तं हारं दृष्टवन्तः। तदा तत्र स्थितः कृष्णसर्पः कोपेन बहिः आगतवान्। राजभटाः दण्डप्रहारेण तं मारितवन्तः। हारं च नीतवन्तः। तदनन्तरं काकः पत्न्या सह सुखेन जीवितवान्। अतः एवोक्तम् राठेशाठयं समाचरेत्।

ENGLISH SECTION

Statistics in the Everyday Life

Dr. Pradeep Kumar Tyagi
H.O.D., Statistics Department

During the 17th to 18th century, "Statistics" had gradually developed, and a lot of work was completed and announced at the end of the 19th century. Sir Ronald Fisher, one of the fathers of modern statistics, showed how statistics can be used to analyze very complicated data sets, and developed many of the methods that we still use today. He also founded the Rothamsted Statistics Department where Genstat was first developed. Today, statistics are integrated into science, engineering, agriculture, medicine, the arts and other diverse fields of study. Every day people collect and analyze a lot of information which is presented in numbers, and it is closely associated with the aspects of their life. Thus, it is typical to use the elementary statistical approaches to the examination of the learnt material about the everyday activities in order to get the average results in relation to the definite events or phenomena. However, many people do not guess that they use the principles of statistics as the base for their knowledge. Moreover, when persons have to present the solution to this or that question or decide how to act in the definite situation they also use the statistical data on the issue as one of the main arguments which can influence the further development of the case. That is why statistics can be defined as the science which deals with the data's collection and its interpretation according to the certain task, and the results of the research can be effectively used in many spheres. From this point, the relative value of statistics for the everyday life is in the fact that people have the opportunity to plan their actions according to the statistical data with references to those results which can satisfy or not their expectations.

People are usually interested in the average temperature and the weather forecasts, in the amount of people who prefer this or that product which they usually purchase. These persons listen to the economical news in which the data of statistics on the state's development are presented and pay attention to the risks of the transport incidents before going out the house. The statistical data influence all the aspects of the people's life during the whole day.

When an individual wants to learn about the latest news he concentrates on the information which is interesting for him personally, and these facts are often given in the form of numbers. The average results in different fields and areas from the average level of incomes in the country and the average level of attendance the local library till the average data on the consumers' preference of brands and services can provide the basics for the people's choices and usual decisions which are made as a part of the daily rituals and routines.

One more effective advantage of statistics is the possibility to offer the prognoses of the development of definite situations and processes. People are inclined to use the statistical prognoses when they plan such significant changes in their life as the search of the new job, new investments in companies, travelling, and long-term projects. Statistics as the science is based on the strict mathematical calculations and formulas. That is why its methods can be discussed as the effective ways of interpreting the collected quantitative information on any aspect of the life. It is possible to analyze the tendencies of the world's development with references to the statistical approach and use this approach as the means to organize the everyday life according to these trends. Furthermore, many people focus on the results of the statistical researches not only at the elementary level in their daily life but also as the part of their work.

Today, it is not necessary for people to examine and test a lot of material to get the information about its appropriateness for the people's everyday activity or about tendencies of the phenomenon's progress because all these data can be taken in the form of the statistical graphs or percentages. There are many daily questions the answers to which are hidden in the statistical data.

Nmami Gange: An Overview

Dr. R. K. Agrawal
H.O.D., Mathematics Department

Namami Gange Programme is an Integrated Conservation Mission, approved as 'Flagship Programme' by the Union Government in June 2014 with budget outlay of Rs.20,000 Crore to accomplish the twin objectives of effective abatement of pollution, conservation and rejuvenation of National River Ganga. Main pillars of the Namami Gange Programme are:-

Creating Sewerage Treatment Capacity:- 63 sewerage management projects under implementation in the States of Uttarakhand,Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand and West Bengal.12 new sewerage management Projects Launched in these states.Work is under construction for creating Sewerage capacity of 1187.33 (MLD).Hybrid Annuity PPP Model based two projects has been initiated for Jagjeetpur, Haridwar and Ramanna, Varanasi.

Creating River-Front Development:-28 River-Front Development projects and 33 Entry level Projects for construction, modernization and renovation of 182 Ghats and 118 crematoria has been initiated.

River Surface Cleaning:-River Surface cleaning for collection of floating solid waste from the surface of the Ghats and River and its disposal are afoot and pushed into service at 11 locations.

Bio-Diversity Conservation:- Several Bio-Diversity conservation projects are namely: Biodiversity Conservation and Ganga Rejuvenation, Fish and Fishery Conservation in Ganga River, Ganges River Dolphin Conservation Education Programme has been initiated. 5 Bio-Diversity center's at Dehradun, Narora, Allahabad, Varanasi and Barrackpore has been developed for restoration of identified priority species.

Afforestation:- Forestry interventions for Ganga through Wildlife Institute of India; Central Inland Fisheries Research Institute and Centre for Environment Education has been initiated.Forestry interventions for Ganga has been executed as per the Detailed Project Report prepared by Forest Research Institute, Dehradun for a period of 5 years (2016-2021) at project cost of Rs.2300 Crores. Work has been commenced in 7 districts of Uttarakahnd for medicinal plants.

Public Awareness:- A series of activities such as events, workshops, seminars and conferences and numerous IEC activities were organized to make a strong pitch for public outreach and community participation in the programme. Various awareness activities through rallies, campaigns, exhibitions, shram daan, cleanliness drives, competitions, plantation drives and development and distribution of resource materials were organized and for wider publicity the mass mediums such as TV/Radio, print media advertisements, advertorials, featured articles and advertorials were published. Gange Theme song was released widely and played on digital media to enhance the visibility of the programme. NMCG ensured presence at Social Media platforms like Facebook, Twitter, You Tube etc.

Industrial Effluent Monitoring: - The numbers of Grossly Polluting Industries (GPIs) in April, 2019 are 1072. Regulation and enforcement through regular and surprise inspections of GPIs is carried out for compliance verification against stipulated environmental norms. The GPIs are also inspected on annual basis for compliance verification of the pollution norms and process modification, wherever required through third party technical institutes. First round of inspection of GPIs by the third-party technical institutes has been carried out in 2017. Second round of inspection of GPIs has been completed in 2018. Out of 961 GPIs inspected in 2018, 636 are complying, 110 are non-complying and 215 are self-closed. Action has been taken against 110 non-complying GPIs and are issued closure directions under Section 5 of the E(P) Act. Online Continuous Effluent Monitoring Stations (OCEMS) connectivity established to CPCB server in 885 out of 1072 GPIs.

Ganga Gram:- Ministry of Drinking Water and Sanitation (MoDWS) identified 1674 Gram Panchayats situated on the bank of River Ganga in 5 State (Uttarakhand, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand, West Bengal). Rs. 578 Crores has been released to Ministry of Drinking Water and Sanitation (MoDWS) for construction of toilets in 1674 Gram Panchayats of 5 Ganga Basin States. Out of the targeted 15, 27,105 units, MoDWS has completed construction of 8, 53,397 toilets. Consortium of 7 IITs has been engaged in the preparation of Ganga River basin Plan and 65 villages have been adopted by 13 IITs to develop as model villages. UNDP has been engaged as the executing agency for rural sanitation programme and to develop Jharkhand as a model State at an estimated cost of Rs. 127 Crore.

Corona Vaccines in India

Dr. Chandrawati
H.O.D., Chemistry Department

On 16 January 2021 India started its national vaccination programme against the SARS-CoV-2 virus which has caused the COVID-19 pandemic. The drive prioritises healthcare and frontline workers, and then those over the age of 60, and then those over the age of 45 and suffering from certain comorbidities. India has entered the second phase of its vaccination drive with two 'Made in India vaccines- Covishield and Covaxin- against the coronavirus disease. Covishield is made by Serum Institute of India (SII) and Covaxin is manufactured by Bharat Biotech.

Covaxin

Covaxin, India's first home-made shots against COVID-19, has shown high levels of antibody response in a mid-stage trial. The company said it had shown 81% efficacy in preventing symptomatic COVID-19, based on interim analysis of late stage trials.

The vaccine has been developed by Bharat Biotech in collaboration with the Indian Council of Medical Research (ICMR) and the National Institute of Virology (NIV), Pune. Covaxin is an inactivated vaccine developed by chemically treating novel coronavirus samples to make them incapable of reproduction.

The double-dose vaccine showed significantly higher neutralizing antibody responses in Phase II than in Phase I due to the difference in dosing regimens that changed to a 4-week apart injection schedule from a 2-week course, researchers said in the study published in medical journal *Lancet*.

But it said the Phase II trial, which had 380 participants, enrolled a small number of participants aged 12–18 years and 55–65 years and follow-on studies are required to establish immunogenicity in children and in older people.

It also said that while the trial included participants from across nine Indian states, the study population lacked ethnic and gender diversity, "underscoring the importance of evaluating BBV152 (the vaccine) in other populations".

Side-effects of Covaxin

The mild side-effects of the drug include injection site pain, injection site swelling, injection site redness, injection site itching, stiffness in the upper arm, weakness in the injection arm, body ache, headache, fever, malaise, weakness, rashes, nausea, vomiting.

The company said that there is a slim chance the vaccine causes a severe allergic reaction. Signs of a severe adverse event include difficulty in breathing, swelling of face and throat, fast heart-beat, rashes all over the body, dizziness and weakness.

Who should not take Covaxin?

Those who have any history of allergies, fever, bleeding disorder or are on a blood thinner, are immune-compromised or are on a medicine that affects your immune system, are pregnant, are breastfeeding, any other serious health-related issues, as determined by the vaccinator/officer supervising vaccination, must not take Covaxin. People who have taken another anti-Covid vaccine should not take Covaxin.

Covishield:

The local version of Oxford-AstraZeneca COVID-19 vaccine will be known as Covishield. Serum Institute of India, the world's largest vaccine manufacturer by volume, joined hands with British-Swedish drugmaker to produce 1 billion doses of its COVID-19 vaccine.

It uses a weakened version of a chimpanzee common coldvirus that encodes instructions for making proteins from the novel coronavirus to generate an immune response and prevent infection.

Two doses of the vaccine, four weeks apart, were originally thought to offer the best protection against COVID-19. The scientists revealed that the Oxford vaccine had an overall efficacy of 70%, but could be around 90% effective when administered as a half dose followed by a full dose a month later.

The vaccine appeared to be more than 80 percent effective at preventing severe illness among elderly, at-risk individuals after a single dose, according to preliminary research.

"Covishield is highly effective vaccine against novel coronavirus," Adar Poonawalla, chief executive officer, Serum Institute of India earlier mentioned.

Side-effects of Covishield

Some of the very common side effects of the vaccines are tenderness, pain, warmth, redness, itching, swelling or bruising where the injection is given, generally feeling unwell, chills or feeling feverish, headache or joint aches.

Who should not take Covishield?

Serum Institute of India's factsheet said one should not get the Covishield vaccine if the person had a severe allergic reaction after a previous dose of this vaccine. Like Bharat Biotech, the SII factsheet also says that if a person is pregnant or plans to become pregnant or is breastfeeding she should tell the healthcare provider before taking the jab. People who have taken another anti-Covid vaccine should not take Covishield.

The ingredients of the Covishield vaccine are "L-Histidine, L-Histidine hydrochloride monohydrate, Magnesium chloride hexahydrate, Polysorbate 80, Ethanol, Sucrose, Sodium chloride, Disodium edetate dihydrate (EDTA), Water for injection," it pointed out.

Here are some of the things you need to know, and some precautions that you should take before getting vaccinated.

Before Vaccination

1. In case a person has allergies to medication, or drugs, it is important to get an all-clear from a medical practitioner. A complete blood count (CBC), C-reactive protein (CRP), or Immunoglobulin-E (IgE) levels can be checked under medical advice.
2. One should eat well and take medicines, if prescribed, ahead of vaccination. One should try to be as relaxed as possible; counselling can help people who are feeling anxious.
3. People with diabetes or blood pressure need to keep these in check. Cancer patients, especially those on chemotherapy, must act on medical advice.
4. People who have received blood plasma or monoclonal antibodies as part of Covid-19 treatment, or those who have been infected in the last one and a half months are advised to not take the vaccine right now.

After Vaccination

1. A recipient of the vaccine is monitored at the vaccine centre itself to guard against any immediate severe allergic reaction. People are allowed to leave only after it has been ascertained that this is not the case.
2. Side effects like pain at the injection site and fever are common. This is no reason to panic. Some other side effects like chills and fatigue might also be expected, but these go away in a few days.

   Therefore, basic precautionary measures must be followed even after vaccination. Face masks, hand hygiene, and physical distancing in public places must not be abandoned just because a vaccine has been taken. Cough/sneeze etiquette also needs to be followed.

Role of women in the Bench and Bar

Yajvendra Kumar
H.O.D., Physics Department

In ancient India. women had enjoyed equal status and equal right with men. But they lost all their freedom during the Mughal period. Now, with the advent of the mordern era. women have proved that both in efficiency and intellect, they are at par with men. But due to castism, illitiracy, outdated customs, and tradition, the full potential of Indian women can not be gauged and recognized. Despite the fact that women constitute almost half of human population, their importance as individuals has never been recognized in the social and economic scenario and thus remains 'invisible'.

The constitution of India though ensured gender equality through Article 14, a special provision by way of Article 15 had to be encated to treat women as a 'special category' so as to create variety of opportunities and avenues for women to utilize their abilities.

The Indian constitution Article 15, 16 and 14 provides for equality between men and women, but in practice there is often denial of equality for women in large parts of India, particularly in the rural areas due to the disgusting survival of remnants of feudalism and medievalism. The lives of women in feudal societies were marked by continual unending labour, a kind of labour that was looked down upon and present the imprint of bondage.

Woman account for 50% of the population in India. Looking at the global level, the UNO Report points that women constitute half of the world's population. Perform nearly two-third of work hours, recieve onetenth of world's income and own less than 1% of world's property. The UNDP's human development report for 1995 further shows that 70% of world's poor are women and according to the common wealth human rights initiative, two-thirds of illiterate people in the world are women. 70% of drop children. Malnutrition and mortality rates are higher among girls.

The representation of women has never gone biyond 8% in parliament, 10% in state Assemblies and 13% in state council of ministers. More disheartening figures indicated that 276 million women are still illitrate. In the total work force, women representations do not exceed 23% women of India are the most unrepresented sections in the present political system. On the executive side, only 5.8% of senior management and administration posts are occupied by women. Even in judiciary, only 3% judges are women. In 13th Lok Sabha. there were only 43 women MPs and 19 in Rajya Sabha. Though women's reservation bill providing 33% reservation for women in legeslature, was introduced after much difficulty the bill could not be passed.

Today, a women is an equal match to her male counterpart in intellectual activities and physical pleasure. Gone are the days when she ws confined to the household. Today, equal number of lady lawyers are found in Distt. and High Court, which are not the position on about a decade ago. They argue cases more firmly and effectively.

The judicial system gets complete not with the Bench alone with the Bar alone, but it acquires fullness only with both the Bench and Bar. The judge and the lawyers function in courts to safeguard and promote the cause of justice for which millions of litigants at enormous cost and suffering come to the courts everyday. The judiciary should also give women advocates a vital role of play in the legal system. There by encouraging women advocates to approach the courts for the protection of rights of manyunds and under privileged section of the society, especially the women and children.

A lowyer of today should learn a lot, apart from law books. He or she should be man or women of multiple excellence. Capable of discerning the glory of the past and the hope of the future. In India we find law and police is which are protective of women. The Indian judiciary that ensures justice to women, also not been logging behind in its attempt to interprest and implement laws relating to women.

Yoga Asans for Healthy Life

Dr. Seemant Kumar Dubey
H.O.D., Physical
Education Department

Yoga is an integral part of our lifestyle. It removes the impurities from the level of mind and unites everything with the spirit. For instance, insomnia could be connected to stress, anxiety or depression. You have to address that issue instead of merely taking medication. This way, you have a wider perception of your own mind, body, thoughts and emotions and there's more clarity and you are able to guide your prana (life force) in a positive way to progress in life.

One can start practicing Yoga at any given moment of time and you may start with meditation or directly with pranayama without even doing the asanas (postures). Make sure that when you practice yoga asanas, you don't just stretch the body because the mind has to be with the body. You can't be watching television or reading the newspaper because if your awareness isn't there, the asanas won't have much effect on you. But if each stretch is synchronized with the breath and awareness, your practice will become a yogic practice. Some asanas are described below with their benefit.

Kapalabhati

Sit in a comfortable position with both hands on the knees. The spine, neck and shoulder should be in a straight line. Start with deep inhalation along with the expansion of the abdomen. Exhale forcefully in strokes with the contraction of the abdomen (flapping movements of the abdomen muscles) for up to 40 to 60 strokes. After each round, breathe normally to relax. Repeat 3-4 rounds of Kapalabhati. Dr Kutteri says that Kapalabhati balances and strengthens the nervous system and tones the digestive organs. It's an effective practice for releasing excess fat, burning calories and reducing belly fat. The rapid and rhythmic movements strengthen the abdominal muscles and ensure proper circulation towards the abdominal organs.

Naukasana

Lie down on your back with your legs together. Keep your hands on the thighs or next to the thighs on the floor. Inhale and raise your head, arms and head in a straight line off the floor at a 30-degree angle. Keep the toes pointing upward. This asana increases the efficiency of abdominal muscles, is good for digestion, and reduces belly fat.

Paschimottanasana

Sit with your outstretched legs and flexed

toes. Inhale and raise your arms. Exhale and pull the navel in. Stretch the spine forward from the hips. Hold the toes with your hands, bending the elbow outward or downward. In the final position, your awareness should be on your abdominal breathing. Paschimottanasana stretches the calf and hamstring muscles, which helps for better circulation. It elongates the spine and gives a good stretch to it. It also regulates vital energy to the nervous system and ensures good circulation to internal abdominal organs.

Ardha matsyendrasan

Sit straight, stretching your legs in front of you. Bend your left leg and try to touch your feet to your right buttock. Bring your right leg outside of the left knee. Touch your feet to the ground. Keep your spine erect. Exhale and turn your upper body to the right. Hold your right feet with the left hand and place your right hand on the spine. This asana makes your spine more flexible and strengthens your side muscles.

Dwi Pada Uttanasana

Lie down on your spine, with hands placed next to the buttocks or under the buttock (palms downward). The legs should be straight and toes flexed. Inhale and raise both legs at a 90-degree angle while expanding the abdomen out. Exhale and raise both legs to a 45 or 30-degree angle while contracting the abdomen. Do 5-8 movements and then hold the legs at each angle for 5-7 abdominal breaths. This asana strengthens the core and is an efficient practice to release the extra fat around the abdomen.

Dandasana

Lie down on the abdomen and bring the elbows under the shoulders. Get in the push-up position and place your forearms on the ground. Inhale and lift the body off the floor with support from your hands and toes. Squeeze your gluteus and tighten your abdominal muscles. Keep the neck and spine straight. Hold the pose for 5-7 abdominal breaths. Exhale and release the pose. Repeat for 3 times. This asana is an excellent way to strengthen the core. It helps to burn fat and calories from the abdomen and increases the overall productivity of your abs, butt and thighs.

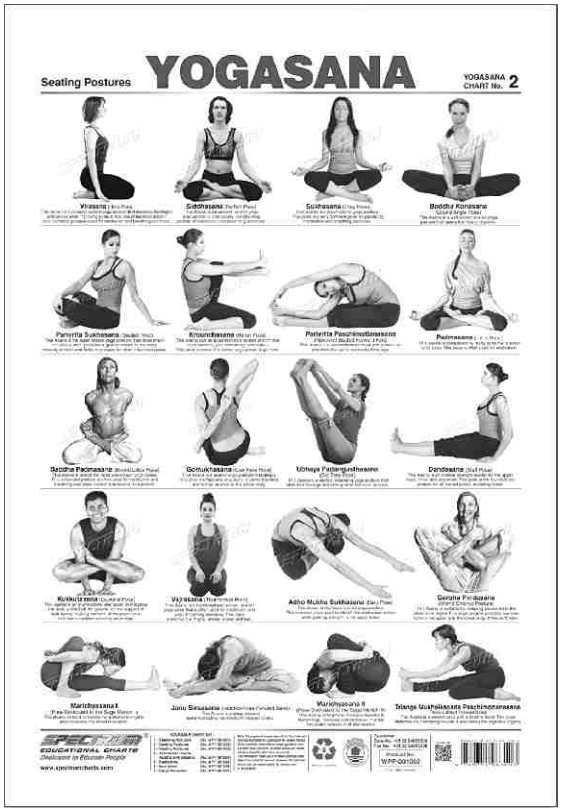

Deteriorating Moral Values in Our Society

Dr. Sudha Uppadhyaya,
Asst. Prof. B.Ed. Department

"Nobody is form as a saint or devil but the moral values of his family makes him so'. The above quotation is aptly stated. The lack of moral values has degenerated our society. It has corrupted the minds and life style of our new generation. Once there was a time when the parents instil good moral in their children. they used to guide them to respect their elder ones and love younger ones. People used to live in joint family where they get moral values from their grandparents

India is the most ancient civilization . Vedas were written in India. Buddha got divine knowledge here we are proud of our rich cultural heritage but today we have forgot those ideals, values and principles which were so dear to our ancestors. Today no young couple prefers a joint family. we do not want to be grateful to our parents. Rather, we want to disown them. Materialism has led us to a degradation in our moral values.

The most prominent degradation in our moral values reflect itself in the form of corruption. In India corruption is prevalent at all the levels and the irony is that they are guilt, they remain supreme. These developments are not good for the national economy and moral condition of our younger generation.

There is a sleep decline in our moral values manifests itself in the form of our poor educational system and teaching methodologies. In fact the poor educational system in all parts of the nation has led to poor moral values in the society. The students do not respect their teachers.

Our cultural values have taught us to respect our parents and help them during the times of their helplessness. However, the growth of nuclear families has led to complete ignorance of parents and elders. Now, in Indian society respect for elders is taking a backseat on the name of modernization. This condition has formed soevol and cultural chaos in our country that was known for her warmth and family traditions for over several hundred centuries.

Nobody is form as a criminal but lack of moral values imparted to him by his parents and teachers lead him astray. On being morally degraded, he indulges in moral activities and crimes. This is one of the main causes that the cases of rapes, robbery theft, forgery and other crimes are rising rapidly in our country now a days.

To check the moral degradation of our country, the traditional Indian values must be bought and reinforce. The concept of joint families must be promoted among the young couples.

This concept would enable them to take fruitful guidance from their elders, education should be imparted as per western norms but Indian values must also be enforced so that our children may remain in touch with their roots.

Importance of English

Dev Swaroop Gautam,
Asst. Prof. B.Ed. Department

In today's competitive world, importance of English cannot be ignored. English is one of the most spoken languages in the world.

People from different parts of the world having different languages as their mother tongues are able to communicate easily with knowledge of English.

Nowadays English has become the language of Education in
many countries. In India itself we have numerous English medium schools. It becomes convenient for a student to get higher education from western countries if he already knows English.

Today English has also become important to make good career. Many multinational companies prefer job aspirants who have a good knowledge of English. Most documentation work done in offices is also in English language Good knowledge of English language also helps many candidates to seek employment outside India.

Even the internet has more than half of the web sites made in English language. So English helps in gaining a vast knowledge through the medium of Internet.

Learning a foreign language helps in developing our personality too. Learning English well give us most of the benefits of learning a foreign language.

English also helps tourists who visit a different Country. Tourist can communicate with local people in English language because many of the people all over the world know English.

In today's world of Social media, English is the most common language used by everyone on the net. It we want to share our thoughts or work on the Internet then our work. Can reach to maximum people if we express it in English.

With so many advantages, learning English is always beneficial for everyone.

SPRING

Dharamdas, B.Ed. II

Spring is nature's best gift,
Which brings a scope of shift.
When flowers start to blossom,
Our surroundings become awesome.
Much more to see than a sky that is blue,
Blessings from heavens become true.
Regained leaves reflect green,
Mysterious magic is felt and can even be seen.
It is simply the effect of spring.
which hides million things in a thing.

Time Management

Dr. Bhuvnesh Kumar
HOD, Commerce Department

Time management is the ability to utilize time efficiently. Whether you are a student, businessman, office employee, serviceman, or any other, it is essential to make good use of one's individual time. The very first step towards success is efficient time management.

"Time and Tide wait for none."

This is a well-known proverb, which means a lot in life, especially for a Students' life. As it shapes young minds into the sense of duty & directions of the discipline.

Here are some benefits of time management for students.

1. **Development of effective learning skills -** Students learn more effectively when they learn to manage time in the right way. As it is more quantifiable for them, they allocate study hours & stick to it. This helps in effectively developing their learning skills.
2. **First Step Towards Success -** It is said that "If you can't manage your time, you won't be able to manage any other part of your life." Learning how to manage time while using every single minute to gain something sets you up to the ladder of success. So, the first step towards success is to manage your time efficiently.

If you master the art of time management well, you would be able to handle your tasks better. Hence, time management is the key to success.

3. **Time & Money Management go together -** The more you waste time, the more you flush down the money. Excellent time management skills allow you to accomplish more in a short period.
4. **Do Less Work & Be more Productive -** Being productive is one of the keys to time management. It brings more organized outcomes with less or little mistakes.
5. **Get Great Opportunities -** As it is said that, "an early bird always has more options or luck mostly favors the prepared one." Students who remain at the top of their time & work produce greater opportunities in life.

Become productive by effectively managing your time.

The human brain remains fresh in the morning hours & can be an excellent time for studying subjects that needs a lot of memorizing. Lazy afternoons can be useful for problem-solving subjects like Math, Accounts, or Business studies. Evening time can be best suited for learning literature subjects like Social Studies & understanding Science concepts.

Ask yourself which time of the day will be most effective-early morning, afternoon, evening or late at night. To make the most of it, divide your time equally, and work accordingly.

Time Management is essential for every individual. Whether you are a student, homemaker, business person, or a working professional - if you can manage your time efficiently, you wouldn't be far from attaining your goals.

Time is limited, once gone, it never comes back. It is thus important for you to make the most of it.

So, be more productive by effectively managing time.

Environmental Awareness Days

Dr. Shailendra Kumar Singh
Assistant Professor, B.Ed. Department

The need to spread environmental awareness is enormous in the context of successfully addressing environmental problems. It is linked to environmental education. On the one hand, provision of environmental education creates greater awareness in individuals and communities with respect to putting environmental resources to use even while conserving them. On the other hand, greater environmental awareness increases the scope of environmental education—as a discipline as well as inclusion of aspects of it within the scope of other disciplines.

Various media and means are used to spread environmental awareness among the people. The electronic media and the print media are the major mediums of spreading information about environment among the populace— educating them about environmental concerns and ways to address these. News, features, talk shows and discussions on television and radio are increasingly focusing on environmental themes of today. Educational institute should be celebrate these Environmental conservation related days with their students-

February 2 : World Wetlands Day
February 27 : International Polar Bear Day
February 28 : National Science Day
March 3 : World Wildlife Day
March 14 : International Day of Action for Rivers
March 20 : World Sparrow Day
March 21 : World Forestry Day, World Planting Day, World Wood Day
March 22 : World Water & Sanitation Day
March 23 : World Meteorological Day, World Resources Day
April 7 : World Health Day
April 10: World Atmosphere Day
April 18: World Heritage Day
April 22: World Earth Day
May 3 : International Energy Day
May 8 : World Migratory Bird Day
May 11: National Technology Day
May 14: Endemic Bird Day
May 22: World Biodiversity Day
May 23: World Turtle Day
June 5 : World Environment Day
June 8 : World Ocean Day
June 9 : Coral Triangle Day
June 15: Global Wind Day
June 17: World Day to Combat Desertification and Drought
July 1-7: Van Mahotsav Saptah
July 3 : World Seabird Day
July 11 : World Population Day
July 26 : International Mangrove Day
July 29 : International Tiger Day
August 10 : World Lion Day
August 12 : World Elephant Day
August 22 : Honey Bee Day
September 8 : World Cleanup Day
September 16: World Ozone Day
September 18: World Water Monitoring Day
September 21: Zero Emissions Day
September 26: World Environmental Health Day
October 1-7 : Wildlife Week
October 3 : World Nature Day, World Habitat Day
October 4 : World Animal Day
October 6 : World Wildlife Day
October 24 : International Day of Climate Action
November 6 : International Day for Preventing the Exploitation of the Environment in War and Armed Conflict
November 12 : World Birds Day
November 14 : World Energy Conservation Day
December 5 : World Soil Day
December 11 : International Mountain Day
December 14 : National Energy Conservation Day

Role of Chemistry in Life and career

Dr. G.K. Bansal,
Assistant Professor, Department of Chemistry

MESSAGE

Chemistry is a big part of our everyday life. We start the day with Chemistry. One can find chemistry in daily life in the foods we eat, the air we breathe, cleaning chemicals, our emotions and , literally every object we can see or touch.

When we eat, food provides us with energy that is produced through different chemical reactions within our cells. We use this energy to run, play, study and work, among other activities.

Everything in our body is moved by mechanisms based on the importance of chemistry.

Everything is made of chemicals. Medicines are chemicals. Food is made from chemicals.

Chemistry jobs very in nature, salary, and required qualifications; the information and list below in intended to help you to judge the right chemistry career for you.

job career

1. Forensic Scientist

Forensic scientists collect and analyze evidence from a crime scene. This might include items like dirt samples, blood samples, fingerprint etc. They are responsible for using their expertise to report on and present their findings in legal cases.

2. Materials Scientist

Materials scientists study man-made and natural substances to determine their properties, composition and how they could be transformed or combined to increase effectiveness or create new materials.

3. Research Scientist

This role is right if you're an adventurous researcher with a keen eve for details. You will be directly involved in developing new medicines, technology etc.

4. Analytical Chemist

Analytical chemists use their skills and expertise to analyze substances, identify what components are present and in what quantities as well how these components may behave and react with one another. This can include the analysis of drugs, food and other products to determine effectiveness, quality and to ensure they are safe for human consumption or use.

5. Synthetic chemist

Synthetic chemists test and develop chemical compounds to create new material for a specific purpose. They work in a lab and can develop materials for nearly for nearly and industry including healthcare, manufacturing and food and beverage.

6. Quality control chemist

Quality control chemist, or QC chemists, monitor and test the use of materials during the production process to ensure all standards are met. QC chemists work in the pharmaceutical or manufacturing fields.

7. Organic chemist

Organic chemist research, manipulate and study materials that contain carbon. They might perform various scientific studies to identify or find applications for materials.

8. Water Chemist

Water Chemists, as the name suggests, are concerned with analyzing and maintaining the quality and condition of water, essential for human life on Earth.

9. Hazardous Waste Chemist

Hazardous Waste Chemist are responsible for monitoring and managing chemical pollutants in the air and water. They use their expertise to identify harmful chemical components in the air, water or soil, evaluate the danger they present and coordinate their removal and containment.

10. Geochemist

Geochemists study the physical and chemical properties of the Earth, Particularly rocks and minerals. They use their knowledge to determine the make-up and distribution of rock and mineral components.

11. Pharmacologist

Pharmacologist perform studies on new and exiting drugs and other pharmaceuticals for their effect on humans and animals. They might be responsible for ensuring drugs are safe.

12. Toxicologist

Toxicologists are responsible for testing various blood and tissue samples to detect the presence of pharmaceuticals, poison, alcohol and other substances in the body. They might help answer questions related to criminal cases.

13. Chemistry Teacher

Chemistry teachers develop and present curriculum related to chemistry science. They are responsible for ensuring the effective transfer of knowledge to their students through lectures, tests, projects etc.

14. Chemical Engineer

Chemical engineers are involved the design and development of new products from raw materials. They must be creative and innovative in their research of product quality.

15. Chemical technician

Chemical technicians are responsible for ensuring research chemists are able to properly and efficiently perform studies in a lab. They might complete items such as monitoring equipment or using techniques to help in specific research tasks.

16. Laboratory Technician

Laboratory technicians are integral to the functioning of any laboratory environment. Lab tech support the team in inventory, servicing lab equipment and communicating with leadership.

17. Oceanographer

Oceanographers are responsible for researching marine ecosystems. They perform scientific studies on topics like sea floor geology, ocean life, water compounds, circulation etc.

18. Doctor

Doctors obviously require extra degrees after Bachelor's, depending on the area of study. With a full comprehension on the medical world, doctors also need to be able to juggle a handful of tasks flawlessly as well as relay information to nurses, patients and staff alike.

19. Environmental Consultant

Environmental Consultants must have a deep passion and functional intelligence of environmental science.

Conclusion

Most of the chemistry jobs listed above will require you to have some level of qualification in chemistry, whether that's a bachelor's degree, master's degree of phD.

Many chemistry jobs are lab-based, though not all - a number of roles may include field work, office work, or even teaching in a school, university or other academic environment.

In the modern world, no field is left untouched with the extended hand of chemistry.

The Ganga-Polution and its Solution

Lalit Sharma
Part Time Lecturer Physics Department

Introduction

The Ganga is a holy river, The Ganga is one of the most important rivers of India. In 14th century when famous traveller Ibnbatuta of islamic world came to India during the rule of Mohammad Tuglak, shifted his capital from Delhi to Daultabad he took the water of Ganga on the back of horses, camels and elephants. It took about two months to reach Daultabad. It is said that there was no change in its purity and sweetness. It is why we give Importance to this water. But now, we are watching the Ganga getting polluted but doing nothing.

The pollution of Ganga

Gillipin defines the Ganga pollution - The pollution of Ganga happens due to physical, chemical and biological reactions done by man.

Reason

(i) List of detergent and pesticides:- Now detergent are being used in home on a large scale and passing them through drainage. It goes to the Ganga. Secondly, farmers are using fertilizers and pesticides to raise their production. During the rains, it .....flows to the Ganga.

(2) Industrial Effluents:- Certain factories are located along the bank of the Ganga. They discharge their effluents without filtering it. It causes great pollution to the Ganga. It reduces oxygen level in water, the aquatic creatures feel problem in respiration and sometimes they die.

Bad effects of this pollution

It such polluted water is used. It can cause cholera, Malaria, Dysentery Jaundice and other fatal diseases. It causes damage to vegetation also.

Measures of Prevention

(1) Do not throw the industrial effluents in the Ganga.

(2) do not throw dust in river Ganga.

(3) If you see anyone thronging throwing the Palatines, you should try to check him etc.

Dr. S. R. Ranganathan - Father of Indian Library Science A Short Biography

GuruDatt Sharma
Assistant Professor, B.Ed Department

Dr. Shiyali Ramamrita Ranganathan was born in Shiyali in Tanjavoor District of Tamil Nadu on 9th August 1892. His father, Ramamrita Ayyar was a landlord and Seethalakshmi, mother of Ranganathan, was a simple and very pious layd. Ranganathan's education was initiated in October, 1897 at Ubhayavedanthapuram near Shiyali. Ranganathan did his Master's degree in 1916. He also took a course in teaching technique and gained L T degree from a teacher's college.

In 1917, Ranganathan was appointed to the Subordinate Education Service and worked as Assistant Lecturer of Mathematics. After that he took charge of the Madras University Library on 4th January 1924. Ranganathan left for England in September 1924 for the training of Librarian. After returning to Madras, Ranganathan began a mission for librarianship. Here emerged the **Five Laws of Library Science, the Colon Classification, the Classified Catalogue Code and the Principles of Library Management.** These books are mile stones in Indian Library Science. He introduced open shelved system and provided open access. Ranganathan designed a functional library building near Madras Beach. All these changes were developed in a holistic manner, inspired by his Five Laws of Library Science :

* Books are for use.
* Every reader, his book.
* Every book, its reader.
* Save the time of the reader.
* Library is a growing organism.

Ranganathan formed the **Madras Library Association**. A school of library science was also initiated by Ranganathan in 1929. At Banaras Hindu University Ranganathan reorganized the entire collection single-handedly, classified and catalogued about 100,000 books with a missionary zeal during 1945-47. He also conducted the **Diploma Course in Library Science** during the same period.

Ranganathan was helping as an **adviser, the INSDOC, the Planning Commission, and the University Grants Commission.** In 1965, Ranganathan was recognized by the Government of India and made him the **National Research Professor in Library Science**. This was also an honour to library science and librarianship. Ranganathan was honoured by Delhi University and Pitsburgh University by awarding **Doctor of Letters degrees** in 1948 and 1964. Ranganathan received these awards and honours in simple and humble stride and advised his students to do hard work saying that reward would come in apropriate time. Most of his salary as National Research Professor and the royalties on his books were donated to the Sarada Ranganathan Endowment for Library Science (1961).

Until the end of his life, to the very last day, Rangnathan kept on working. he died on 27 September 1972 after a fruitful 80 years of his life. **He wrote 60 books and 2000 articles.** His life was a symbol of immortality and we can get inspiration from his work and life.

Switching From One Programming Language to Another: The Benefits of Being Flexible

Pankaj Kumar Gupta
Head Department of BCA

Programming languages evolve regularly, and projects are becoming more demanding. Today, it is not enough to know only one language. Even guru programmer Joel Spolsky states that there are at least four languages that can make you a successful developer—C#, Java, PHP, and Python. Thus, knowing them can give you a competitive edge.

But what are the benefits of becoming a "polyglot of programming languages"? What are some tips on effective switching? And how can you avoid turning into an "eternal newbie"?

Why Are Coders Switching?

Some programmers might think language switching is uncommon, believing that it's best to master one language instead. But actually, many coders practice language switching. It happens for one or more of the following reasons:

· Adjusting to the current trends in programming.
· Looking to change the specifics of work.
· Aiming to get the desired job.
· Improving professional skills.

Language switching is a common practice, but each developer has their own experience with it. Still, analyzing a huge number of use cases, one general rule applies: You need to know why you're switching so that you can choose the right language for you.

· You want to become a developer of mobile apps (native or hybrid).
·You want to involve yourself in the entertainment industry and develop games, casino solutions, etc.
· You want to create e-commerce websites.
· You are looking for something sophisticated and innovative like blockchain. Your end goal will help determine the language that you should focus on.

Finally, it's worth considering your previous language, as it can define how steep the learning curve of a new programming language will be.The thing is that most programming languages are interdependent and have much in common —patterns, algorithms, syntax, etc. Therefore, understanding this interdependence can be a great step in increasing your ability to learn a new language.

Programming Languages: Interdependence and Patterns While switching from one programming language to another, you won't want to spend ages mastering the new coding principles. To facilitate the learning process, you could opt for languages of the same family or explore the fundamental languages first.

Learning the C-Family Languages

Some experts will advise you to start learning C language. This language helps you understand all the basic rules and coding patterns. After you understand the fundamentals, any programming language will seem much easier for you.

In addition, many languages belong to the C-family—for example, Go, Objective-C, C++, and Java. Even languages such as Python, Perl, PHP, and Ruby have syntax and programming basics that are similar to C, although they do not belong to this family.

Languages that come from the same family have related patterns, syntax, and libraries, so there's no need to switch to a different approach to coding. Thus, if you already know a language from the C-family, then switching to, say, C++ or Java will be no trouble for you.

Switching Between Languages of Different Families

Still, other developers find the previous approach too conservative and even archaic. They even advise starting with Python, which is similar to JavaScript in that it is flexible. Python supports different programming paradigms, enjoys a vast standard library, and has an easy-to-understand syntax. Using it, you can create anything from simple web applications to neural networks.

The Role Of Cryptography In Network Security

Sachin Agrawal
Assistant Professor Department of BCA

Network security is concerned with the protection of network resources against alteration, destruction and unauthorized use, cryptography and encryption are most critical components of network security.

Networks take all kind of sensitive data and security play a vital role of any wireless network system. Security certify level of data integrity and data confidentiality as maintain wired network, without accurately implement security measures and wireless network adapter come within range of the network adapter. Security is high lack, laziness, and lack of knowledge and employee are not aware of these things, especially in small organization and home, every organization need to aware and training for employees time to time.

Cryptology has two components, kryptos and logos. Cryptographic methods to certify the safety and security of communication and main goal is user authentication, data authentication such as integrity and authentication, non-repudiation of origin, and confidentiality and it has two functions encryption and decryption.

Cryptography has different methods for taking clear, readable data, and converts into unreadable data of secure communication and also transforms it back. Cryptography is also used to authenticate identify of message source and certify integrity of it. Cipher send message and use secret code. "The cipher scrambles the message so that it cannot be understood by anyone other than the sender and receiver.

Type of cryptography

Following three common types of cryptography as below:

Secret key cryptography is identified as symmetric key cryptography. Both sender and receiver know same secret code described the key and messages are encrypted by the sender and use key, decrypted by the receiver. It use single key for both encryption and decryption. This method works healthy "if you are communicating with only a limited number of people, but it becomes impractical to exchange secret keys with large numbers of people". Secret key cryptography use is such as data encryption standard, advance encryption standard, Cast-128/256, international data encryption algorithm, and rivest ciphers etc.

Public key cryptography is called asymmetric encryption and use couple of keys one for encryption and another for decryption. Key work in pairs of coordination public and private keys. Public key can freely distributed the private key. If senders and receivers don't have to communicate keys openly, they can give private key to communication confidentially. Public key cryptography use for key exchange and digital signatures such as RSA, digital signature algorithm, public-key cryptography standard etc.

Hash functions use a mathematical transformation to permanently encrypt information. It also called message digests and one way encryption. Hash function use to provide a digital fingerprint of file contents and it is commonly employed by many operating system to encrypt passwords and it provide measure of the integrity of a file. It is also use message digest, secure hash algorithm, RIPEMD etc.

Many feature combine to throw network security to the top issues in the organisation and face IS professional daily. Nowadays business operation decentralization and correspondence growth of computer network is the number one driver of concern about the network security. As far as security concern, many organisation networks are accidently waiting to occur, such accident will occur is impossible to predict but security breaches will occur. When organisation network security chooses is 100% involve cryptography technology. The following five basic uses of cryptography in network security solution are:

Confidentiality – Cryptography gives confidentiality through changing or hiding a message and protects confidential data from unauthorized access and use cryptographic key

techniques to critically protect data.

Access control – Only authorized users (login & password) can access to protect confidential data etc. Access would be possible for those individual that had access to the correct cryptographic keys.

Integrity – Cryptographic tools give integrity verify that permit a recipient to authenticate that message transformed and cannot prevent a message from being transformed but effective to identify either planned and unplanned change of the message.

Authentication is the ability to verify who sent a message. It done through the control key because those with access to the key are able to encrypt a message. Cryptographic function use different methods to certify that message is not changed or altered. These hash functions, digital signatures and message authentication codes.

Encryption for network security

Encryption is the most effective method to reduce data loss or theft to encrypt the data on the network security. Encryption is a process of network security to apply crypto services at the network transfer layer on top of the data link level and under the application level. Network encryption other name network layer or network level encryption. The network transfer layers are layers 2 and 4 of the open systems interconnections (OSI) is the reference model, "the layers responsible for connectivity and routing between two end points. Using the existing network services and application software, network encryption is invisible to the end user and operates independently of any other encryption processes used. Data is encrypted only while in transit, existing as plaintext on the originating and receiving hosts".

The key management

Information become essential assets and protects it and availability is vital for business success. Encryption is the technology for doing so and become significant part of network system security. Encryption key is very helpful to secure data and information. There are two types of key public and private key use to secure the information and network. These key used in cryptographic system as below:

Public Key – it was invented in 1976 and refer to cypher architecture type and apply two key pairs is encrypt and decrypt. It can use to encrypt message and corresponding private key to decrypt it. Public key encryption believe extremely secure because it does not need secret shared key among the sender and receiver. It is helpful for keeping private emails and stored on mail servers for many years. It programs such as PGP has digital signature ability built message sent can digitally signed.

Private Key – it also called secret key and encryption/decryption key to exchange secret messages and shared by the communicators so that each can encrypt and decrypt messages. Public key uses with private key together.

Password management

Password is the most important aspect to login into the system and the network. Organisation should allow only authorised users to access to the network and every user access individual login and passwords to enter the network, its result increase the security aspects. There are following necessary things to secure password in the network system as below:

Long Password – every user need to long password because short password can very quickly compromised and analyse the permutation based on the password length;

Change password anytime – employee should change password regularly, nobody assume easily and helpful for security breaches of the network;

Avoid utilize similar password – don't use the same password for different accounts because it would naive for administrator to think and employee should use different password for safety and security for network system;

Necessity to changing password regularly – employees also gradually more access their work accounts from remote location, user need to educate/awareness on the required of altering the password frequently.

Symmetric encryption systems and their vulnerability

Symmetric encryption system use same secret key is used to encrypt and decrypt information and transform between two keys. Secret key concern to information to transform the content because both can use encrypts and decrypts traffic. Symmetric

encryption system has two types are:
Stream ciphers – it is bits of information one at a time and operates on 1 bit of data at a time. It is faster and smaller to implement and have an important security gap. Certain types of attacks may cause the information to be revealed;
Web Security tools and technologies
Web is very vital role in our daily life such as online searching, surfing, customers, vendors, co-staffs, email, etc but need to be web security and identity theft protection. Web security has many problems like spam, viruses, security breaches & theft etc. This problem with web security is the part of network of attack computers and servers send out spam messages without knowing it and email / passwords produce and re-sale to competitor.
In my research, security expert says that "shows you how to "do something in five minutes" and conveniently neglect to mention the security implications of their advice. If it sounds too easy to be true, it probably is. A perfect example of this is PHP solutions that use a file for data storage and ask you to make it writable to the world. This is easy to implement, but it means that any spammer can write to this file."
Web security has many risk and attacks such as IP address identify the computer, Fixed IP address is larger security risk, share network, staff unaware security leak in the network setting, SQL injection attacks, exploits browsers and websites, remote file inclusion (RFI), phishing etc.
Assistant Professor
Department of BCA

The Role Of Cryptography In Network Security

Network security is concerned with the protection of network resources against alteration, destruction and unauthorized use, cryptography and encryption are most critical components of network security.
Networks take all kind of sensitive data and security play a vital role of any wireless network system. Security certify level of data integrity and data confidentiality as maintain wired network, without accurately implement security measures and wireless network adapter come within range of the network adapter. Security is high lack, laziness, and lack of knowledge and employee are not aware of these things, especially in small organization and home, every organization need to aware and training for employees time to time.
Cryptology has two components, kryptos and logos. Cryptographic methods to certify the safety and security of communication and main goal is user authentication, data authentication such as integrity and authentication, non-repudiation of origin, and confidentiality and it has two functions encryption and decryption.
Cryptography has different methods for taking clear, readable data, and converts into unreadable data of secure communication and also transforms it back. Cryptography is also used to authenticate identify of message source and certify integrity of it. Cipher send message and use secret code. "The cipher scrambles the message so that it cannot be understood by anyone other than the sender and receiver.

Type of cryptography
Following three common types of cryptography as below:
Secret key cryptography is identified as symmetric key cryptography. Both sender and receiver know same secret code described the key and messages are encrypted by the sender and use key, decrypted by the receiver. It use single key for both encryption and decryption. This method works healthy "if you are communicating with only a limited number of people, but it becomes impractical to exchange secret keys with large numbers of people". Secret key cryptography use is such as data encryption standard, advance encryption standard, Cast-128/256, international data encryption algorithm, and rivest ciphers etc.
Public key cryptography is called asymmetric encryption and use couple of keys one for encryption and another for decryption. Key work in pairs of coordination public and private keys. Public key can freely distributed the private key. If senders and receivers don't have to communicate keys openly, they can give private key to communication confidentially.

Public key cryptography use for key exchange and digital signatures such as RSA, digital signature algorithm, public-key cryptography standard etc.

Hash functions use a mathematical transformation to permanently encrypt information. It also called message digests and one way encryption. Hash function use to provide a digital fingerprint of file contents and it is commonly employed by many operating system to encrypt passwords and it provide measure of the integrity of a file. It is also use message digest, secure hash algorithm, RIPEMD etc.

Many feature combine to throw network security to the top issues in the organisation and face IS professional daily. Nowadays business operation decentralization and correspondence growth of computer network is the number one driver of concern about the network security. As far as security concern, many organisation networks are accidently waiting to occur, such accident will occur is impossible to predict but security breaches will occur. When organisation network security chooses is 100% involve cryptography technology. The following five basic uses of cryptography in network security solution are:

Confidentiality – Cryptography gives confidentiality through changing or hiding a message and protects confidential data from unauthorized access and use cryptographic key techniques to critically protect data.

Access control – Only authorized users (login & password) can access to protect confidential data etc. Access would be possible for those individual that had access to the correct cryptographic keys.

Integrity – Cryptographic tools give integrity verify that permit a recipient to authenticate that message transformed and cannot prevent a message from being transformed but effective to identify either planned and unplanned change of the message.

Authentication is the ability to verify who sent a message. It done through the control key because those with access to the key are able to encrypt a message. Cryptographic function use different methods to certify that message is not changed or altered. These hash functions, digital signatures and message authentication codes.

Encryption for network security

Encryption is the most effective method to reduce data loss or theft to encrypt the data on the network security. Encryption is a process of network security to apply crypto services at the network transfer layer on top of the data link level and under the application level. Network encryption other name network layer or network level encryption. The network transfer layers are layers 2 and 4 of the open systems interconnections (OSI) is the reference model, "the layers responsible for connectivity and routing between two end points. Using the existing network services and application software, network encryption is invisible to the end user and operates independently of any other encryption processes used. Data is encrypted only while in transit, existing as plaintext on the originating and receiving hosts".

The key management

Information become essential assets and protects it and availability is vital for business success. Encryption is the technology for doing so and become significant part of network system security. Encryption key is very helpful to secure data and information. There are two types of key public and private key use to secure the information and network. These key used in cryptographic system as below:

Public Key – it was invented in 1976 and refer to cypher architecture type and apply two key pairs is encrypt and decrypt. It can use to encrypt message and corresponding private key to decrypt it. Public key encryption believe extremely secure because it does not need secret shared key among the sender and receiver. It is helpful for keeping private emails and stored on mail servers for many years. It programs such as PGP has digital signature ability built message sent can digitally signed.

Private Key – it also called secret key and encryption/decryption key to exchange secret messages and shared by the communicators so that each can encrypt and decrypt messages. Public key uses with private key together.

Password management

Password is the most important aspect to login into the system and the network. Organisation should allow only authorised users to access to the network and every user access individual login and passwords to enter the network, its result increase the security aspects. There are following necessary things to secure password in the network system as below:

Long Password – every user need to long password because short password can very quickly compromised and analyse the permutation based on the password length;

Change password anytime – employee should change password regularly, nobody assume easily and helpful for security breaches of the network;

Avoid utilize similar password – don't use the same password for different accounts because it would naive for administrator to think and employee should use different password for safety and security for network system;

Necessity to changing password regularly – employees also gradually more access their work accounts from remote location, user need to educate/awareness on the required of altering the password frequently.

Symmetric encryption systems and their vulnerability

Symmetric encryption system use same secret key is used to encrypt and decrypt information and transform between two keys. Secret key concern to information to transform the content because both can use encrypts and decrypts traffic. Symmetric encryption system has two types are:

Stream ciphers – it is bits of information one at a time and operates on 1 bit of data at a time. It is faster and smaller to implement and have an important security gap. Certain types of attacks may cause the information to be revealed;

Web Security tools and technologies

Web is very vital role in our daily life such as online searching, surfing, customers, vendors, co-staffs, email, etc but need to be web security and identity theft protection. Web security has many problems like spam, viruses, security breaches & theft etc. This problem with web security is the part of network of attack computers and servers send out spam messages without knowing it and email / passwords produce and re-sale to competitor.

In my research, security expert says that "shows you how to "do something in five minutes" and conveniently neglect to mention the security implications of their advice. If it sounds too easy to be true, it probably is. A perfect example of this is PHP solutions that use a file for data storage and ask you to make it writable to the world. This is easy to implement, but it means that any spammer can write to this file."

Web security has many risk and attacks such as IP address identify the computer, Fixed IP address is larger security risk, share network, staff unaware security leak in the network setting, SQL injection attacks, exploits browsers and websites, remote file inclusion (RFI), phishing etc.

E-Banking

Mayank Sharma
Assistant Professor Department of BCA

I. Introduction e-Banking, also known as online baking or virtual banking or internet banking is a system which enables banking transactions like transfer of funds, payment of loans and EMIs, deposit and withdrawal of cash virtually with the help of internet. It is one among the extended features which banking institutions provide, in addition to traditional banking. e- Banking is the most used feature by the citizens of India after the effect of demonetization. This feature is assumed to be one of the most flexible, adaptable and secure ways of transacting among the users/customers to bank. However, it depends on the trust that an individual has on the bank he/she is operating with. There are different types or sectors under e-banking services. The major services offered are Internet banking, SMS banking, ATMs, mobile banking, e-cheques, and debit/credit cards. 1. ADVANTAGES OF E-BANKING Before we jump into the actual discussion, let us quickly look into the advantages of e-banking services: 1.1. Convenience: e-Banking is a service which is available to anyone and everyone who is a bank account holder. It allows the customers to easily access the bank's website using their username and passwords; and carry on with the transactions even if the bank is closed. 1.2. Flexibility: e-Banking, with its flexible services like 24*7 ATMs and mobile banking is flexible to the customers. It enables the customers withdraw cash using their debit cards, and payment of bills. 1.3. Time Saver: This is the greatest advantage to our generation as we are not able to spend a lot of time for anything. Time management is one of the greatest challenges in our busy lives. e- Banking enables us to carry on banking transactions within minutes, not disturbing our routine. 2. CHALLENGES OR DISADVANTAGES OF E-BANKING India is the IT and tech services outsourcing hotspot of the world, it's surprising that Internet banking has not really taken off. Despite the advent of a very tech-savvy and vast consumer class in recent years, a mix of industry issues and unique challenges continue to thwart the expansion of net banking in India. Technology Challenges and Opportunities of e-Banking in India Name of Conference: International Conference on "Paradigm Shift in Taxation, Accounting, 57 |Page Finance and Insurance" challenges, IT practices, certain cultural issues, industry lethargy, and workplace constraints have affected widespread acceptance of Internet banking. As the major objective of our study is to focus on the challenges that e-banking is facing in India at present, we shall now look into the major disadvantages of e-banking in India. 2.1. Low Broadband Internet Penetration India has one of the lowest broadband connectivity penetration rates in Asia as compared to Japan, Taiwan, Korea and Singapore. While the bigger cities such as Mumbai, Delhi, Chennai, and Bangalore have relatively better broadband penetration rates, PC users in smaller cities and towns still use dial-up options to connect to the Internet. Slow connectivity speeds often dampen the online banking experience for many customers eager to use such services. 2.2. Banks' Ambivalent Commitment Levels Internet banking did take off in India at the turn of the millennium but soon faltered due to lack of takers. In the middle of this decade, multinational and domestic private banks started offering net banking services as a competitive differentiator. Only recently, state-owned and public sector banks have started doing likewise. However, banks' ambivalent commitment levels and their reluctance to allocate huge budgets for net banking branding initiatives, as well as a lack of industry advocacy efforts, have resulted in poor acceptance levels of Internet banking by customers. 2.3. Customers' Preference for Traditional Branches There are thousands of highly active traditional bank branches in India's crowded cities and major towns. Office workers take longer lunch breaks to finish banking activities and transactions at these branches rather than conduct them online. Most customers prefer the personal touch and customized service offered by staff in brickand-mortar bank branches. Many Indians are also averse to calling call centres and banks' customer contact lines to address issues related to online bank accounts. 2.4. Fear of Online Threats/Scams Ubiquitous and prevalent online threats about hackers, identity theft, stolen passwords,

viruses, worms and spy ware tend to make customers wary just like in any other country. Conservative Indian bank customers used to years of saving in an erstwhile mixed-socialist economy are always fearful of losing hard-earned savings in online scams. These customers are also not sure about the efficacy of banks' websites and their commitment to allocate funds for reliable encryption mechanisms and robust back-end technologies and systems. 2.5. Impersonal Transacting on the internet can be very impersonal. In other words, you only do business with the use of a computer. No individual to receive and check your money or correct some wrong information that you might have written on a certain form. And so for people comfortable dealing with real people who provide personalized services and using paper and money, internet banking is not ideal. 2.6. Difficult for first timers For a first time user, navigating through a website of an internet bank may be hard and may take some time. Opening an account could also take time as some sites ask for numerous personal details including a photo identification which can inconvenience the potential customer. Because of this complexity, they may be discouraged to use this internet banking service. Tutorials and live customer support may be provided, though, to help the client in his or her needed tasks so it's best to take the time to know the virtual environment. 2.7. Security fraud Many people shy away from internet banking because of the security threat. [1]They can't help but worry about this aspect what with news on fraudulent bank transactions that pop up every now and then. However, this should not be a problem as banks that provide internet banking services prioritize security above anything else. Since they value their customers, they always use the most advanced security technology in protecting their websites. 2.8. Regulation and Legalities Internet banking makes it possible for banks and their customers to do business from anywhere in the world. This greatly increases the bank's potential client base. Nevertheless, according to Andrea Schechter of All Business, the global approach to banking that internet banking permit makes it extremely difficult for regulatory authorities to enforce finance laws. Additionally, regulations differ from nation to nation and banks are not always proficient in the financial laws for every nation in which they have business. Schechter asserts that this lack of proficiency opens banks and their clients up to law violations and lawsuits. 2.9. Digital and Financial Divide Rupa Rege Nitsure, claims that a digital divide exists between banks -- i.e., not every bank has access to the hardware and software necessary to make internet banking possible. A study led by Joaquin Yang of Georgia College and State University showed that this problem may be related to size and financial support a bank has. Smaller banks tend not to use internet banking because it is not cost-effective for them. To make Internet Challenges and Opportunities of e-Banking in India Name of Conference: International Conference on “Paradigm Shift in Taxation, Accounting, 58 |Page Finance and Insurance” banking more commercially fair to banks and customers, all banks would need a sufficient funding source so that banks could eliminate this digital divide. 2.10. Reputation Schechter asserts that problems such as governance and security have the potential to make a bank look bad to clients. Additionally, the more a bank relies on Internet banking, the more the bank may gain an impersonal feel. Both of these problems may discourage clients from choosing a bank that relies on internet banking, regardless of how convenient internet banking may be. 3. OPPORTUNITIES RELATED TO E BANKING Despite of various challenges that are prevailing in context with e-banking in India, the following opportunities are motivating the marketers for implementing e-banking: 3.1. Increasing Internet Users & Computer Literacy To use internet banking it is very important or initial requirement that people should have knowledge about internet technology so that they can easily adopt the internet banking services. The fast increasing internet users in India can be a very big opportunity and banking industry should en-cash this opportunity to attract more internet users to adopt internet banking services. 3.2. Initiatives Taken By Government Agencies For Financial Literacy Financial literacy and education play a crucial role in financial inclusion, and inclusive growth.

Nothing Is Permanent

Tanisha Garg
Class - B.Com I

Life has often been described as a batter. But it is not clear who or what we are supposed to be fighting against - the world, Society, time or death. To view life as an on going battle is certainly one way to look at it. But it is not a helpful viewpoint if our goal is to achieve total wellness. It is also an attitude that has been strongly challenged by the greatest religious traditions.

Nothing is permanent except the word permanent. Change is continuous but we live in the illusion of permanence in this world. Really, nobody wants a temporary situation. We look for permanence in our residence, family, wealth, relationships, physical strength, job, work, power and everything substantial in life. It is our inherent nature to seek permanence, which gives is security, confidence, strength, hope and motivation for life.

Change is the law of nature. Evolution and growth are also covered by this law. It is a typical human characteristic that we want to avoid change and wish to maintain the status quo that we intend to live in our comfort zones. If we accept the change spontaneously and diligently, then there will be no hassles. If we oppose or resist the change, then we will suffer.

Relationships, we assume are naturally permanent. In the real world, we see that the structure of the family changes several times in one's life-time. As a child, you live with parents, grandparents, brothers, sisters and some time with cousins also. When you get married, the framework of your family changes, and when you grow older, the structure of your family changes with you.

We buy a house with immense enthusiasm ; we want to live in it forever, but when circumstances change, we have to move to a new place.

Our physical body changes every moment. If we see our old photos, we realize how different we were from the way we look Now: Shakespeare has defined the seven stages of human life. So, at every stage, our body is not the same. Seven ages of man is a monologue, spoken by the melancholy jegces in Shakespear's play as you like it : "All the world's a stage,

And all the men and women merely players,
They have their exits and entrances,
And one man in his time plays many parts,
His acts being seven ages."

Why do we seek permanence? The permanent is eternal ; we are the part of the eternal Almighty God. The Bhagwad Gita says, "Mamaivamso Jivaloke - the soul is the fragment of my own being." So, it is our innate and essential quality to seek permanence.

We wish to live a long life in the ihaloke, the world of physical existence, and we want to continue living after death in the parloka, different worlds, too.

Even though we wish for immorality, our lives are subject to change and are Perishable. Krishna says in the Gita. "Those who achieve Brahamloka, the seventh loka, above the planet earth, are subject to rebirth, but for those who attain me, there is no rebirth." So our journey in these other worlds is also transitory.

Despite change and temporary worlds, there is a consolation that the soul in this body is imperishable. The Gita says. This soul is indeed incapable of being cut, of being burnt ; it is impervious to water and cannot be dried. It is eternal, all pervading, constant and everlasting.

if we believe that we are the souls and not the perishable body, we will be free from all fears and illusions.

Reaction of Life

Arpika Kaushik
Class - B.Sc III

In the reaction of life,
People will out like different
Atoms and they'll try to make
Molecules against you by
Creating strong bonds.
But it's up to you,
you can either show them your
Acidic behavior and create
Dangerous fumes in some lives.
or you can stick to your basic
Behavior and protect everyone
from the flames of hatred.

A beggar and young boy

Neha
Class - B.Ed II

There was a young boy, but was trying hard for the job. That's when he gets a call. letter form a company. That tomorrow is your interview and you have to come. Now that boy got a little upset. Because he was from a very poor family and the place where he had to go for the interview was fax away.

There was no money to go but he had to go job was necessary for him.

Like how he arranged for 50 rupees and lift the house. And he reaches the crossroads. Very disappointed because he did not have the ticket money. Should have been as many. Then he sees a temple nearby and he goes in that direction. That is when his eyes are on a beggar. But he ignores that. But the beggar sees him upset and asks him.

You probably have a problem. What can I help you.

But he tells her that nothing this beggar is eating by demanding himself, what will this help me?

But the beggar was elderly. So the boy was forced to ask her 2 or 3 times. Done to tell what is the problem to him? So the beggar told him you take this 500 rupees. and go give your interview and way. I only collect money for medicine and I give those who are left in the donation box

That's why my money is not of much use, maybe some of you help may leave me any joy will now he left from there and when selected in the interview.

He came back to meet the beggar or

return his money so there was a crowd of people when he went near and saw that he was a beggar.

People said it had no medicine money. There fore, it died because of not taking today's medicine.

What do you think will be the condition of that young heart?

That is what we are doing right now

"To do any work or to achieve any goal will face thousands of difficulties on the way if we do not move forward thinking this?

And maybe someone is on the way who is siting to help us"

"God can be in any form"

Teacher's Story

Imroz
Class - B.Ed II

There is a story many year's age of an elementary teacher. Her name was Mrs. Thompson. and as she stood in front of her 5th grade class on the very first day of school, she told children a lie. Like most teacher's. She looked at her students and said that she loved them all the same. But that was Impossible because there in the front row, slumped in his seat, was a little boy Name Teddy.

Mrs. Thompson had watched Teddy the year before and notice that he didn't play well with the other children, that her clothes, were messy and that he constantly needed a bath and teddy could be unpleasant. it got a point where Mrs. Thompson would Actually take delight in marking his paper's with a brood red pen, making bold X's and then putting a big "F" at the Top of hip Papers. At the school where Mrs. Thompson Thought. She was required to review each child's past record and she put Teddy's off until last. at the last she was in for a suprise to review Teddy's file.

The first grade Teacher wrote:- Teddy is a bright child and does his word neatly and in a good Manner.

The Second grade Teacher wrote:- Teddy is an excellent student. But he is in Trouble because his Mother is ill.

The Third grade Teacher wrote - His mother's death has been hard on him-and he doesn't show much interest in his in his School life.

The fourth grade Teacher wrote - Teddy is with drown and he doesn't show much interest in his school life and had no friends.

By Now Mrs Thompson - realized the problem and she was ashamed on her self. She felt even worse when her students brought her Christmas presents, wrapped in beautiful ribbons and bright papers. Exapt Teddy his present was clumsily wrapped in the heavy, brown paper. That he got from a grocery bag.

Mrs. Thompson Paid Particular attention to Teddy. and his mind seems to come alive. The more she encouraged him the faster he responded by he end of the year Teddy became the smartest children in the class. and Teddy loves and respects his Teacher's, and after 12 year letter Mrs. Thompson get a letter under her door from teddy telling her that she was still the best teacher he ever had in his hole life.

To read this letter Mrs, Thompson had Tears in her eyes and she whispered in her self. That Teddy you have it all wrong. You were the one who taught me. That I could make difference. I didn't know how to teach until I met you.

Shades of Lockdown

Manvi
Class - B.Com III

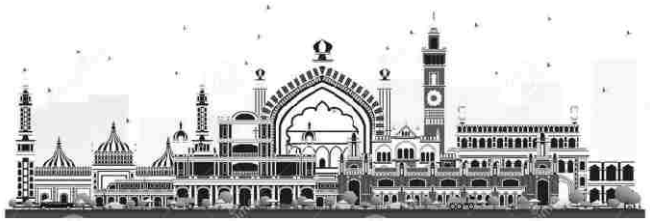

In a sudden invasion an invisible
pathogen infects air sacs,
and paralyzes all forms of life on the earth.
Latching on its spiky surface proteins,
behaving licentiously, It multiplies itself,
spreads in the pneumonic cavities of human
desires and silences gossips of
growing wheat in the languorous fields.

Corpses rise, funeral processions march
Limb by Limb,
Masculine traders of pine and oak offer
free logs for funeral pyres.

Facing acute shortage of hospital beds and
ventilators
Priests in white aprons
sacrifice bearded
handsome alligators in
balcony prayers.

In a dishonorable capitulation to the
infectious droplets of death,

Prisoners are released on Parole
And armies retreat in sunburnt camps.
Exotic birds and blood.
red hibiscuses
watch from lunatic social distance,
The growing awareness of virtue and vice.
I hear sounds of the angry
silence of office goers and travelers
Locked down in their fossils homes,
Barbecuing, sailing to their fantasy deactivations.

Promise Yourself

Mayuri Bhardwaj
Class - B.Com III

Promise yourself to be so strong that nothing can disturb your peace of Mind.

To take health, happiness, and prosperity to every person you meet.

To make all you friends fell like there is something in them.

To look at the Sunny Side of everything and make your optimism come true.

To thinks only of the best, to work only for the best, and expect only the best.

To be just as enthusiastic about the success of others as you are about your own.

To forget the mistake of the past and press on the greater achievements of the future.

To wear a Cheerful Countenance at all times and give every living person you meet a Smile.

To give so much time to the improvement of yourself that you have no time to criticize others.

To be too large for worry, too noble for anger, and too strong for fear, and to happy to permit the presence of trouble.

On His Blindness

Megha Sarin
Class - B.Com III

When I Consider how my light is spent Ere half my days in this dark world and wide, And that one Talent which is death to hide.

Lodged with me useless, though my soul more bent.

To serve there with my maker, and present my true Amount, lest he returning Chide, Doth God exact day-labour, light denied?

I fondly ask. But patience, to prevent that murmur, Son replies. "God doth not need either man's work or his own gifts. Who best bear his mild yoke. They serve him best. His state is kingly : thousand at his bidding speed and post land and ocean without rest they also serve who only stand and wait.

"Balance Sheet of Life"

Krantika
Class - B.Com III

Our birth is our opening balance,
Our death is our closing balance.
Our prejudiced views are our liabilities.
Our creative ideas are our assets,
Heart is our current asset,
Brain is our fixed deposit.
Thinking is our current account.
Achievements are our capital
Character and morals are our stock in trade.
Friends are our general Reserve.
Values and behavior are good will.
Patience is our interest cairned?

MURDER OF ENGLISH

Kushagra
Class - B.Com III

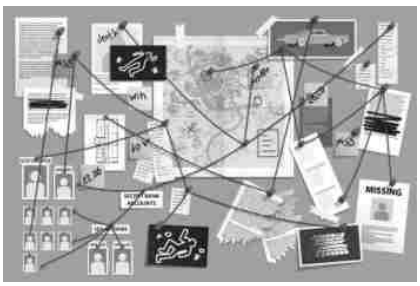

1. Pick up the paper and fall in the dustbin.
2. Both of you stand together separately.
3. Why are you looking at the monkeys outside when I am inside?
4. Will you hang the calendar or else I will hang my self.
5. I have two daughters, both are girls.
6. give me a blue pen of any color.
7. The principal is revolving in the corridor.
8. All of you stand in a straight circle.
9. Open the window - let the Airforce come in.

'Best Thought'

Swaleha Ansari
Class - B.Ed. II

1. Your best teacher is your last mistake.
2. Never give up, Everyone has bad days. Pick yourself up and keep going.
3. One day the reality will be better than your dreams.
4. Success will give you fans, failure will give you true fans.
5. Very short but very true.....

   "Your nature is your future"
6. Work Hard in Silence :

   Let success make the noise
7. Stay positive, work hard and make it Happen.
8. Never give up with out a fight.
9. Follow your Dreams and Pursue the life that you have always wanted to live.
10. A positive attitude will lead to positive out comes.

The Value of Health in life

Kanika Sharma
Class - B.Ed I

It is a true that health is wealth. If we are often sick, we cannot be successful as we cannot do anything in pain. Health is the foundation of happiness, success and prosperity. We should try to preserve it.

Following things are necessary to preserve health: Our good habits make us healthy. We should chew food slowly and properly. Eating lots of fruits and vegetables is a good habit. We should avoid junk food like soft drinks, pizzas, burgers, noodles, etc. Drinking lots of water is helpful. We should sleep early and rise early. It is rightly said:

"Early to bed and early to rise,
Makes a man, healthy, wealthy and wise."

Good ideas are health - giving. James Allen said, "Keep away from evil ideas. Do not envy others. Never be hope less. Do good and be good." So good thoughts are the secret of health, success and power.

The importance of games, sports and physical exercises cannot be denied. As oil is necessary for smooth working of a machine, similar is the case with games, sports and physical exercises.

A carefree life makes us healthy. In the opinion of W.H. Davis, a famous English poet, life is meaningless if it is full of care : He said :

"What is this life ; if full of care
We have no time to stand and store."

If you follow the above - mentioned golden rules of health, you will never be unhealthy without contentment and frugal life none can be healthy.

Thoughts

Km. Sapna
Class - B.A. II

1. Don't close the book when bad things happen in your life, Just turn the page and begin a new chapter.
2. Respect blind people, Because they do not judge people by looks. They judge people by hearts.
3. Your degree is just a piece of paper, your real education is seen in your behavior.
4. I am not handsome, but I give my hand to someone. Who needs help. Beauty is in the heart not in face.
5. The success is the best revenge.
6. If you fail, never give up because, F.A.I.L. means "First attempt in learning."
7. A bird sitting on a tree is never afraid of the branch breaking. Because her trust is not on the branch but on its own wings.
   Always believe in yourself.
8. Never explain yourself to anyone, Because the person who likes you does not need it and the person who dislikes you does not believe it.
9. Don't focus on going 0 to 100. Focus on 0 to 10, then 10 to 20 then 20 to 30 and so on until you get to 100, Build sustainable habits through gradual progression.

PROUD TO BE AN INDIAN

Payal Sharma, B.Ed. II

- India never invaded any country in 1000 years of history.
- India invented the number system. Zero was invented by Aryabhatta.
- According to Forbes magazine, Sanskrit is the most suitable language for computer software.
- Ayurveda is the earliest school of medicine known to humans.
- The Art of navigation was born in the river Sindh 5000 years ago. The very world" Navigation" is derived from Sanskrit word NAVATIH.
- The value of pie was first calculated by Buddhayana, and he postulated the concept of what is known as phthagorus theorem.
- Chess was invented by India.
- The earliest resource dam for irrigation was built in Saurashtra.
- Algebra, trigonometry and calculus are discovered in India.
- Quadratic equation were discovered by Sridharacharya in the 11th century. The largest numbers the Greek and the Romans used were 106 whereas Indians used numbers as being as 1053.
- Shushruta is the father of surgery, 2600 years ago he and health scientists of his time conducted. surgeries like cataract, fracture and urinary stones. Usage of anaesthesia was well known in ancient India.
- When many cultures in the world were really nomadic forest dwellers over 5000 years ago, Indians established Harappan culture in Sindhu Valley (Indus valley) India in 100 BC.

INDIA OF MY DREAMS

Nidhi Sharma, B.Ed. II

I have sweet and beautiful dreams of my country. I am a resident of India. She is my beloved motherland. I am proud of being an Indian.

I wish that my country may rise to be great. She should help her neighbours and may give them the message of peace. My country should become militarily strong and be fully prepared in this nuclear age of defence. I wish that no foreign country may dare attack again, like the plundering raids of the olden times. She should not be locked in security in the name of peace.

India's great culture and civilization had once spread in the far corners of the world. She should send her cultural envoys once again to spread her culture. India should lead the world in the field of spiritualism.

There would be no illiterate person in India of my dream. She should become a highly industrialized nation. She should make progress in science. I wish that in India, there should be no poor person. We have to wipe away the tears from every eye. As Gandhi Ji said,

Freedom becomes meaningful only if we help the people to rise in prosperity.

OUR BODY ALSO FUNCTIONS LIKE MINISTERS

Sheetal Pathak, B.Ed. I

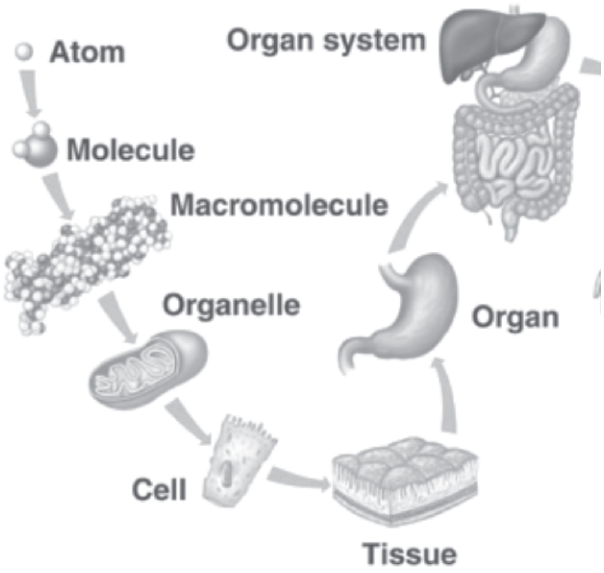

Brain	-	Prime Minister
Ear	-	Post and Telegraph Minister
Stomach	-	Food Minister
Heart	-	Finance Minister
Hands	-	Labour Minister
Legs	-	Transport Minister
Teeth	-	Industry Minister
Eyes	-	Law Minister
Skin	-	Defence Minister
Tongue	-	Communication Minister
Lungs	-	Home Minister
Hair	-	Internal Affairs Minister
Fingers	-	Civil Supply and Public Distribution Minister

The Success Mantra

Monika Singh, B.Ed. I

Read, but write more
Talk, but think more
Play, but study more
I promise, you will succeed sure,
Eat, but chew more,
Weep, but laugh more,
Sleep, but walk more
I promise, you will succeed sure.
Punish, but pardon more,
Spend, but save more,
Consume, but produce more,
I promise, you will succeed sure,
Preach, but follow more,
Order, but act more,
Hate, but love more,
I promise, you will succeed sure.

Respect

Neelam, B.Ed. II

We all expect that we should be given respect and most of us think that it is our right to get respect. But what we forget to understand and accept is that, it can not be demanded or commanded but it is received. Like every other right there is always a responsibility attached to it. One has to understand this responsibility in order to become worthy of respect. True respect doesn't come from what we do, as much as how well we do it. That is we are shown respect according to the qualities revealed by us. Respect is not a matter of supply and demand. On the contrary, if people think that you are even slightly in need of respect, they will usually turn away from you completely. Beware of any desire on your part for respect. Indeed such thoughts are a sure sign that you are not getting it and the realization is hurting your deep inside. The very act of trying to get respect from others proves that you are not worthy of it and don't deserve it either. Fill yourself with virtues, a feeling of well being and cooperation and love for all around you.

Seasons of Life

Kajal, B.Ed. II

All seasons of life are like that of nature,
In the journey of every creature.
First comes the spring of childhood,
When the surroundings are happy and good.
Then comes the life of summer,
Which brings responsibilities in numbers.
Then arrives autumn with a blow,
and the person starts losing his glow.
Finally the winter comes to freeze,
And life gets over with a breeze.
Both life and seasons are part of nature,
With Almighty's palace as their legislatures.

Life

Sneh Sharma, B.Ed. II

Life is a very precious thing
Just like a diamond in the ring
life has many stages.
Life had day to day changes
It is full of hardships
But, the best thing in life is friendship
Friends are whom you can trust
With them everything should be
Shared must
People say love is life
But life is very sharp as knife.
Just like a diamond in the ring.....

STOP THINKING YOU ARE USELESS

Anamika Singh, B.Ed. II

The art of wise living involves the art of wisely discovering one's talent and then optimizing it. Nature has given everyone some talent or the other. The mind is not serious enough to discover what the talent is. One is lost in making comparisons with the other, thereby adversely affecting the quality life. The moment you compare yourself with the other, the focus is on the other and hence, energy is not available to look within yourself.

Why silently whip yourself by branding yourself as useless? If you see the others, you can not objectively see the other, but you see with the backdrop of your inner pain. This in turn distorts the perception of the other and hence, deepens the conflict. Please check this disorder within this disorder, even if you are 'better' that the other person, you inner bitterness continues and hence, you will not be able to enjoy your success.

No wonder comparison has become prominent among principal stress creating agents and hence, causing psychological diseases. We are constantly taught to compare from childhood. Parents compare you with the other children, boss compares you with the other employees. Therefore, this inner pain causes the inner chaos, But remember, with strong will power, you have to win. You are precious because you are a unique creation of God!

PLEASE PAY ATTENTION!

Anshu Singh, B.Ed. I

My dear friend, please pay attention
I have few things here to mention.

When you enter the school gate,
Be sure that you are never late.

Then say your prayer with a pure heart,
This is how every day must start.

Listen to what your teacher says.
This builds your knowledge day by day.

You go to school for better aim,
To be great and have high name.

If a teacher scolds never mind,
It is a teaching of its own kind.

This precious time you must utilize,
If not, you will be sorry otherwise,

Be obedient and be smart,
Then you can pull your life cart.

These few things I wanted to mention,
Thank you for your time and attention.

महाविद्यालय प्रबन्ध समिति :-

1.	श्री अजय गर्ग	अध्यक्ष
2.	डॉ0 सुधीर कुमार	उपाध्यक्ष
3.	डॉ0 के0 पी0 सिंह	सचिव
4.	श्री गिरीश चन्द्रा	संयुक्त सचिव
5.	श्री के0 पी0 सिंह	कोषाध्यक्ष
6.	श्री सुनील गुप्ता	आन्तरिक लेखा परीक्षक
7.	श्री एस0पी0एस0 तौमर	सदस्य
8.	कमाण्डर एस0 जे0 सिंह	सदस्य
9.	सुश्री मनिका गौड़	सदस्य
10.	डॉ0 यू0 के0 झा	प्राचार्य (पदेन सदस्य)
11.	डॉ0 (श्रीमती) चन्द्रावती	शिक्षक प्रतिनिधि
12.	श्री सुनील कुमार	तृतीय श्रेणी कर्मचारी प्रतिनिधि

महाविद्यालय परिवार

प्राध्यापक (वित्त पोषित)

1.	डॉ. यू. के. झा	प्राचार्य एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
2.	डॉ. प्रदीप कुमार त्यागी	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सांख्यिकी विभाग
3.	डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, गणित विभाग
4.	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग
5.	श्री यजवेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
6.	डॉ. सीमान्त कुमार दुबे	एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग
7.	श्री लक्ष्मण सिंह	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग

प्राध्यापक (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री पंकज कुमार गुप्ता	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बी.सी.ए. विभाग
2.	श्री मयंक शर्मा	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
3.	श्री सचिन अग्रवाल	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
4.	डॉ. कृष्ण चन्द्र गौड़	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग
5.	डॉ. सुनीता गौड़	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
6.	डॉ. भुवनेश कुमार	असि. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग
7.	डॉ. सुधा उपाध्याय	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग

8.	डॉ. वीरेन्द्र कुमार	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
9.	डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
10.	डॉ. तरूण बाबू	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
11.	डॉ. घनेन्द्र बंसल	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
12.	डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह	असि. प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग
13.	डॉ. राजीव गोयल	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग
14.	श्री सत्य प्रकाश	असि. प्रोफेसर, बी.सी.ए. विभाग
15.	श्री देव स्वरूप गौतम	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
16.	श्री गुरूदत्त शर्मा	असि. प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
17.	डॉ. विशाल शर्मा	असि. प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

प्राध्यापक (अंशकालिक)

1.	श्री गौरव जैन	अंशकालिक प्रवक्ता, संस्कृत विभाग
2.	श्री सत्यपाल सिंह	अंशकालिक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
3.	श्री चन्द्र प्रकाश	अंशकालिक प्रवक्ता, अंग्रेजी विभाग
4.	श्रीमती ममता शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, अर्थशास्त्र विभाग
5.	श्री ललित कुमार शर्मा	अंशकालिक प्रवक्ता, भौतिकी विभाग
6.	श्री योगेन्द्र कुमार	अंशकालिक प्रवक्ता, गणित विभाग
7.	डॉ. राधा उपाध्याय	अंशकालिक प्रवक्ता, राजनीति विभाग

शिक्षेणत्तर कर्मचारीगण (वित्त पोषित)

1.	श्री सुनील कुमार गर्ग	कार्यालय अधीक्षक
2.	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	कनिष्ठ सहायक
3.	श्री के. के. श्रीवास्तव	पुस्तकालय सहायक
4.	श्री पंकज शर्मा	प्रयोगशाला सहायक, भौतिकी
5.	श्री सुनील कुमार	प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग
6.	श्री लक्ष्मण सिंह	कनिष्ठ सहायक
7.	श्री नारायण देव मिश्रा	कार्यालय दफ्तरी
8.	श्री डम्बर सिंह	अर्दली
9.	श्री गजेन्द्र सिंह	गैसमैन, रसायन विज्ञान विभाग
10.	श्री कपूर चन्द्र	चौकीदार
11.	श्रीमती पार्वती	पुस्तकालय परिचारिका

12.	श्री सुनील कुमार निर्मल	प्रयोगशाला परिचर, भौतिकी विभाग
13.	श्री महेश चन्द्र	सेवक, कार्यालय
14.	श्री अमरनाथ राय	प्रयोगशाला परिचर, रसायन विज्ञान विभाग
15.	श्री विजय पाल सिंह	माली
16.	श्री राम अवतार	प्रयोगशाला परिचर, सांख्यिकी विभाग

शिक्षणेत्तर कर्मचारीगण (स्ववित्त पोषित)

1.	श्री सुरेश रावत	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष
2.	श्री दीपक कुमार शर्मा	लेखाकार
3.	श्री आशीष कुमार	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री जितेन्द्र कुमार	कनिष्ठ सहायक
5.	श्री पारस कुमार	प्रयोगशाला सहायक
6.	श्री प्रमोद कुमार	प्रशासनिक सहायक
7.	श्री चन्द्रपाल सिंह	अंशकालिक कम्प्यूटर ऑपरेटर
8.	श्री विजय कुमार	दैनिक भोगी सेवक
9.	श्री योगेश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
10.	श्री राम बाबू	दैनिक भोगी सेवक
11.	श्री त्रिलोक चन्द	दैनिक भोगी सेवक
12.	श्री विक्रम सिंह	दैनिक भोगी सेवक
13.	श्री नेत्रपाल सिंह	दैनिक भोगी सेवक
14.	श्री जितेन्द्र कुमार	दैनिक भोगी सेवक
15.	श्री सुबोध कुमार	दैनिक भोगी सेवक
16.	श्री नितिन कुमार	दैनिक भोगी सेवक
17.	श्री साहब सिंह	दैनिक भोगी सेवक
18.	श्री सुरेन्द्र पाल	दैनिक भोगी सेवक
19.	श्री मान सिंह	दैनिक भोगी सेवक
20.	श्री जगदीश कुमार	दैनिक भोगी सेवक
21.	श्री सोनू कुमार	दैनिक भोगी सेवक
22.	श्री राजीव	दैनिक भोगी सेवक
23.	श्री राजू	दैनिक भोगी सेवक
24.	श्री पंकज	दैनिक भोगी सेवक

विभिन्न समीतिया

प्राचार्य परिषद्

1. डॉ. यू. के. झा (प्राचार्य)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. आर. के. अग्रवाल
4. डॉ. चन्द्रावती
5. श्री यजवेन्द्र कुमार
6. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
7. श्री लक्ष्मण सिंह
8. श्री पंकज कुमार गुप्ता
9. डॉ. के. सी. गौड़
10. डॉ. भुवनेश कुमार

सूचना एवं प्रौद्योगिकी समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री सचिन अग्रवाल
3. श्री सुनील कुमार गर्ग
4. श्री दीपक कुमार शर्मा

क्रीड़ा समिति

1. डॉ सीमान्त कुमार दुबे (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री मयंक शर्मा
5. श्री गुरूदत्त शर्मा
6. डॉ. विशाल शर्मा

अनुशासन समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (मुख्यानुशासक)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. श्री यजवेन्द्र कुमार
5. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
6. श्री लक्ष्मण सिंह
7. डॉ. विशाल शर्मा
8. श्री के. के. श्रीवास्तव

एंटी रैगिंग समिति

1. श्री यजवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
3. डॉ. वीरेन्द्र कुमार
4. डॉ. तरूण बाबू
5. डॉ. राजीव गोयल

आन्तरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (समन्वयक)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री पंकज कुमार गुप्ता
6. डॉ. भुवनेश कुमार
7. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह
8. डॉ. आलोक गोविल (सामाजिक कार्यकर्त्ता)
9. श्री सुनील कुमार गर्ग

छात्र कल्याण समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. डॉ. के. सी. गौड़
5. श्री सत्य प्रकाश

शिकायत-निवारण प्रकोष्ठ

1. श्री यजवेन्द्र कुमार (प्रभारी)
2. श्री पंकज कुमार गुप्ता
3. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

भवन निर्माण समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
4. श्री सुनील कुमार गर्ग

महाविद्यालय प्रकाशन समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
2. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. डॉ. भुवनेश कुमार
5. डॉ. शैलेन्द्र कुमार सिंह

चिकित्सा समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. आर. के. अग्रवाल
3. डॉ. घनेन्द्र बंसल
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
5. श्री देवस्वरूप गौतम

यू.जी.सी. अनुदान योजना समिति

1. डॉ. पी. के. त्यागी
2. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3. श्री यजवेन्द्र कुमार
4. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री लक्ष्मण सिंह
6. श्री के. के. श्रीवास्तव

विकास कोष समिति

1. डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल (प्रभारी)
2. डॉ. पी. के. त्यागी
3. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
4. डॉ सीमान्त कुमार दुबे
5. श्री सुनील कुमार गर्ग

महिला संरक्षण समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह

पुस्तकालय समिति

1. डॉ. आर. के. अग्रवाल (प्रभारी)
2. श्री यजवेन्द्र कुमार
3. श्री लक्ष्मण सिंह
4. श्री के. के. श्रीवास्तव

सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति

1. डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती (प्रभारी)
2. डॉ. (श्रीमती) सुनीता गौड़
3. डॉ. (श्रीमती) सुधा उपाध्याय
4. श्री लक्ष्मण सिंह
5. डॉ. (श्रीमती) जागृति सिंह
6. श्री गुरुदत्त शर्मा

अन्य विभागीय प्रभारी

1.	वि. वि. परीक्षा, गृह परीक्षा, विद्युत व्यवस्था एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र	डॉ. ऋषि कुमार अग्रवाल
2.	नोडल अधिकारी, दशमोत्तर छात्रवृत्ति एवं शुल्क प्रतिपूर्ति	डॉ. (श्रीमती) चन्द्रावती
3.	राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.)	श्री यजवेन्द्र कुमार
4.	राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)	डॉ सीमान्त कुमार दुबे
5.	व्यवसाय परामर्श इकाई	श्री लक्ष्मण सिंह